

AASHTDYAYESUTRAPAATH



(12)



श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ग्रन्थमाला सं० २३



पाणिनिमुनिप्रणीतः

अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

अमृतसर-नगर्यां

श्री रामलालकपूरट्रस्ट-मन्त्रिणा श्री हंसराजकपूरेण
पञ्चनदयन्त्रालये मुद्रापयित्वा पदवाक्यप्रमाणज्ञैर्विद्वद्वर्य-
श्रीमद्ब्रह्मदत्तजिज्ञासुभिः संशोध्य प्राकाश्यं नीतः ।

संवत् २०१४, शाके १८७६, सन् १९५७ ई०, दयानन्दाब्द १३२

मूल्यं आणकाः ॥=) अथवा ६२. नवीनपणकाः

द्वितीय संस्करण २०००]

प्रकाशक—रामलाल कपूर ट्रस्ट गुरुवाज़ार अमृतसर (पञ्जाब)

अष्टाध्यायी-महाभाष्यादि आर्षग्रन्थों के पठन-पाठन

तथा

विना रटे संस्कृत सीखने की सरलतम पद्धति के विषय में

विशेष जानकारी के लिये निम्नांकित पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या लिफाफा आना चाहिये। पूछने वाले अपनी योग्यता (विशेष कर संस्कृत योग्यता) का पूरा परिचय दें। पत्र संचिप्त और स्पष्ट लिखा होना चाहिये—

पता—

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

अध्यक्ष पाणिनि महाविद्यालय

पो० अजमतगढ़ पैलेस, मोतीभील

वाराणसी नं० ६ (बनारस ६)

(उत्तरप्रदेश)

(७)
* ओ३म् *

SR. RAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. 4740

प्राक्-कथन

अष्टाध्यायी क्यों पढ़ें

— श्री आर्य-सनातन-वैदिक धर्मियों का सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य देववाणी संस्कृत में है। हम भारतीयों के लिए वेद सर्वोपरि हैं। शाखा-उपवेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-वेदाङ्ग-साहित्य-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-रामायण-महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये सभी ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। भारतीय संस्कृति-सभ्यता-साहित्य और भारतीय परम्परा का सब कुछ इसी संस्कृत (देव भाषा) में है। कहाँ तक कहें, हम भारतीयों का गौरव सर्वस्व सब कुछ संस्कृत भाषा में ही है।

। 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्' वेदा की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिये। काशी की आचार्य-शास्त्री-मध्यमा-प्रथमा परीक्षाओं में लगभग १३००० तेरह सहस्र छात्रों में भारत भर में २०-२५ छात्र ही वेद की परीक्षा में बैठते होंगे। २-३ छात्र वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करते होंगे, जिन में कोई वेद भी पूरा नहीं होता। इस में याज्ञिक प्रक्रिया का भी ज्ञान अधूरा रहता है। १००० छात्र साहित्य में बैठते होंगे। शेष लगभग १२००० बारह सहस्र केवल व्याकरण की परीक्षा देते हैं। १७ विषयों के आचार्य, ६ वर्ष में प्रत्येक आचार्य अर्थात् १७×६ = १०२ वर्षों में अन्य विषयों के ज्ञाता (वह भी अधूरे) बन सकते हैं, जो समयाभाव से होना असम्भव है। १२ वर्षों में केवल व्याकरण (वह भी अधूरा और पढ़ाने में असमर्थ) भी कठिनाई से हो पाता है।

इस सब का कारण आर्षग्रन्थों का सर्वथा परित्याग, विशेष कर पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी को सर्वथा तिलाञ्जलि दे कर लघुकौमुदी-मध्यकौमुदी-सिद्धान्तकौमुदी आदि पाणिनि-क्रम के विरुद्ध बने प्रक्रियाग्रन्थों

का पढ़ना है। जिन में सूत्र और उस का ४-५ गुणा अर्थ बिना समझे रटना ही पड़ता है, अन्य कोई मार्ग नहीं। जिस से बुद्धि ठस (प्रतिबद्ध) हो जाती है। सोचने समझने की शक्ति मारी जाती है। वर्तमान काल में संस्कृत के छात्र के लिए सूखे भोजन का भी यथेष्ट प्रबन्ध न होने के कारण, इधर घोर रद्दा लगाते २ उन का शारीरिक-मानसिक और आत्मिक विकास रुक जाता है। इस सारी दयनीय दुरवस्था के दूर करने का एक ही उपाय है—

अब पुनः पाणिनीय अष्टाध्यायी की शरण लें

कौमुदी में अष्टाध्यायी के सूत्र होने पर भी अष्टाध्यायी के स्वाभाविक सरल-सुबोध क्रम का नाश कर दिया जाता है। सूत्र के अर्थ समझने में तथा साधनिका में अष्टाध्यायी का स्वाभाविक क्रम नष्ट हो जाता है, जो अत्यन्त ही उपादेय और छात्र को तत्काल बोध कराने वाला होता है। यह क्रम ही वास्तविक अष्टाध्यायी समझनी चाहिये, कमभङ्ग अष्टाध्यायी कदापि नहीं।

अष्टाध्यायी का यह स्वाभाविक क्रम बौद्धकाल तक बराबर चलता रहा। २ वीं शताब्दी से पूर्व जितने भी व्याकरण रचे गये, वे सब पाणिनीय प्रकरणानुसार, प्रकरणानुसारी ही रचे गये। शब्दसिद्धि की प्रक्रिया (जैसा कि कौमुदी-हें चन्द्र-तथा सुग्ध-बोधादि की है) के अनुसार व्याकरण की रचना नहीं हुई। इससे यह बात प्रत्यक्ष है कि विक्रम की १२वीं शताब्दी से पूर्व के सभी वैयाकरण अष्टाध्यायी के प्रकरणानुसारी क्रम को ही व्याकरणाध्ययन में सुगम समझते रहे। इसीलिये शब्दसिद्धि के प्रकरणानुसारी ग्रन्थ की रचना इस काल तक नहीं हुई।

पाणिनीय अष्टाध्यायी को पाश्चात्य विद्वान्—“मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम रचना वा आविष्कार” मानते हैं।

यद् वेद तक पहुंचना है तो ४ वर्ष में व्याकरण—१ वर्ष में साहित्य, २ वर्ष में अन्य वेदाङ्ग, २ वर्ष में उपाङ्ग, १ वर्ष में उपवेद, तथा ६ वर्ष में

ब्राह्मणसहित वेद=१६ वर्ष में सम्पूर्ण वेद शास्त्र का विद्वान् बन सकता है। इस के लिये अष्टाध्यायी महाभाष्य ही परम साधन हैं। नहीं तो १०८ वर्षों में भी एक व्यक्ति वेद शास्त्र को नहीं पढ़ सकता। वेद तक पहुँचने के लिये अनार्ष ग्रन्थ, जो बीच में बाधक खड़े हो गये हैं, इन्हें हटाना ही होगा और मूल आकर आर्ष ग्रन्थों का आश्रय लेना होगा। हाँ, व्याकरण आदि विषयों के विशेषज्ञ बनने के लिये उपर्युक्त विषय १६ वर्ष पढ़ कर जो चाहे अपना सारा जीवन इस एक ही विषय में लगादे, कौन रोकता है? वेद को छोड़ कर अन्य विषयों को ही पढ़ने वाले को शास्त्र क्या कहता है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥ (मनुः)

अर्थात्—जो द्विज वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह बन्धु बान्धवों सहित जीता हुआ ही शूद्रता को प्राप्त हो जाता है। सो हमें सोचना होगा कि हम दूसरों को शूद्र बनाते २ स्वयं ही शूद्र तो नहीं बन रहे हैं।

प्रक्रिया-ग्रन्थ

प्रक्रिया-ग्रन्थों का निर्माण इस प्रकार हुआ—

- (१) रूपावतार (२६६४ सूत्रयुक्त) की विक्रमी संवत् ११४० में रचना हुई।
- (२) प्रक्रियाकौमुदी (२४७० सूत्र) की वि० सं० १४८० में रचना हुई।
- (३) सिद्धान्तकौमुदी (३६७८ सूत्र) की वि० सं० १५१० से १५७५ में भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचना हुई।
- (४) मध्यकौमुदी (२११७ सूत्र) वरदराज पण्डित कृत।
- (५) लघुकौमुदी (११८८ सूत्र युक्त) वरदराज पण्डित कृत।

इस लघुकौमुदी के सूत्र तथा अर्थ ११८८ × ५ = लगभग ६०००

सूत्र रटने पड़ते हैं । कौमुदी पढ़ा, किसी सूत्र का अर्थ कैसे बना यह कदापि नहीं बता सकता । जिस ने अष्टाध्यायी क्रम से पढ़ा होगा, वह ऊपर से आने वाले अधिकार और अनुवृत्ति से सूत्र का अर्थ तत्काल बता देगा । यही एक विशेषता है, जिसे छात्र-वर्ग को ग्रहण करना चाहिये, यदि छात्र अर्थ रटने से अपना जान छुड़ाना चाहते हैं । कौमुदी-क्रम से पढ़ने वाले छात्र को चाहिये कि वह इस क्रम को सदा के लिए छोड़ दे । अष्टाध्यायी का सरल क्रम ग्रहण करे । अध्यापक लोग तो कौमुदीक्रम को प्रलयकाल तक भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि इस के सिवाय उन्हें दूसरा क्रम आता ही नहीं । वृत्ति वः आर्थिक सहायता के न मिलने वा बन्द कर देने के भय से जो छात्र कौमुदी-क्रम को न छोड़ सकें, और अष्टाध्यायी-क्रम को न ग्रहण कर सकें, तो भी इतना तो वे कर सकते हैं कि अपने गुरुओं के चरणों में परम श्रद्धान्वन होते हुए अत्यन्त नम्रता-पूर्वक कौमुदी में आये प्रत्येक सूत्र का अर्थ कैसे बन गया, यह बात अवश्य पूछ पूछ कर चलें, तो भी कुछ अच्छा हो । इससे धीरे २ सब लोग अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने के पश्चात् ही व्याकरण पढ़ाना आरम्भ करेंगे और छात्रों की जान बचेगी । उन्हें बिना समझे रटने से मुक्ति मिलेगी । भारत में संस्कृत शिक्षा पर लगा एक भारी कलङ्क दूर हो जायगा ।

अष्टाध्यायी क्रम की विशेषतायें

इस लघु भूमिका में हम अति संक्षेप से दर्शाते हैं कि अष्टाध्यायी कैसे पढ़नी चाहिये और इस के न पढ़ने से क्या २ घोर यातनायें छात्रों को भोगनी पड़ती हैं—

(१) कौमुदी क्रम से पढ़ा वा पढ़ाने वाला यह नहीं बता वा समझा सकता कि अमुक सूत्र का लिखा हुआ अर्थ कैसे बन गया । छात्र को सूत्र का अर्थ हर अवस्था में बिना समझे रटना ही पड़ेगा । दूसरा कोई उपाय ही नहीं । उधर अष्टाध्यायीक्रम से अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किये छात्र का तो कहना ही

व्या बिना अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किया, संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाला छात्र भी ३-४ दिन में ही अष्टाध्यायी मूल पुस्तक हाथ में लेकर सूत्र का अर्थ स्वयं करेगा और पहिले संस्कृत में करता है। अदभुत तो यह है कि बिना रटे करता है, समझ कर करता है। संस्कृत का विद्वत्समाज, विशेष कर काशी का विद्वत्समज यह देख कर एकदम आश्चर्यचकित रह जाता है। अनुवृत्ति और अधिकार के बल पर दो चार सूत्रों का नहीं, पढ़े हुये प्रत्येक सूत्र का, तथा किसी २ बिना पढ़े सूत्र का भी अर्थ कर लेता है। अष्टाध्यायी क्रम का चमत्कार ही ऐसा है।

यही एक विशेषता ऐसी है, जिसे ठीक प्रत्यक्ष ज्ञान लेने पर कौमुदीक्रम का एक दम परित्याग होना उचित है। जिसे भी एक बार यथावत् प्रत्यक्ष अनुभव हो जायगा, वह कभी कौमुदी को हाथ तक न लगायेगा। वृत्ति की विवशता दूसरी बात है।

(२) अनुवृत्ति और अधिकार का ज्ञान कौमुदीक्रम से कदापि नहीं हो सकता। अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलतापूर्वक तत्काल ज्ञान हो जाता है।

(३) कौमुदी का कण्ठ किया हुआ अर्थ, बिना समझे रटा होने के कारण स्मृतिपथ से झट उतर जाता है अर्थात् भूल जाता है, यह प्रत्येक छात्र जानता है। जो अष्टाध्यायी क्रम में अर्थ करने का ढंग भूल भी जावे (अधिकार और अनुवृत्ति के सहारे ज्ञान लेने पर नहीं भूलता) तो छात्र अर्थ पुनः बना लेगा। साथ ही अष्टाध्यायी क्रम में उस २ प्रकरण में उत्सर्ग-अपवाद-प्राप्ति-निषेध का ज्ञान छात्र को सूत्र एक जगह होने से, अनायास बिना किसी कठिनाई के हो जाता है। जैसे सर्वनाम-इत्संज्ञा-आत्मनेपद-परस्मैपद-कारक-विभक्ति-समास-द्विवचन-संहिता-सेट्-अनिट्-आदि प्रकरणों के सूत्र परस्पर सुसम्बद्ध होने से समझ में आ जाते हैं। किस सूत्र की प्राप्ति में वा निषेध में किस सूत्र का आरम्भ है, तत्काल बुद्धि में बैठ जाता है। सन्देह रह ही

अष्टाध्यायी-महाभाष्यादि आर्षग्रन्थों के पठन-पाठन

तथा

बिना रटे संस्कृत सीखने की सरलतम पद्धति के विषय में

विशेष जानकारी के लिये निम्नाङ्कित पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या लिफाफा आना चाहिये। पूछने वाले अपनी योग्यता (विशेष कर संस्कृत योग्यता) का पूरा परिचय दें। पत्र संचिप्त और स्पष्ट लिखा होना चाहिये—

पता—

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

अध्यक्ष पाणिनि महाविद्यालय

पो० अजमतगढ़ पैलेस, मोतीभील

वाराणसी जं० ६ (बनारस ६)

(उत्तरप्रदेश)

* ओ३म् *

प्राक्-कथन

अष्टाध्यायी क्यों पढ़ें

आर्य-सनातन-वैदिक धर्मियों का सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य देववाणी संस्कृत में है। हम भारतीयों के लिए वेद सर्वोपरि हैं। शाखा-उपवेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-वेदाङ्ग-साहित्य-आयुर्वेद-विज्ञान-गणित-रामायण-महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये सभी ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। भारतीय संस्कृति-सभ्यता-साहित्य और भारतीय परम्परा का सब कुछ इसी संस्कृत (देव भाषा) में है। कहां तक कहें, हम भारतीयों का गौरव सर्वस्व सब कुछ संस्कृत भाषा में ही है।

‘रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्’ वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिये। काशी की आचार्य-शास्त्री-मध्यमा-प्रथमा परीक्षाओं में लगभग १३००० तेरह सहस्र छात्रों में भारत भर में २०-२५ छात्र ही वेद की परीक्षा में बैठते होंगे। २-३ छात्र वेदाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करते होंगे, जिन में कोई वेद भी पूरा नहीं होता। इस में याज्ञिक प्रक्रिया का भी ज्ञान अधूरा रहता है। १००० छात्र साहित्य में बैठते होंगे। शेष लगभग १२००० बारह सहस्र केवल व्याकरण की परीक्षा देते हैं। १७ विषयों के आचार्य, ६ वर्ष में प्रत्येक आचार्य अर्थात् $17 \times 6 = 102$ वर्षों में अन्य विषयों के ज्ञाता (वह भी अधूरे) बन सकते हैं, जो समयाभाव से होना असम्भव है। १२ वर्षों में केवल व्याकरण (वह भी अधूरा और पढ़ाने में असमर्थ) भी कठिनाई से ही पाता है।

इस सब का कारण आर्षग्रन्थों का सर्वथा परित्याग, विशेष कर पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी को सर्वथा तिलाञ्जलि दे कर लघुकौमुदी-मध्यकौमुदी-सिद्धान्तकौमुदी आदि पाणिनि-क्रम के विरुद्ध अने प्रक्रियाग्रन्थों

का पढ़ना है। जिन में सूत्र और उस का ४-५ गुणा अर्थ बिना समझे रटना ही पड़ता है, अन्य कोई मार्ग नहीं। जिस से बुद्धि ठस (प्रतिबद्ध) हो जाती है। सोचने समझने की शक्ति मारी जाती है। वर्तमान काल में संस्कृत के छात्र के लिए सूखे भोजन का भी यथेष्ट प्रबन्ध न होने के कारण, इधर घोर रूढ़ता लगाते २ उन का शारीरिक-मानसिक और आत्मिक विकास रुक जाता है। इस सारी दयनीय दुरवस्था के दूर करने का एक ही उपाय है—

अब पुनः पाणिनीय अष्टाध्यायी की शरण लें

कौमुदी में अष्टाध्यायी के सूत्र होने पर भी अष्टाध्यायी के स्वाभाविक सरल-सुबोध क्रम का नाश कर दिया जाता है। सूत्र के अर्थ समझने में तथा साधनिका में अष्टाध्यायी का स्वाभाविक क्रम नष्ट हो जाता है, जो अत्यन्त ही उपादेय और छात्र को तत्काल बोध कराने वाला होता है। यह क्रम ही वास्तविक अष्टाध्यायी समझनी चाहिये, क्रमभङ्ग अष्टाध्यायी कदापि नहीं।

अष्टाध्यायी का यह स्वाभाविक क्रम बौद्धकाल तक बराबर चलता रहा। २ वीं शताब्दी से पूर्व जितने भी व्याकरण रचे गये, वे सब पाणिनीय करणानुसारी, प्रकरणानुसारी ही रचे गये। शब्दसिद्धि की प्रक्रिया (जैसा कि कौमुदी-हे चन्द्र-तथा मुग्ध-बोधादि की है) के अनुसार व्याकरण की रचना नहीं हुई। इससे यह बात प्रत्यक्ष है कि विक्रम की १२वीं शताब्दी से पूर्व के सभी वैयाकरण अष्टाध्यायी के प्रकरणानुसारी क्रम को ही व्याकरणाध्ययन में सुगम समझते रहे। इसीलिये शब्दसिद्धि के प्रकरणानुसारी ग्रन्थ की रचना इस काल तक नहीं हुई।

पाणिनीय अष्टाध्यायी को पाश्चात्य विद्वान्—“मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठतम रचना वा आविष्कार” मानते हैं।

यदि वेद तक पहुँचना है तो ४ वर्ष में व्याकरण—१ वर्ष में साहित्य, २ वर्ष में अन्य वेदाङ्ग, २ वर्ष में उपाङ्ग, १ वर्ष में उपवेद, तथा ६ वर्ष में

ब्राह्मणसहित वेद = १६ वर्ष में सम्पूर्ण वेद शास्त्र का विद्वान् बन सकता है। इस के लिये अष्टाध्यायी महाभाष्य ही परम साधन हैं। नहीं तो १०८ वर्षों में भी एक व्यक्ति वेद शास्त्र को नहीं पढ़ सकता। वेद तक पहुँचने के लिये अनार्ष ग्रन्थ, जो बीच में बाधक खड़े हो गये हैं, इन्हें हटाना ही होगा और मूल आकर आर्ष ग्रन्थों का आश्रय लेना होगा। हाँ, व्याकरण आदि विषयों के विशेषज्ञ बनने के लिये उपर्युक्त विषय १६ वर्ष पढ़ कर जो चाहे अपना सारा जीवन इस एक ही विषय में लगादे, कौन रोकता है? वेद को छोड़ कर अन्य विषयों को ही पढ़ने वाले को शास्त्र क्या कहता है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुस्ते श्रमम् ।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥ (मनुः)

अर्थात्—जो द्विज वेद को न पढ़ कर अन्यत्र परिश्रम करता है, वह बन्धु बान्धवों सहित जीता हुआ ही शूद्रता को प्राप्त हो जाता है। सो हमें सोचना होगा कि हम दूसरों को शूद्र बनाते २ स्वयं ही शूद्र तो नहीं बन रहे हैं।

प्रक्रिया-ग्रन्थ

प्रक्रिया-ग्रन्थों का निर्माण इस प्रकार हुआ—

- (१) रूपावतार (२६६४ सूत्रयुक्त) की विक्रमी संवत् ११४० में रचना हुई।
- (२) प्रक्रियाकौमुदी (२४७० सूत्र) की वि० सं० १४८० में रचना हुई।
- (३) सिद्धान्तकौमुदी (३६७८ सूत्र) की वि० सं० १५१० से १५७५ में भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचना हुई।
- (४) मध्यकौमुदी (२११७ सूत्र) वरदराज पण्डित कृत।
- (५) लघुकौमुदी (११८८ सूत्र युक्त) वरदराज पण्डित कृत।

इस लघुकौमुदी के सूत्र तथा अर्थ ११८८ × ५ = लगभग ६०००

सूत्र रटने पड़ते हैं । कौमुदी पढ़ा, किसी सूत्र का अर्थ कैसे बना यह कदापि नहीं बता सकता । जिस ने अष्टाध्यायी क्रम से पढ़ा होगा, वह ऊपर से आने वाले अधिकार और अनुवृत्ति से सूत्र का अर्थ तत्काल बता देगा । यही एक विशेषता है, जिसे छात्र-वर्ग को ग्रहण करना चाहिये, यदि छात्र अर्थ रटने से अपना ज्ञान छुड़ाना चाहते हैं । कौमुदी-क्रम से पढ़ने वाले छात्र को चाहिये कि वह इस क्रम को सदा के लिए छोड़ दे । अष्टाध्यायी का सरल क्रम ग्रहण करे । अध्यापक लोग तो कौमुदीक्रम को प्रलयकाल तक भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि इस के सिवाय उन्हें दूसरा क्रम आता ही नहीं । वृत्ति वः आर्थिक सहायता के न मिलने वा वन्द कर देने के भय से जो छात्र कौमुदी-क्रम को न छोड़ सकें, और अष्टाध्यायी-क्रम को न ग्रहण कर सकें, तो भी इतना तो वे कर सकते हैं कि अपने गुरुओं के चरणों में परम श्रद्धावान् होते हुए अत्यन्त नम्रता-पूर्वक कौमुदी में आये प्रत्येक सूत्र का अर्थ कैसे बन गया, यह बात अवश्य पूछ पूछ कर चलें, तो भी कुछ अच्छा हो । इससे धीरे २ सब लोग अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने के पश्चात् ही व्याकरण पढ़ाना आरम्भ करेंगे और छात्रों की जान बचेगी । उन्हें बिना समझे रटने से मुक्ति मिलेगी । भारत में संस्कृत शिक्षा पर लगा एक भारी कलङ्क दूर हो जायगा ।

अष्टाध्यायी क्रम की विशेषतायें

इस लघु भूमिका में हम अति संक्षेप से दर्शाते हैं कि अष्टाध्यायी कैसे पढ़नी चाहिये और इस के न पढ़ने से क्या २ घोर यातनायें छात्रों को भोगनी पड़ती हैं—

(१) कौमुदी क्रम से पढ़ा वा पढ़ाने वाला यह नहीं बता वा समझा सकता कि अमुक सूत्र का लिखा हुआ अर्थ कैसे बन गया । छात्र को सूत्र का अर्थ हर अवस्था में बिना समझे रटना ही पड़ेगा । दूसरा कोई उपाय ही नहीं । उधर अष्टाध्यायीक्रम से अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किये छात्र का तो कहना ही

क्या बिना अष्टाध्यायी कण्ठस्थ किया, संस्कृत से अनभिज्ञ हिन्दी जानने वाला छात्र भी ३-४ दिन में ही अष्टाध्यायी मूल पुस्तक हाथ में लेकर सूत्र का अर्थ स्वयं करेगा और पहिले संस्कृत में करता है। अदभुत तो यह है कि बिना रटे करता है, समझ कर करता है। संस्कृत का विद्वत्समाज, विशेष कर काशी का विद्वत्समूहल यह देख कर एकदम आश्चर्यचकित रह जाता है। अनुवृत्ति और अधिकार के बल पर दो चार सूत्रों का नहीं, पढ़े हुये प्रत्येक सूत्र का, तथा किसी २ बिना पढ़े सूत्र का भी अर्थ कर लेता है। अष्टाध्यायी क्रम का चमत्कार ही ऐसा है।

यही एक विशेषता ऐसी है, जिसे ठीक प्रत्यक्ष जान लेने पर कौमुदीक्रम का एक दम परित्याग होना उचित है। जिसे भी एक बार यथावत् प्रत्यक्ष अनुभव हो जायगा, वह कभी कौमुदी को हाथ तक न लगायेगा। वृत्ति की विवशता दूसरी बात है।

(२) अनुवृत्ति और अधिकार का ज्ञान कौमुदीक्रम से कदापि नहीं हो सकता। अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलतापूर्वक तत्काल ज्ञान हो जाता है।

(३) कौमुदी का कण्ठ किया हुआ अर्थ, बिना समझे रखा होने के कारण स्मृतिपथ से भट्ट उतर जाता है अर्थात् भूल जाता है, यह प्रत्येक छात्र जानता है। जो अष्टाध्यायी क्रम में अर्थ करने का ढंग भूल भी जावे (अधिकार और अनुवृत्ति के सहारे जान लेने पर नहीं भूलता) तो छात्र अर्थ पुनः बना लेगा। साथ ही अष्टाध्यायी क्रम में उस २ प्रकरण में उत्सर्ग-अपवाद-प्राप्ति-निषेध का ज्ञान छात्र को सूत्र एक जगह होने से, अनायास बिना किसी कठिनाई के हो जाता है। जैसे सर्वनाम-इत्संज्ञा-आत्मनेपद-परस्मैपद-कारक-विभक्ति-समास-द्विवचन-संहिता-सेट्-अनिट्-आदि प्रकरणों के सूत्र परस्पर सुसम्बद्ध होने से समझ में आ जाते हैं। किस सूत्र की प्राप्ति में वा निषेध में किस सूत्र का आरम्भ है, तत्काल बुद्धि में बैठ जाता है। सन्देह रह ही

नहीं जाता। कौमुदीक्रम में यह बात समझ में नहीं आ सकती और सन्देह बराबर बना ही रहता है ॥

(४) “विप्रतिषेधे परं कार्यम्” (अ० १।४।२।), “असिद्धवदत्राभात् (अ० ६।४।२२) तथा “पूर्वत्रासिद्धम्” (अ० ८।२।१) इन सूत्रों के क्षेत्र का ज्ञान अष्टाध्यायी के बिना कदापि नहीं हो सकता। क्रमज्ञान के बिना ये सूत्र कदापि समझ में नहीं आ सकते। अतः कौमुदी पढ़ने पढ़ाने वाला इन सूत्रों के मर्म को समझ ही नहीं सकता। अष्टाध्यायी वाले को ये सूत्र और इनका मर्म दस्तामलकवत् तत्काल प्रत्यक्ष हो जाता है। इसी कारण कौमुदी वाले को क्रम का ज्ञान न हो सकने के कारण महाभाष्य यथावत् समझ में नहीं आ पाता ॥

(५) कौमुदी क्रम में जहाँ पर भी कोई सूत्र पढ़ा है, उसकी प्राप्ति वा उस के अर्थ की उपस्थिति वहीं पर ही होगी, अन्यत्र नहीं। अष्टाध्यायी क्रम से सूत्र समझ लेने पर जहाँ भी उसकी प्राप्ति होगी, वहीं छात्र उस को समझ लेगा। संकुचित उदाहरणों तक न रह कर, व्यापक उदाहरणों में उसे लगा लेगा। उदाहरणों में उस की बुद्धि व्यापक होगी, कूपमण्डूकवत् वहीं की वहीं अवसृद्ध न रहेगी ॥

(६) लेट् लकार-वैदिकप्रयोग तथा स्वरप्रक्रिया में अष्टाध्यायी क्रम से अत्यन्त सरलता से यथार्थ ज्ञान हो जाता है, जो कौमुदीक्रम से नहीं हो सकता। लौकिक वैदिक शब्दों का ज्ञान तथा परस्पर भेद अष्टाध्यायी क्रम से ठीक २ होता है, जो दूसरे क्रम से नहीं होता ॥

इन सब कारणों से संस्कृत पढ़ने पढ़ाने वाले प्रत्येक छात्र वा अध्यापक का परम कर्तव्य है कि वह अब अष्टाध्यायी क्रम को ही अपनावे। इस विषय में हम अपने विचार संस्कृत में “संस्कृताध्ययनस्य सरलतम उपायः” नामक पुस्तक में लिख चुके हैं। यहाँ हम ने अति संक्षेप से निर्देश-मात्र लिखा है। बाल्यावस्था में अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करा कर किस विधि से

अष्टाध्यायी क्रम द्वारा छात्रों को १२ वर्ष के स्थान पर ४ वर्ष में अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ा कर व्याकरण का प्रौढ़ ज्ञान कराया जा सकता है और प्रौढ़ (बड़ी आयु के) पठनार्थियों को भी, जो रट नहीं सकते, इन्हें भी बिना रटे संस्कृत और उस के व्याकरण का आवश्यक और व्यावहारिक ज्ञान ६ मास के अन्दर अष्टाध्यायी पद्धति से कैसे हो सकता है, हुआ और हो रहा है, इस विषय में अभी तक लिखित कोई पाठ्यक्रम नहीं था । अनेक संस्कृतप्रेमी महानुभावों, नेताओं, विद्वानों और पठनार्थियों की ओर से निरन्तर आग्रह-पूर्वक मांग करने पर अब हमारी बनाई —

“संस्कृत पठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि”

बिना रटे ६ मास में अष्टाध्यायीपद्धति से संस्कृताध्ययन का सफलप्रयोग

नामक पुस्तक में मिल सकता है, जिस का प्रथम संस्करण समाप्त हो चुका है, पुनः परिशोधित और परिवर्धित दूसरा संस्करण छप रहा है । (जो नीचे लिखे पते पर मिल सकती है) । साथ ही मासिक पत्रिका “वेदवाणी” बनारस में अष्टाध्यायी क्रम से बिना रटे प्रौढ़ों के लिये संस्कृत पाठ प्रति मास निरन्तर छपते रहे हैं । यह क्रम छोटी आयु वालों के लिए भी बहुत लाभकर होगा । यह क्रम इतना सरल होगा कि कोई भी संस्कृत-प्रेमी पाठक चाहे वह किसी भी आयु का हो, कम से कम एक घण्टा प्रतिदिन लगाने से घर बैठे अल्प सहायता से भी कुछ ही मासों में संस्कृत का बोध सुगमता से कर लेगा ।

उपर्युक्त क्रम से संस्कृत शिक्षण के लिये पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठ के शुद्ध बढ़िया कागज पर और सस्ते संस्करण की अत्यन्त आवश्यकता थी । विदित रहे कि काशिकादि में अनेक वार्तिकों को सूत्ररूप में पढ़ा गया है । सो महाभाष्य से विरुद्ध होने से हम ने उन सब वार्तिकों को पृथक् कर दिया है । इस सूत्रपाठ का शेष संशोधन भी हम ने महाभाष्य के आधार पर ही किया है । अति स्वल्प पाठ अभी भी विचारणीय है, जिन पर कभी

पुनः विचार किया जा सकेगा। विद्वानों को इस विषय में अपने विचार उपस्थित करने चाहिये। विदित रहे कि काशी के ऋग्वेदियों का अष्टाध्यायी का पाठ निर्णयसागर बम्बई में छपी अष्टाध्यायी के अनुसार है। दूसरे शब्दों में काशिका के प्रायः अनुकूल है। इससे प्रतीत होता है कि अष्टाध्यायी पाठ की शुद्ध परम्परा १३०० वर्ष से पहिले से विकृत हो चुकी थी। इस विषय पर हम कभी स्वतन्त्र विचार करेंगे।

प्रत्येक पठनार्थी के पास अष्टाध्यायी का यही संस्करण होना चाहिये, क्योंकि उक्त सरलतम पद्धति में सूत्र संख्या इसी संस्करण के अनुसार दी गई है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुये “श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट” के सञ्चालकों ने यह संस्करण प्रकाशित किया है॥

विदुषां वशवदः

मोतीझील

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

(i) चैत्र संवत् २०११।

२१ मार्च १९५५ ई०॥

(ii) २० ज्येष्ठ सं० २०१४।

२ जून १९५७ ई०॥

प्रधान श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

(i) गुरु बाज़ार अमृतसर (पंजाब)

(ii) पाणिनि महाविद्यालय

मोतीझील बनारस नं० ६





अष्टाध्यायीसूत्रपाठः ।

विश्वानि देव सवितर्दुर्गितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव ॥

अथ शब्दानुशासनम् ॥

अइउण् । ऋलृक् । एओङ् । ऐऔच् । हयवरद् । लण् ।
वमङणनम् । झभञ् । घढधप् । जवगडदश् । खफछठथचटतव् ।
कपय् । शपसर् । हल् । इति प्रत्याहारसूत्राणि ॥

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः पादः

- १ वृद्धिरादैच् ।
- २ अदेङ् गुणः ।
- ३ इको गुणवृद्धी ।
- ४ न धातुलोप आर्धधातुके ।
- ५ कृति च ।
- ६ दीधीवेवीटाम् ।
- ७ हलोऽनन्तराः संयोगः ।
- ८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।

- ९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ।
- १० नाज्झलौ ।
- ११ ईदूदेद्विचचने प्रगृह्यम् ।
- १२ अदसो मात् ।
- १३ शे ।
- १४ निपात एकाजनाङ् ।
- १५ ओत् ।
- १६ संवुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ।
- १७ उञ ऊं ।

- १८ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ।
 १९ दाधा ध्वदाप् ।
 २० आद्यन्तवदेकस्मिन् ।
 २१ तरप्तमपौ घः ।
 २२ बहुगणवतुडिति संख्या ।
 २३ षणान्ता षट् ।
 २४ डिति च ।
 २५ क्तकवतू निष्ठा ।
 २६ सर्वादीति सर्वनामानि ।
 २७ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ।
 २८ न बहुव्रीहौ ।
 २९ तृतीयासमासे ।
 ३० द्वन्द्वे च ।
 ३१ विभाषा जसि ।
 ३२ प्रथमचरमतयाल्पाध्वकतिपय-
 नेमाश्च ।
 ३३ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराध-
 राणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ।
 ३४ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।
 ३५ अन्तरं बहिर्योगोपसंख्यातयोः ।
 ३६ स्वरादिनिपातमव्ययम् ।
 ३७ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ।
 ३८ कृन्मेजन्तः ।
 ३९ क्त्वातोसुन्कसुनः ।
 ४० अव्ययीभावश्च ।
 ४१ शि सर्वनामस्थानम् ।
 ४२ सुडनपुंसकस्य ।
 ४३ न वेति विभाषा ।
 ४४ इग् यणः संप्रसारणम् ।
 ४५ आद्यन्तौ ट्कितौ ।
 ४६ मिदचोऽन्त्यात् परः ।
 ४७ एच इग्रस्वादेशो ।
 ४८ षष्ठी स्थानेयोगा ।
 ४९ स्थानेऽन्तरतमः ।
 ५० उरण् रपरः ।
 ५१ अलोऽन्त्यस्य ।
 ५२ डिच्च ।
 ५३ आदेः परस्य ।
 ५४ अनेकालिशत् सर्वस्य ।
 ५५ स्थानिवदादेशोऽनालिवधौ ।
 ५६ अचः परस्मिन् पूर्वविधौ ।
 ५७ न पदान्तद्विवचनवरेयलोप-
 स्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चवि-
 धिषु ।
 ५८ द्विवचनेऽचि ।
 ५९ अदर्शनं लोपः ।
 ६० प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ।
 ६१ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ।
 ६२ न लुमताङ्गस्य ।
 ६३ अचोऽन्त्यादि टि ।
 ६४ अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा ।
 ६५ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ।
 ६६ तस्मादित्युत्तरस्य ।
 ६७ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ।

- ६८ अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः ।
 ६९ तपरस्तत्कालस्य ।
 ७० आदिरन्त्येन सहेता ।
 ७१ येन विधिस्तदन्तस्य ।
 ७२ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् ।
 ७३ त्यदादीनि च ।
 ७४ एङ् प्राचां देशे ।

द्वितीयः पादः ।

- १ गाङ्कुटादिभ्योऽङ्णिन् डित् ।
 २ विज इट् ।
 ३ विभाषोर्णोः ।
 ४ सार्वधातुकमपित् ।
 ५ असंयोगालिट् कित् ।
 ६ इन्धिभवतिभ्यां च ।
 ७ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः
 क्त्वा ।
 ८ रुदविदमुपग्रहिस्वपिप्रच्छः
 संश्च ।
 ९ इको झल् ।
 १० हलन्ताच्च ।
 ११ लिङ्सिच्चावात्मनेपदेषु ।
 १२ उश्च ।
 १३ वा गमः ।
 १४ हनः सिच् ।
 १५ यमो गन्धने ।
 १६ विभाषोपयमने ।

- १७ स्याध्वोरिच्च ।
 १८ न क्त्वा सेट् ।
 १९ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिश्वि-
 दिधृषः ।
 २० मृषस्तितीक्षायाम् ।
 २१ उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्य-
 तरस्याम् ।
 २२ पूङ्गः क्त्वा च ।
 २३ नोपधात् थफान्ताद् वा ।
 २४ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ।
 २५ तृषिमृषिकृशोः काश्यपस्य ।
 २६ रलो व्युपधाद्भलादेः संश्च ।
 २७ ऊकालोऽञ्जस्वदीर्घप्लुतः ।
 २८ अचश्च ।
 २९ उच्चैरुदात्तः ।
 ३० नीचैरनुदात्तः ।
 ३१ समाहारः स्वरितः ।
 ३२ तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ।
 ३३ एकश्रुति दूरात् संबुद्धौ ।
 ३४ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्क्षसामसु ।
 ३५ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ।
 ३६ विभाषा छन्दसि ।
 ३७ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तू-
 दात्तः ।
 ३८ देवब्रह्मणोरनुदात्तः ।
 ३९ स्वरितात् संहितायामनुदात्ता-
 नाम् ।

४० उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ।

४१ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः ।

४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः
कर्मधारयः ।

४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपस-
र्जनम् ।

४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ।

४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिप-
दिकम् ।

४६ कृत्तद्धितसमासाश्च ।

४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ।

४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ।

४९ लुक् तद्धितलुकि ।

५० इद् गोण्याः ।

५१ लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने ।

५२ विशेषणानां चाजातेः ।

५३ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् ।

५४ लुब् योगाप्रख्यानात् ।

५५ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं
स्यात् ।

५६ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्या-
न्यप्रमाणत्वात् ।

५७ कालोपसर्जने च तुल्यम् ।

५८ जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवच-
नमन्यतरस्याम् ।

५९ अस्मदो द्वयोश्च ।

६० फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ।

६१ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ।

६२ विशाखयोश्च ।

६३ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहु-
वचनस्य द्विवचनं नित्यम् ।

६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ।

६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव वि-
शेषः ।

६६ स्त्री पुंवच्च ।

६७ पुमान् स्त्रिया ।

६८ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ।

६९ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्या-
न्यतरस्याम् ।

७० पिता मात्रा ।

७१ श्वशुरः श्वश्रवा ।

७२ त्यदादीनि सर्वानित्यम् ।

७३ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री ।

तृतीयः पादः ।

१ भूवादयो धातवः ।

२ उपदेशोऽजनुनासिक इत् ।

३ हलन्त्यम् ।

४ न विभक्तौ तुस्माः ।

५ आदिर्निदुडवः ।

६ षः प्रत्ययस्य ।

७ चुट्ट ।

८ लशक्तद्धिते ।

९ तस्य लोपः ।

- १० यथासंख्यमनुदेशः समानाम् ।
- ११ स्वरितेनाधिकारः ।
- १२ अनुदात्तछित आत्मनेपदम् ।
- १३ भावकर्मणोः ।
- १४ कर्तरि कर्मव्यतिहारे ।
- १५ न गतिर्हिसार्थेभ्यः ।
- १६ इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च ।
- १७ नेर्विशः ।
- १८ परिव्यवेभ्यः क्रियः ।
- १९ विपराभ्यां जेः ।
- २० आङो दोऽनास्यविहरणे ।
- २१ क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च ।
- २२ समवप्रविभ्यः स्थः ।
- २३ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ।
- २४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ।
- २५ उपान्मन्त्रकरणे ।
- २६ अकर्मकाच्च ।
- २७ उद्विभ्यां तपः ।
- २८ आङो यमहनः ।
- २९ समो गम्यृच्छिभ्याम् ।
- ३० निसमुपविभ्यो ह्रः ।
- ३१ स्पर्धायामाङः ।
- ३२ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसि-
क्यप्रतियत्नप्रकथतोपयोगेषु
कृजः ।
- ३३ अधेः प्रसहने ।

- ३४ वेः शब्दकर्मणः ।
- ३५ अकर्मकाच्च ।
- ३६ संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरण-
ज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः ।
- ३७ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि ।
- ३८ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः ।
- ३९ उपपराभ्याम् ।
- ४० आङ उद्गमने ।
- ४१ वेः पादविहरणे ।
- ४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ।
- ४३ अनुपसर्गाद्वा ।
- ४४ अपह्रवे ज्ञः ।
- ४५ अकर्मकाच्च ।
- ४६ संप्रतिभ्यामनाध्याने ।
- ४७ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नवि-
मत्युपमन्त्रणेषु वदः ।
- ४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे ।
- ४९ अनोरकर्मकात् ।
- ५० विभाषा विप्रलापे ।
- ५१ अवाद् ग्रः ।
- ५२ समः प्रतिज्ञाने ।
- ५३ उदश्चरः सकर्मकात् ।
- ५४ समस्तृतीयायुक्तात् ।
- ५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ।
- ५६ उपाद् यमः स्वकरणे ।
- ५७ ज्ञाश्रुस्मृदशां सनः ।
- ५८ नानोर्ज्ञः ।

- ५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ।
 ६० शदेः शितः ।
 ६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ।
 ६२ पूर्ववत् सनः ।
 ६३ आम्प्रत्ययवत् कृजोऽनुप्रयोगस्य ।
 ६४ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ।
 ६५ समः क्षणुवः ।
 ६६ भुजोऽनवने ।
 ६७ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत् स क-
 र्तानाध्याने ।
 ६८ भीस्म्योर्हेतुभये ।
 ६९ गृधिवञ्चयोः प्रलम्भने ।
 ७० लियः संमाननशालीनीकरण-
 योश्च ।
 ७१ मिथ्योपपदात् कृजोऽभ्यासे ।
 ७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रि-
 याफले ।
 ७३ अपाङ्गदः ।
 ७४ णिचश्च ।
 ७५ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ।
 ७६ अनुपसर्गाञ्जः ।
 ७७ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ।
 ७८ शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् ।
 ७९ अनुपराभ्यां कृजः ।
 ८० अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ।
 ८१ प्राङ्गहः ।
 ८२ परेर्मृषः ।

- ८३ व्याङ्परिभ्यो रमः ।
 ८४ उपाच्च ।
 ८५ विभाषाऽकर्मकात् ।
 ८६ बुधयुधनशजनेङ्पुट्पुन्मुभ्यो णेः ।
 ८७ निगरणचलनार्थेभ्यश्च ।
 ८८ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ।
 ८९ न पादभ्याङ्चमाङ्चसपरि-
 मुहरुचिगृतिवदवसः ।
 ९० वा क्यषः ।
 ९१ वृद्धयो लुङि ।
 ९२ वृद्धयः स्यसतोः ।
 ९३ लुटि च कल्पः ।

चतुर्थः पादः ।

- १ आ कडारादेका संज्ञा ।
 २ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।
 ३ यू स्याद्व्यौ नदी ।
 ४ नेयङ्वङ्स्थानावस्त्री ।
 ५ वामि ।
 ६ ङिति ह्रस्वश्च ।
 ७ शेषो ध्यसखि ।
 ८ पतिः समास एव ।
 ९ पष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ।
 १० ह्रस्वं लघु ।
 ११ संयोगे गुरु ।
 १२ दीर्घं च ।

- १३ यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि
प्रत्ययेऽङ्गम् ।
१४ सुप्तिङन्तं पदम् ।
१५ नः क्ये ।
१६ सिति च ।
१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ।
१८ यच्च भम् ।
१९ तसौ मत्वर्थे ।
२० अयस्मयादीनि च्छन्दसि ।
२१ बहुषु बहुवचनम् ।
२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।
२३ कारके ।
२४ ध्रुवमपायेऽपादानम् ।
२५ भीत्रार्थानां भयहेतुः ।
२६ पराजेरसोढः ।
२७ वारणार्थानामीप्सितः ।
२८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ।
२९ आख्यातोपयोगे ।
३० जनिकर्तुः प्रकृतिः ।
३१ भुवः प्रभवः ।
३२ कर्मणा यमभिप्रैति स संप्र-
दानम् ।
३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ।
३४ श्लाघहुङ्स्थाशपां श्लीप्यमानः ।
३५ धारेरुत्तमर्णः ।
३६ स्पृहेरीप्सितः ।

- ३७ कुवद्बुहेष्यासूयार्थानां यं प्रति
कोपः ।
३८ कुवद्बुहोरुपसृष्टयोः कर्म ।
३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ।
४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ।
४१ अनुप्रतिगृणश्च ।
४२ साधकतमं करणम् ।
४३ दिवः कर्म च ।
४४ परिक्रयणे संप्रदानमन्यतर-
स्याम् ।
४५ आधारोऽधिकरणम् ।
४६ अधिर्शाङ्स्थासां कर्म ।
४७ अभिनिविशश्च ।
४८ उपान्वध्याङ्वसः ।
४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म ।
५० तथायुक्तं चानीप्सितम् ।
५१ अकथितं च ।
५२ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्द-
कर्माकर्मकाणामणि कर्ता स
णौ ।
५३ ह्कोरन्यतरस्याम् ।
५४ स्वतन्त्रः कर्ता ।
५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च ।
५६ प्राग्भीश्वरान्निपाताः ।
५७ चादयोऽसत्त्वे ।
५८ प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे ।

- ५९ गतिश्च ।
 ६० ऊर्यादिच्चिबडाचश्च ।
 ६१ अनुकरणं चानितिपरम् ।
 ६२ आदरानादरयोः सदसती ।
 ६३ भूषणेऽलम् ।
 ६४ अन्तरपरिग्रहे ।
 ६५ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ।
 ६६ पुरोऽव्ययम् ।
 ६७ अस्तं च ।
 ६८ अच्छ गत्यर्थवदेषु ।
 ६९ अदोऽनुपदेशे ।
 ७० तिरोऽन्तर्धौ ।
 ७१ विभाषा कृजि ।
 ७२ उपाजेऽन्वाजे ।
 ७३ साक्षात्प्रभृतीनि च ।
 ७४ अनत्याधान उरसिमनसी ।
 ७५ मध्येपदे निवचने च ।
 ७६ नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ।
 ७७ प्राध्वं बन्धने ।
 ७८ जीविकोपनिषदावौपस्ये ।
 ७९ ते प्राग् धातोः ।
 ८० छन्दसि परेऽपि ।
 ८१ व्यवहिताश्च ।
 ८२ कर्मप्रवचनीयाः ।
 ८३ अनुर्लक्षणे ।
 ८४ तृतीयार्थे ।

- ८५ हीने ।
 ८६ उपोऽधिके च ।
 ८७ अपपरी वर्जने ।
 ८८ आङ्मर्यादावचने ।
 ८९ लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवी-
 प्सासु प्रतिपर्यनवः ।
 ९० अभिरभागे ।
 ९१ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ।
 ९२ अधिपरी अनर्थकौ ।
 ९३ सुः पूजायाम् ।
 ९४ अतिरतिक्रमणे च ।
 ९५ अपिः पदार्थसंभावनान्ववस-
 र्गगर्हासमुच्चयेषु ।
 ९६ अधिरीश्वरे ।
 ९७ विभाषा कृजि ।
 ९८ लः परस्मैपदम् ।
 ९९ तडानावात्मनेपदम् ।
 १०० तिङ्छ्रीणि त्रीणि प्रथममध्य-
 मोत्तमाः ।
 १०१ तान्येकवचनद्विवचनबहुवच-
 नान्येकशः ।
 १०२ सुपः ।
 १०३ विभक्तिश्च ।
 १०४ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे
 स्थानिन्यपि मध्यमः ।
 १०५ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यते-
 रुत्तम एकवच्च ।

१०६ अस्मद्युत्तमः ।

१०७ शेषे प्रथमः ।

१०८ परः संनिकर्षः संहिता ।

१०९ विरामोऽवसानम् ।

द्वितीयोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

१ समर्थः पदविधिः ।

२ सुवामन्त्रिते पराङ्गवत् स्वरे ।

३ प्राक् कडारात् समासः ।

४ सह सुपा ।

५ अव्ययीभावः ।

६ अव्ययं विभक्तिसमीपसमुद्भि-
वृद्धचर्याभावात्ययासंप्रतिश-
ब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्य-
यौगपद्यसादृश्यसंपत्तिसाक-
ल्यान्तवचनेषु ।

७ यथाऽसादृश्ये ।

८ यावदवधारणे ।

९ सुप् प्रतिना मात्रार्थे ।

१० अक्षशलाकासंख्याः परिणा ।

११ विभाषाऽपपरिवहिरञ्चवः पञ्च-
म्या ।

१२ आङ्ग्यादाभिविध्योः ।

१३ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ।

१४ अनुर्यत्समया ।

१५ यस्य चायामः ।

१६ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ।

१७ पारे मध्ये षष्ठ्या वा ।

१८ संख्या वंश्येन ।

१९ नदीभिश्च ।

२० अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ।

२१ तत्पुरुषः ।

२२ द्विगुश्च ।

२३ द्वितीया श्रितातीतपतितगता-
त्यस्तप्राप्तापन्नैः ।

२४ स्वयं क्तेन ।

२५ खट्वा क्षेपे ।

२६ सामि ।

२७ कालाः ।

२८ अत्यन्तसंयोगे च ।

२९ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवच-
नेन ।

३० पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपु-
णमिश्रश्लक्ष्णैः ।

३१ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ।

३२ कृत्यैरधिकार्थवचने ।

३३ अन्नेन व्यञ्जनम् ।

३४ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ।

३५ चतुर्थी तदर्थार्थवलिहितसु-
खरक्षितैः ।

३६ पञ्चमी भयेन ।

३७ अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तै-
रल्पशः ।

३८ लोकान्तिकदूरार्थकुच्छ्राणि
केन ।

३९ सप्तमी शौण्डैः ।

४० सिद्धशुष्कपक्वन्धैश्च ।

४१ ध्वाङ्गेण क्षेपे ।

४२ कृत्यैर्कृणे ।

४३ संज्ञायाम् ।

४४ केनाहोरात्रावयवाः ।

४५ तत्र ।

४६ क्षेपे ।

४७ पात्रे समितादयश्च ।

४८ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनव-
केवलाः समानाधिकरणेन ।

४९ दिक्संख्ये संज्ञायाम् ।

५० तद्विद्यार्थोत्तरपदसमाहारे च ।

५१ संख्यापूर्वो द्विगुः ।

५२ कुत्सितानि कुत्सनैः ।

५३ पापाणके कुत्सितैः ।

५४ उपमानानि सामान्यवचनैः ।

५५ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामा-
न्याप्रयोगे ।

५६ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।

५७ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमा-
नमध्यमध्यमवीराश्च ।

५८ श्रेण्यादयः कृतादिभिः ।

५९ केन नात्रिंशशिष्टेनानञ् ।

६० सम्महत्परमोत्तमोऽकृष्टाः पू-
ज्यमानैः ।

६१ वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमा-
नम् ।

६२ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ।

६३ किं क्षेपे ।

६४ पोटायुवतिस्तोककतिपयगृ-
ष्टिधेनुवशावेहद्वक्ष्यणीप्रव-
क्तश्चोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः ।

६५ प्रशंसावचनैश्च ।

६६ युवा खलतिपलितवलिनजर-
तीभिः ।

६७ कृत्यतुल्याख्या अजात्या ।

६८ वर्णो वर्णेन ।

६९ कुमारः श्रमणादिभिः ।

७० चतुष्पादो गर्भिण्या ।

७१ मयूरव्यंसकादयश्च ।

द्वितीयः पादः ।

१ पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैका-
धिकरणे ।

२ अर्थं नपुसंकम् ।

- ३ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्य-
न्यतरस्याम् ।
- ४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ।
- ५ कालाः परिमाणना ।
- ६ नञ् ।
- ७ ईषदकृता ।
- ८ षष्ठी ।
- ९ याजकादिभिश्च ।
- १० न निर्धारणे ।
- ११ पूरणगुणसुहितार्थसद्व्ययत-
व्यसमानाधिकरणेन ।
- १२ केन च पूजायाम् ।
- १३ अधिकरणवाचिना च ।
- १४ कर्मणि च ।
- १५ तृजकाभ्यां कर्तरि ।
- १६ कर्तरि च ।
- १७ नित्यं क्रीडाजीविकयोः ।
- १८ कुगतिप्रादयः ।
- १९ उपपदमतिङ् ।
- २० अमैवाव्ययेन ।
- २१ तृतीयाप्रभृत्यन्यन्यतरस्याम् ।
- २२ क्त्वा च ।
- २३ शेषो बहुव्रीहिः ।
- २४ अनेकमन्यपदार्थे ।
- २५ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिक-
संख्याः संख्येये ।
- २६ दिङ्नामान्यन्तराले ।

- २७ तत्र तेनेदमिति संरूपे ।
- २८ तेन सहेति तुल्ययोगे ।
- २९ चार्थे द्वन्द्वः ।
- ३० उपसर्जनं पूर्वम् ।
- ३१ राजदन्तादिषु परम् ।
- ३२ द्वन्द्वे वि ।
- ३३ अजाद्यदन्तम् ।
- ३४ अल्पाच्चतरम् ।
- ३५ सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ।
- ३६ निष्ठा ।
- ३७ वाहिताग्न्यादिषु ।
- ३८ कडाराः कर्मधारये ।

तृतीयः पादः ।

- १ अनभिहिते ।
- २ कर्मणि द्वितीया ।
- ३ तृतीया च होइछन्दसि ।
- ४ अन्तरान्तरेण युक्ते ।
- ५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।
- ६ अपवर्गे तृतीया ।
- ७ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ।
- ८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ।
- ९ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं
तत्र सप्तमी ।
- १० पञ्चम्यपाङ्परिभिः ।
- ११ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ।

- १२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ
चेष्टायामनध्वनि ।
- १३ चतुर्थी संप्रदाने ।
- १४ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि
स्थानिनः ।
- १५ तुमर्थाच्च भाववचनात् ।
- १६ नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालंबप-
ड्योगाच्च ।
- १७ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाप्रा-
णिषु ।
- १८ कर्तृकरणयोस्तृतीया ।
- १९ सहयुक्तेऽप्रधाने ।
- २० येनाङ्गविकारः ।
- २१ इत्थंभूतलक्षणे ।
- २२ संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ।
- २३ हेतौ ।
- २४ अकर्तर्युक्ते पञ्चमी ।
- २५ विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् ।
- २६ षष्ठी हेतुप्रयोगे ।
- २७ सर्वनाम्नस्तृतीया च ।
- २८ अपादाने पञ्चमी ।
- २९ अन्यारादितरर्तेदिक्छन्दाश्चू-
त्तरपदाजाहियुक्ते ।
- ३० षष्ठ्यन्तसर्थप्रत्ययेन ।
- ३१ एनपा द्वितीया ।
- ३२ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्य-
तरस्याम् ।
- ३३ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकृति-
पयस्यासत्त्ववचनस्य ।
- ३४ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ।
- ३५ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ।
- ३६ सप्तम्यधिकरणे च ।
- ३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ।
- ३८ षष्ठी चानादरे ।
- ३९ स्वामीश्वराधिपतिदायादसा-
क्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ।
- ४० आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवा-
याम् ।
- ४१ यतश्च निर्धारणम् ।
- ४२ पञ्चमी विभक्तेः ।
- ४३ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्त-
म्यप्रतेः ।
- ४४ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ।
- ४५ नक्षत्रे च लुपि ।
- ४६ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाण-
वचनमात्रे प्रथमा ।
- ४७ संबोधने च ।
- ४८ सामन्त्रितम् ।
- ४९ एकवचनं संबुद्धिः ।
- ५० षष्ठी शेषे ।
- ५१ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ।
- ५२ अधीगर्थद्वयेशां कर्मणि ।
- ५३ कृजः प्रतियत्ने ।

- ५४ रुजार्थानां भाववचनानाम-
ज्वरेः ।
५५ आशिषि नाथः ।
५६ जासिनिप्रहणनाटकाथपिषां
हिंसायाम् ।
५७ व्यवहृपणोः समर्थयोः ।
५८ दिवस्तदर्थस्य ।
५९ विभाषोपसर्गो ।
६० द्वितीया ब्राह्मणे ।
६१ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्र-
दाने ।
६२ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ।
६३ यजेश्च करणे ।
६४ कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ।
६५ कर्तृकर्मणोः कृति ।
६६ उभयप्राप्तौ कर्मणि ।
६७ क्तस्य च वर्तमाने ।
६८ अधिकरणवाचिनश्च ।
६९ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृ-
नाम् ।
७० अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ।
७१ कृत्यानां कर्तरि वा ।
७२ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृती-
यान्यतरस्याम् ।
७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभ-
द्रकुशलसुखार्थहितैः ।

चतुर्थः पादः ।

- १ द्विगुरेकवचनम् ।
२ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ।
३ अनुवादे चरणानाम् ।
४ अध्वर्युकृतुरनपुसंकम् ।
५ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्या-
नाम् ।
६ जातिरप्राणिनाम् ।
७ विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रा-
माः ।
८ श्रुद्रजन्तवः ।
९ येषां च विरोधः शाश्वतिकः ।
१० शूद्राणामनिरवसितानाम् ।
११ गवाश्वप्रभृतीनि च ।
१२ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्य-
ञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वा-
पराधरोत्तराणाम् ।
१३ विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवा-
चि ।
१४ न दधिपयआदीनि ।
१५ अधिकरणैतावत्त्वे च ।
१६ विभाषा समीपे ।
१७ स नपुसंकम् ।
१८ अव्ययीभावश्च ।
१९ तत्पुरुषोऽनञ् कर्मधारयः ।
२० संज्ञायां कन्थोशीनरेषु ।

- २१ उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्या-
 सायाम् ।
 २२ छाया बाहुल्ये ।
 २३ समा राजाऽमनुष्यपूर्वा ।
 २४ अशाला च ।
 २५ विभाषा सेनासुराच्छायाशा-
 लानिशानाम् ।
 २६ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ।
 २७ पूर्ववदश्ववडवौ ।
 २८ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च
 छन्दसि ।
 २९ रात्राहाहाः पुंसि ।
 ३० अपथं नपुसंकम् ।
 ३१ अर्धर्चाः पुंसि च ।
 ३२ इदमोऽन्वादेशोऽशनुदात्तस्तृ-
 तीयादौ ।
 ३३ एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदा-
 त्तौ ।
 ३४ द्वितीयादौस्त्वेनः ।
 ३५ आर्धधातुके ।
 ३६ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ।
 ३७ लुङ्सनोर्घस्तु ।
 ३८ घञपोश्च ।
 ३९ बहुलं छन्दसि ।
 ४० लिट्यन्यतरस्याम् ।
 ४१ वेजो वयिः ।
 ४२ हनो वध लिङि ।

- ४३ लुङि च ।
 ४४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ।
 ४५ इणो गा लुङि ।
 ४६ णौ गमिरबोधने ।
 ४७ सनि च ।
 ४८ इङश्च ।
 ४९ गाङ् लिटि ।
 ५० विभाषा लुङ्लुङोः ।
 ५१ णौ च संश्चङोः ।
 ५२ अस्तेर्भूः ।
 ५३ ब्रुवो वचिः ।
 ५४ चक्षिङः ख्याञ् ।
 ५५ वा लिटि ।
 ५६ अजेर्ज्यघञपोः ।
 ५७ वा यौ ।
 ५८ ण्यक्षत्रियार्पणितो यूनि लुग-
 णिजोः ।
 ५९ पैलादिभ्यश्च ।
 ६० इजः प्राचाम् ।
 ६१ न तौल्वलिभ्यः ।
 ६२ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ।
 ६३ यस्कादिभ्यो गोत्रे ।
 ६४ यज्ञोश्च ।
 ६५ अत्रिभृगुकुत्सवासिष्ठगोनमा-
 द्विरोभ्यश्च ।
 ६६ बह्वच इजः प्राच्यभरतेषु ।

- ६७ न गोपवनादिभ्यः ।
 ६८ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ।
 ६९ उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्व-
 न्द्वे ।
 ७० आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्ति-
 कुण्डिनच् ।
 ७१ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ।
 ७२ अदिप्रभृतिभ्यः शपः ।
 ७३ बहुलं छन्दसि ।
 ७४ यङोऽचि च ।
 ७५ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ।
 ७६ बहुलं छन्दसि ।

- ७७ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः प-
 रस्मैपदेषु ।
 ७८ विभाषा प्राघेद्शाच्छासः ।
 ७९ तनादिभ्यस्तथासोः ।
 ८० मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाङ्गक-
 गमिजनिभ्यो लेः ।
 ८१ आमः ।
 ८२ अव्ययादाप्सुपः ।
 ८३ नाव्ययीभावादतोऽभ्यपञ्च-
 म्याः ।
 ८४ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ।
 ८५ लुटः प्रथमस्य डारौरसः ।

तृतीयोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ प्रत्ययः ।
 २ परश्च ।
 ३ आद्युदात्तश्च ।
 ४ अनुदात्तौ सुप्पितौ ।
 ५ गुप्तिज्जिदभ्यः सन् ।
 ६ मान्वधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चा-
 भ्यासस्य ।
 ७ धातोः कर्मणः समानकर्तृका-
 दिच्छायां वा ।
 ८ सुप आत्मनः क्यच् ।
 ९ काभ्यच्च ।

- १० उपमानादाचारे ।
 ११ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च ।
 १२ भृशादिभ्यो भुव्यच्चेर्लोपश्च
 हलः ।
 १३ लोहितादिङाजभ्यः क्यप् ।
 १४ कष्टाय कमणे ।
 १५ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्ति-
 चरोः ।
 १६ वाष्पोष्मभ्यामुद्धमने ।
 १७ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः
 करणे ।
 १८ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ।

- १९ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् ।
 २० पुच्छभाण्डचीवराणिङ् ।
 २१ मुण्डमिश्रश्लश्णलवणव्रतव
 स्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् ।
 २२ धातोरेकाचो हलादेः क्रिया-
 समभिहारे यङ् ।
 २३ नित्यं कौटिल्ये गतौ ।
 २४ लुपसदचरजपजमदहदशगृ-
 भ्यो भावगर्हायाम् ।
 २५ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लो-
 कसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्ण-
 चुरादिभ्यो णिच् ।
 २६ हेतुमति च ।
 २७ कण्ड्वादिभ्यो यक् ।
 २८ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य
 आयः ।
 २९ ऋतेरीयङ् ।
 ३० कमेणिङ् ।
 ३१ आयादये आर्धधातुके वा ।
 ३२ सनाद्यन्ता धातवः ।
 ३३ स्यतासो ललुङोः ।
 ३४ सिञ्चहुलं लेटि ।
 ३५ कास्पत्ययादाममन्त्रे लिटि ।
 ३६ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ।
 ३७ दयायासश्च ।
 ३८ उपविद्जागृभ्योऽन्यतरस्याम् ।
 ३९ भीहीभृदुवां श्लुवच्च ।
 ४० कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ।
 ४१ विदांकुर्वन्वित्यन्यतरस्याम् ।
 ४२ अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयां-
 रमयामकः पावयांक्रियाद्वि-
 दामकन्निति च्छन्दसि ।
 ४३ चिल लुङि ।
 ४४ चलेः सिच् ।
 ४५ शल इगुपधादनिटः कसः ।
 ४६ श्लिष आलिङ्गने ।
 ४७ न दशः ।
 ४८ णिश्रिटुस्तुभ्यः कर्तरि चङ् ।
 ४९ विभाषा धेद्व्योः ।
 ५० गुपेश्छन्दसि ।
 ५१ नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दय-
 तिभ्यः ।
 ५२ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ।
 ५३ लिपिसिचिह्नश्च ।
 ५४ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ।
 ५५ पुषादिद्युताद्युदितः परस्मैप-
 देषु ।
 ५६ सर्तिशास्त्यतिभ्यश्च ।
 ५७ इरितो वा ।
 ५८ जृस्तभुम्भुचुम्भुचुम्भुचुलुचु-
 ग्लुञ्चुश्चिभ्यश्च ।
 ५९ कृमृदृहृभ्यश्छन्दसि ।
 ६० चिण् ते पदः ।

- ६१ दीपजनबुधपूरितायिष्या-
यिभ्योऽन्यतरस्याम् ।
६२ अचः कर्मकर्तरि ।
६३ दुहश्च ।
६४ न रुधः ।
६५ तपोऽनुतापे च ।
६६ चिण् भावकर्मणोः ।
६७ सार्वधातुके यक् ।
६८ कर्तरि शप् ।
६९ दिवादिभ्यः श्यन् ।
७० वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्कमुक्त्र-
सिञ्जुटिलवः ।
७१ यसोऽनुपसर्गात् ।
७२ संयसश्च ।
७३ स्वादिभ्यः श्नुः ।
७४ श्रुवः शृ च ।
७५ अक्षोऽन्यतरस्याम् ।
७६ तनूकरणे तक्षः ।
७७ तुदादिभ्यः शः ।
७८ रुधादिभ्यः श्रम् ।
७९ तनादिकृञ्भ्य उः ।
८० धिन्विक्कृण्वोर च ।
८१ क्र्यादिभ्यः श्रा ।
८२ सन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भु-
स्कुञ्भ्यः श्रुश्च ।
८३ हलः श्रः शानञ्ज्ञौ ।
८४ छन्दसि शायजपि ।

- ८५ व्यत्ययो बहुलम् ।
८६ लिङ्चाशिष्यङ् ।
८७ कर्मवत् कर्मणा तुल्यक्रियः ।
८८ तपस्तपःकर्मकस्यैव ।
८९ न दुहञ्छुनमां यक्चिणौ ।
९० कुपिरजोः प्राचां श्यन् परस्मै-
पदं च ।
९१ धातोः ।
९२ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ।
९३ कृदतिङ् ।
९४ वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् ।
९५ कृत्याः ।
९६ तव्यत्तव्यानीयरः ।
९७ अचो यत् ।
९८ पोरदुपधात् ।
९९ शकिसहोश्च ।
१०० गदमदचरयमश्चानुपसर्गे ।
१०१ अवद्यपण्यवर्या गार्हपणितव्या-
निरोधेषु ।
१०२ वहां करणम् ।
१०३ अर्यः स्वामिवैश्ययोः ।
१०४ उपसर्या काल्या प्रजने ।
१०५ अजर्ये संगतम् ।
१०६ वदः सुपि क्यप् च ।
१०७ भुवो भावे ।
१०८ हनस्त च ।
१०९ एतिस्तुशास्वृहजुपः क्यप् ।

११० ऋदुपधाच्चाकृपिचृतेः ।

१११ ई च खनः ।

११२ भृजोऽसंज्ञायाम् ।

११३ मृजेर्विभाषा ।

११४ राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्य-
कृष्टपच्यव्यध्याः ।

११५ भिद्योद्धचौ नदे ।

११६ पुष्यसिद्धचौ नक्षत्रे ।

११७ विपूयविनीयजित्या मुञ्जक-
लकहलिषु ।

११८ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ।

११९ पदास्वैरिवाह्यापक्ष्येषु च ।

१२० विभाषा कृवृषोः ।

१२१ युग्यं च पत्रे ।

१२२ अमावस्यदन्यतरस्याम् ।

१२३ छन्दसि निष्टक्यदेवहूयप्रणी-
योन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्य-
खन्यखान्यदेवयज्यापृच्छचप्र-
तिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ता-
व्योपचाय्यपृडानि ।

१२४ ऋहलोर्ण्यत् ।

१२५ ओरावश्यके ।

१२६ आसुयुवपिरपिलपित्रपिच-
मश्च ।

१२७ आनाय्योऽनित्ये ।

१२८ प्रणाय्योऽसमतौ ।

१२९ पाय्यसानाय्यनिकाय्यधाय्या
मानहविर्निवाससामिधेनीषु ।

१३० क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ ।

१३१ अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमू-
ह्याः ।

१३२ चित्याग्निचित्ये च ।

१३३ ण्वुलृचौ ।

१३४ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणि-
न्यचः ।

१३५ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ।

१३६ आतश्चोपसर्गे ।

१३७ पात्राध्माधेद्दृशः शः ।

१३८ अनुपसर्गाह्लिम्पविन्दधारि-
पारिवेद्युदेजिचेतिसातिसा-
हिभ्यश्च ।

१३९ ददातिदधात्योर्विभाषा ।

१४० ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ।

१४१ श्याद्वचधाद्युसंरुवतीणवसा-
वहलिहश्लिषश्वसश्च ।

१४२ दुन्योरनुपसर्गे ।

१४३ विभाषा ग्रहः ।

१४४ गेहे कः ।

१४५ शिल्पिनि ण्वुन् ।

१४६ गस्थकन् ।

१४७ ण्युद् च ।

१४८ हश्च व्रीहिकालयोः ।

१४९ प्रसृत्वः समभिहारे वुन् ।

१५० आशिषि च ।

द्वितीयः पादः ।

- १ कर्मण्यण् ।
- २ ह्वावामश्च ।
- ३ आतोऽनुपसर्गे कः ।
- ४ सुपि स्थः ।
- ५ तुन्दशोकयोः परिमृजापनु-
दोः ।
- ६ प्रे दाज्ञः ।
- ७ समि ख्यः ।
- ८ गापोष्टक् ।
- ९ हरतेरनुद्यमनेऽच् ।
- १० वयसि च ।
- ११ आङि ताच्छील्ये ।
- १२ अर्हः ।
- १३ स्तम्बकर्णयो रमिजपोः ।
- १४ शमि धातोः संज्ञायाम् ।
- १५ अधिकरणे शेतेः ।
- १६ चरेष्टः ।
- १७ भिक्षासेनादायेषु च ।
- १८ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ।
- १९ पूर्वे कर्तरि ।
- २० कृजो हेतुताच्छील्यानुलोम्ये-
षु ।
- २१ दिवाविमानिशाप्रभाभास्का-
रान्ताजान्तादिबहुनान्दीकि-
लिपिलिविबलिभक्तिकर्तृचि-

त्रक्षेत्रसंख्याजङ्घावाहहर्यत्तज्ज-
नुरसःषु ।

- २२ कर्मणि भृतौ ।
- २३ न शब्दश्लोककलहगाथावैर-
चाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ।
- २४ स्तम्बशकृतोरिन् ।
- २५ हरतेर्हेतिनाथयोः पशौ ।
- २६ फलेग्रहिरात्मभरिश्च ।
- २७ छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ।
- २८ एजेः खश् ।
- २९ नासिकास्तनयोर्धमधितोः ।
- ३० नाडीमुष्टयोश्च ।
- ३१ उदि कूले रुजिवहोः ।
- ३२ वहाम्ने लिहः ।
- ३३ परिमाणे पचः ।
- ३४ मितनखे च ।
- ३५ विध्वरूपोस्तुदः ।
- ३६ असूर्यललाटयोर्दशितपोः ।
- ३७ उग्रंपश्येरमदपाणिधमाश्च ।
- ३८ प्रियवशे वदः खच् ।
- ३९ द्विषत्परयोस्तापेः ।
- ४० वाचि यमो व्रते ।
- ४१ पूः सर्वयोर्दारिसहोः ।
- ४२ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ।
- ४३ मेघर्तिसमयेषु कृजः ।
- ४४ क्षेमप्रियमद्रेऽण् च ।
- ४५ आशिते भुवः करणभावयोः ।

- ४६ संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहित-
 पिदमः ।
 ४७ गमश्च ।
 ४८ अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वान-
 त्तेषु डः ।
 ४९ आशिषि हनः ।
 ५० अपे क्लेशतमसोः ।
 ५१ कुमारशीर्षयोर्णिनिः ।
 ५२ लक्षणे जायापत्योष्टक् ।
 ५३ अमनुष्यकर्तृके च ।
 ५४ शक्तौ हस्तिक्पाटयोः ।
 ५५ पाणिघताडधौ शिल्पिनि ।
 ५६ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्रा-
 न्धप्रियेषु च्यर्थेष्वचौ कृजः
 करणे ल्युन् ।
 ५७ कर्तरि भुवः खिष्णुच्युकजौ ।
 ५८ स्पृशोऽनुदके किन् ।
 ५९ ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगुणिगञ्चु-
 युजिकुञ्जां च ।
 ६० त्यदादिषु दशोऽन्तालोचने
 कञ् च ।
 ६१ सत्सूद्विषदुहदुहयुजविदभि-
 दच्छिदजिनीराजामुपसर्गोऽपि
 किप् ।
 ६२ भजो णिवः ।
 ६३ छन्दसि सहः ।
 ६४ वहश्च ।
 ६५ कव्यपुरीषपुरीष्येषु ज्युट् ।
 ६६ हव्येऽनन्तः पादम् ।
 ६७ जनसनखनकमगमो विट् ।
 ६८ अदोऽनन्ते ।
 ६९ क्रव्ये च ।
 ७० दुहः कव्यश्च ।
 ७१ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडा-
 शो णिवन् ।
 ७२ अवे यजः ।
 ७३ विजुपे छन्दसि ।
 ७४ आतो मनिन्कनिव्वनिपश्च ।
 ७५ अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ।
 ७६ किप् च ।
 ७७ स्थः क च ।
 ७८ सुष्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ।
 ७९ कर्तर्युपमाने ।
 ८० व्रते ।
 ८१ बहुलमाभीक्ष्ये ।
 ८२ मनः ।
 ८३ आत्ममाने खश्च ।
 ८४ भूते ।
 ८५ करणे यजः ।
 ८६ कर्माणि हनः ।
 ८७ ब्रह्मभूणवृत्रेषु किप् ।
 ८८ बहुलं छन्दसि ।
 ८९ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृजः ।
 ९० सोमे सुजः ।

- ९१ अग्नौ चेः ।
 ९२ कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ।
 ९३ कर्मणीनि विक्रियः ।
 ९४ दृशेः कनिप् ।
 ९५ राजनि युधि कृजः ।
 ९६ सहे च ।
 ९७ सप्तम्यां जनेडः ।
 ९८ पञ्चम्यामजातौ ।
 ९९ उपसर्गे च संज्ञायाम् ।
 १०० अनौ कर्मणि ।
 १०१ अन्येष्वपि दृश्यते ।
 १०२ निष्ठा ।
 १०३ सुयजोर्ङ्निप् ।
 १०४ जीर्यतेरतृन् ।
 १०५ छन्दसि लिट् ।
 १०६ लिटः कानज् वा ।
 १०७ कसुश्च ।
 १०८ भाषायां सदवसश्रुवः ।
 १०९ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ।
 ११० लुङ् ।
 १११ अनद्यतने लङ् ।
 ११२ अभिज्ञावचने लट् ।
 ११३ न यदि ।
 ११४ विभाषा साकाङ्क्षे ।
 ११५ परोक्षे लिट् ।
 ११६ हशश्वतोर्लङ् च ।
 ११७ प्रश्ने चासन्नकाले ।

- ११८ लट् स्मे ।
 ११९ अपरोक्षे च ।
 १२० ननौ पृष्टप्रतिवचने ।
 १२१ नन्वोर्विभाषा ।
 १२२ पुरि लुङ् चास्मे ।
 १२३ वर्तमाने लट् ।
 १२४ लटः शतृशानचावप्रथमा-
 समानाधिकरणे ।
 १२५ संबोधने च ।
 १२६ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ।
 १२७ तौ सत् ।
 १२८ पूङ्यजोः शानन् ।
 १२९ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु
 चानश् ।
 १३० इङ्धार्योः शत्रुकच्छिणि ।
 १३१ द्विषोऽमित्रे ।
 १३२ सुजो यज्ञसंयोगे ।
 १३३ अहः प्रशंसायाम् ।
 १३४ आ केस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधु-
 कारिषु ।
 १३५ तृन् ।
 १३६ अलंकृज्जिनराकृष्प्रजनोत्पचो-
 त्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवधु-
 सहचर इष्णुच् ।
 १३७ णेऽछन्दसि ।
 १३८ भुवश्च ।
 १३९ ग्लजिस्थश्च गस्तुः ।

- १४० त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः कनुः ।
 १४१ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ।
 १४२ संपृचानुरुधाङ्यमाङ्यसप-
 रिस्सृसंसृजपरिदेविसंज्वरप-
 रिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदह-
 परिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजा-
 क्रीडविविचत्यजरजभजाति-
 चरापचरामुपाभ्याहनश्च ।
 १४३ वौ कषलसक्तथस्त्रम्भः ।
 १४४ अपे च लषः ।
 १४५ प्रे लपसृद्रुमथवदवसः ।
 १४६ निन्दहिंसक्लिशखादविनाश-
 परिक्षिपपरिरटपरिवादिव्या-
 भाषासूयो वुञ् ।
 १४७ देविकुशोश्चोपसर्गे ।
 १४८ चलनशब्दार्थादिकर्मकाद् युच् ।
 १४९ अनुदात्तेतश्च हलादेः ।
 १५० जुचङ्म्यदन्द्म्यसृगृधि-
 ज्वलशुचलषपतपदः ।
 १५१ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ।
 १५२ न यः ।
 १५३ सूददीपदीक्षश्च ।
 १५४ लषपतपदस्थाभूवृषहनकम-
 गमशृभ्य उकञ् ।
 १५५ जलपभिक्षकुट्टलुण्टवृङः पा-
 कन् ।

- १५६ प्रजोरितिः ।
 १५७ जिहक्षिविथ्रीण्वमाव्यथाभ्य-
 मपरिभूप्रसूभ्यश्च ।
 १५८ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रात-
 न्द्राश्चद्वाभ्य आलुच् ।
 १५९ दाघेद्सिशदसदो रुः ।
 १६० सृघस्यदः कमरच् ।
 १६१ भञ्जभासमिदो घुरच् ।
 १६२ विदिमिदिच्छिदेः कुरच् ।
 १६३ इणनशजिसर्तिभ्यः करप् ।
 १६४ गत्वरश्च ।
 १६५ जागुरुकः ।
 १६६ यजजपदशां यङः ।
 १६७ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिस-
 दीपो रुः ।
 १६८ सनाशंसभिक्ष उः ।
 १६९ विन्दुरिच्छुः ।
 १७० कयाच्छन्दसि ।
 १७१ आहगमहनजनः किकिनौ
 लिट् च ।
 १७२ स्वपितृषोर्नेजिङ् ।
 १७३ शृवन्द्योरा रुः ।
 १७४ भियः कुक्लुकनौ ।
 १७५ स्त्रेशभासपिसकसो वरच् ।
 १७६ यश्च यङः ।
 १७७ भ्राजभासधुर्विदूयुतोर्जिपृजु-
 ग्रावस्तुवः किप् ।

- १७८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।
 १७९ भुवः संज्ञान्तरयोः ।
 १८० विप्रसंभ्यो ङ्संज्ञायाम् ।
 १८१ धः कर्मणि घ्नन् ।
 १८२ दास्त्रीशसयुयुजस्तुतुदसिसि-
 चमिहपतदशनहः करणे ।
 १८३ हलसूकरयोः पुवः ।
 १८४ अर्तिलूधूसूखनसहचर इवः ।
 १८५ पुवः संज्ञायाम् ।
 १८६ कर्तरि चर्षिदेवतयोः ।
 १८७ जीतः क्तः ।
 १८८ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ।

तृतीयः पादः ।

- १ उणादयो बहुलम् ।
 २ भूतेऽपि दृश्यन्ते ।
 ३ भविष्यति गम्यादयः ।
 ४ यावत्पुरानिपातयोर्लट् ।
 ५ विभाषा कदाकह्योः ।
 ६ किवृत्ते लिप्सायाम् ।
 ७ लिप्स्यमानसिद्धौ च ।
 ८ लोट्थलक्षणे च ।
 ९ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।
 १० तुमुन्णबुलौ क्रियायां क्रियार्था-
 याम् ।
 ११ भाववचनाश्च ।
 १२ अण् कर्मणि च ।

- १३ लट् शेषे च ।
 १४ लट् सद् वा ।
 १५ अनद्यतने लुट् ।
 १६ पदरुजविशस्पृशो घञ् ।
 १७ सु स्थिरे ।
 १८ भावे ।
 १९ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ।
 २० परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ।
 २१ इङश्च ।
 २२ उपसर्गे रुवः ।
 २३ समि युट्पुवः ।
 २४ त्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ।
 २५ वौ श्रुश्रुवः ।
 २६ अवोदोर्नियः ।
 २७ प्रे ङुस्तुष्टुवः ।
 २८ निरभ्योः पूत्वोः ।
 २९ उन्न्योर्ग्रः ।
 ३० कृ धान्ये ।
 ३१ यज्ञे समि स्तुवः ।
 ३२ प्रे स्त्रोऽयज्ञे ।
 ३३ प्रथने वावशब्दे ।
 ३४ छन्दोनाम्नि च ।
 ३५ उदि ग्रहः ।
 ३६ समि मुष्टौ ।
 ३७ परिन्योर्नीणोर्धूताभ्रेषयोः ।
 ३८ परावन्नुपात्यय इणः ।
 ३९ द्युपयोः शेतेः पर्याये ।

- ४० हस्तादाने चेरस्तेये ।
 ४१ निवासचितिशरीरोपसमा-
 धानेष्वामादेश्च कः ।
 ४२ संघे चानौत्तराधये ।
 ४३ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् ।
 ४४ अभिविधौ भाव इनुण् ।
 ४५ आक्रोशेऽवन्योऽग्रहः ।
 ४६ प्रे लिप्सायाम् ।
 ४७ परौ यज्ञे ।
 ४८ नौ वृ धान्ये ।
 ४९ उदि श्रयतियौतिपूद्वः ।
 ५० विभाषाङ्गि रुल्लुवोः ।
 ५१ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ।
 ५२ प्रे वणिजाम् ।
 ५३ रश्मौ च ।
 ५४ वृणोतेराच्छादने ।
 ५५ परौ भुवोऽवज्ञाने ।
 ५६ एरच् ।
 ५७ ऋदोरप् ।
 ५८ ग्रहवृद्धनिश्चिगमेश्च ।
 ५९ उपसर्गोऽदः ।
 ६० नौ ण च ।
 ६१ व्यधजपोरनुपसर्गे ।
 ६२ स्वनहसोर्वा ।
 ६३ यमः समुपनिविषु च ।
 ६४ नौ गदनदपठस्वनः ।
 ६५ कणो वीणायां च ।
 ६६ नित्यं पणः परिमाणे ।
 ६७ मदोऽनुपसर्गे ।
 ६८ प्रमदसंमदौ हर्षे ।
 ६९ समुदोरजः पशुषु ।
 ७० अक्षेषु ग्लहः ।
 ७१ प्रजने सर्तेः ।
 ७२ हः संप्रसारणं च न्यभ्युप-
 विषु ।
 ७३ आङ्गि युद्धे ।
 ७४ निपानमाहावः ।
 ७५ भावेऽनुपसर्गस्य ।
 ७६ हनश्च तधः ।
 ७७ मूर्तौ घनः ।
 ७८ अन्तर्घनो देशे ।
 ७९ अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च ।
 ८० उद्घनोऽत्याधानम् ।
 ८१ अपघनोऽङ्गम् ।
 ८२ करणेऽयोविद्वेषु ।
 ८३ स्तम्बे क च ।
 ८४ परौ घः ।
 ८५ उपघ्न आश्रये ।
 ८६ संघोद्घ्नौ गणप्रशंसयोः ।
 ८७ निधो निमित्तम् ।
 ८८ द्वितः क्तिवः ।
 ८९ द्वितोऽथुच् ।
 ९० यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो
 नङ् ।

- ९१ स्वपो नन् ।
 ९२ उपसर्गे घोः किः ।
 ९३ कर्मण्यधिकरणे च ।
 ९४ स्त्रियां क्तिन् ।
 ९५ स्थागापापचो भावे ।
 ९६ मन्त्रे वृषेषपचमनविद्भूवी-
 रा उदात्तः ।
 ९७ ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकी-
 र्तयश्च ।
 ९८ व्रजयजोर्भावे क्यप् ।
 ९९ संज्ञायां समजनपदनिपतम-
 नविदपुञ्शीङ्भृजिणः ।
 १०० कृजः श च ।
 १०१ इच्छा ।
 १०२ अ प्रत्ययात् ।
 १०३ गुरोश्च हलः ।
 १०४ विद्भिदादिभ्योऽङ् ।
 १०५ चिन्तिपूजिकथिकुम्बि-
 चर्चश्च ।
 १०६ आतश्चोपसर्गे ।
 १०७ ण्यासश्चन्थो युच् ।
 १०८ रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् ।
 १०९ संज्ञायाम् ।
 ११० विभाषाऽख्यानपरिप्रश्नयो-
 रिञ् च ।
 १११ पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच् ।
 ११२ आक्रोशे नञ्यनिः ।
 ११३ कृत्यल्युटो बहुलम् ।
 ११४ नपुंसके भावे क्तः ।

- ११५ ल्युट् च ।
 ११६ कर्मणि च येन संस्पर्शात् कर्तुः
 शरीरसुखम् ।
 ११७ करणाधिकरणयोश्च ।
 ११८ पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण ।
 ११९ गोचरसंचरवहव्रजव्यजापण-
 निगमाश्च ।
 १२० अवे तृस्त्रोर्घञ् ।
 १२१ हलश्च ।
 १२२ अध्यायन्यायोद्यावसंहा-
 राश्च ।
 १२३ उदङ्गोऽनुदके ।
 १२४ जालमानायः ।
 १२५ खनो घ च ।
 १२६ ईषद्दुःसुषु कृच्छाकृच्छार्थेषु
 खल् ।
 १२७ कर्तृकर्मणोश्च भूकृजोः ।
 १२८ आतो युच् ।
 १२९ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ।
 १३० अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।
 १३१ वर्तमानसमीप्ये वर्तमानवद्
 वा ।
 १३२ आशंसायां भूतवच् ।
 १३३ क्षिप्रवचने लट् ।
 १३४ आशंसावचने लिङ् ।
 १३५ नाऽनद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसा-
 मीप्ययोः ।

- १३६ भविष्यति मर्यादावचनेऽवर-
स्मिन् ।
१३७ कालविभागे चाऽनहोरात्रा-
णाम् ।
१३८ परस्मिन् विभाषा ।
१३९ लिङ्निमित्ते लङ् क्रियाति-
पत्तौ ।
१४० भूते च ।
१४१ वोताप्योः ।
१४२ गर्हायां लङ्पिजात्वोः ।
१४३ विभाषा कथमि लिङ् च ।
१४४ किंवृत्ते लिङ्लोटौ ।
१४५ अनवकल्प्यमर्षयोरकिंवृत्ते-
ऽपि ।
१४६ किंकिलास्त्यर्थेषु लट् ।
१४७ जातुयदोर्लिङ् ।
१४८ यच्चयत्रयोः ।
१४९ गर्हायां च ।
१५० चित्रीकरणे च ।
१५१ शेषे लङ् यदौ ।
१५२ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ।
१५३ कामप्रवेदनेऽकञ्चिति ।
१५४ संभावनेऽलमिति चेत् सिद्धा-
प्रयोगे ।
१५५ विभाषा धातौ संभावनवच-
नेऽयदि ।
१५६ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ।
१५७ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ।
१५८ समानकतृकेषु तुमुन् ।

- १५९ लिङ् च ।
१६० इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्त-
माने ।
१६१ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट-
संप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ।
१६२ लोट् च ।
१६३ प्रेषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्या-
श्च ।
१६४ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ।
१६५ स्मे लोट् ।
१६६ अधीष्टे च ।
१६७ कालसमयवेलासु तुमुन् ।
१६८ लिङ् यदि ।
१६९ अहं कृत्यतृचश्च ।
१७० आवश्यकधाधमर्ण्ययोर्णिनिः ।
१७१ कृत्याश्च ।
१७२ शकि लिङ् च ।
१७३ आशिषि लिङ्लोटौ ।
१७४ क्तिञ्क्तौ च संज्ञायाम् ।
१७५ माङि लुङ् ।
१७६ स्मोत्तरे लङ् च ।

चतुर्थः पादः ।

- १ धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ।
२ क्रियासमभिहारे लोट् लोटो
हिस्वौ वा च तद्ध्वमोः ।
३ समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ।
४ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ।

- ५ समुच्चये सामान्यवचनस्य ।
 ६ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ।
 ७ लिङर्थे लेट् ।
 ८ उपसंवादाशङ्क्योश्च ।
 ९ तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसे-
 नध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैश-
 ध्यैन्तवैतवेङुतवेनः ।
 १० प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ।
 ११ इशे विष्ये च ।
 १२ शक्ति णमुल्कमुलौ ।
 १३ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ।
 १४ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ।
 १५ अवचक्षे च ।
 १६ भावलक्षणे स्थेणकृञ्चदिचरि-
 हुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ।
 १७ सृपितृदोः कसुन् ।
 १८ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां
 क्वा ।
 १९ उदीचां माङो व्यतीहारे ।
 २० परावरयोगे च ।
 २१ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ।
 २२ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ।
 २३ न यद्यनाकाङ्क्षे ।
 २४ विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ।
 २५ कर्मण्याक्रोशे कृजः खमुञ् ।
 २६ स्वादुमि णमुल् ।

- २७ अन्यथैवंकथमित्यसु सिद्धाप्र-
 योगश्चेत् ।
 २८ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ।
 २९ कर्मणि इतिविदोः साकल्ये ।
 ३० यावति विन्दजीवोः ।
 ३१ चर्मोदरयोः पूरेः ।
 ३२ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्य-
 तरस्याम् ।
 ३३ चेले क्लोपेः ।
 ३४ निमूलसमूलयोः कषः ।
 ३५ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ।
 ३६ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ।
 ३७ करणे हनः ।
 ३८ स्नेहने पिषः ।
 ३९ हस्ते वर्तिग्रहोः ।
 ४० स्वे पुषः ।
 ४१ अधिकरणे बन्धः ।
 ४२ संज्ञायाम् ।
 ४३ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ।
 ४४ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ।
 ४५ उपमाने कर्मणि च ।
 ४६ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ।
 ४७ उपदंशस्तृतीयायाम् ।
 ४८ हिंसार्थानां च समानकर्मका-
 णाम् ।
 ४९ सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः ।
 ५० समासत्तौ ।

- ५१ प्रमाणे च ।
 ५२ अपादाने परीप्सायाम् ।
 ५३ द्वितीयायां च ।
 ५४ स्वाङ्गेऽध्रुवे ।
 ५५ परिक्लिश्यमाने च ।
 ५६ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्य-
 मानासेव्यमानयोः ।
 ५७ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे का-
 लेषु ।
 ५८ नास्न्यादिशिग्रहोः ।
 ५९ अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृ-
 अः क्वाणमुलौ ।
 ६० तिर्यच्यपवर्गे ।
 ६१ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ।
 ६२ नाधार्थप्रत्यये च्यर्थे ।
 ६३ तूष्णीमि भुवः ।
 ६४ अन्वच्यानुलोम्ये ।
 ६५ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक-
 मसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ।
 ६६ पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ।
 ६७ कर्तरि कृत् ।
 ६८ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय-
 जन्याग्लाव्यापात्या वा ।
 ६९ लः कर्मणि च भावे चाऽकर्म-
 केभ्यः ।
 ७० तयोरेव कृत्यक्तखलार्थाः ।
 ७१ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ।
 ७२ गत्यर्थकर्मकश्चिपशीङ्स्थास-
 वसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च ।
 ७३ दाशगोघ्नौ संप्रदाने ।
 ७४ भीमादयोऽपादाने ।
 ७५ ताभ्यामन्यत्रोणादयः ।
 ७६ कोऽधिकरणे च ध्रौव्यगति-
 प्रत्यवसानार्थेभ्यः ।
 ७७ लस्य ।
 ७८ तितस्त्रिसिप्यस्थमिब्वस्मस्ता-
 तांश्चथासाथां ध्वमिङ्गहिम-
 हिङ् ।
 ७९ टित आत्मनेपदानां टेरे ।
 ८० थासः से ।
 ८१ लिटस्तद्वयोरेशिशेच् ।
 ८२ परस्मैपदानां णलतुसुखलथु-
 सणल्वमाः ।
 ८३ विदो लटो वा ।
 ८४ ब्रुवः पश्चानामादित आहो
 ब्रुवः ।
 ८५ लोटो लङ्बत् ।
 ८६ एरुः ।
 ८७ सेह्यपिच्च ।
 ८८ वा छन्दसि ।
 ८९ मेनिः ।
 ९० आमेतः ।
 ९१ सवाभ्यां वामौ ।
 ९२ आङुत्तमस्य पिच्च ।

- ९३ एत ऐ ।
 ९४ लेटोऽडाटौ ।
 ९५ आत ऐ ।
 ९६ वैतोऽन्यत्र ।
 ९७ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ।
 ९८ स उत्तमस्य ।
 ९९ नित्यं डितः ।
 १०० इतश्च ।
 १०१ तस्यस्थमिपां तांतंतामः ।
 १०२ लिङः सीयुट् ।
 १०३ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो
 ङिच्च ।
 १०४ किदाशिषि ।

- १०५ अस्य रन् ।
 १०६ इटोऽत् ।
 १०७ सुट् तिथोः ।
 १०८ झेजुस् ।
 १०९ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ।
 ११० आतः ।
 १११ लङः शाकटायनस्यैव ।
 ११२ द्विषश्च ।
 ११३ तिङ्शित् सार्वधातुकम् ।
 ११४ आर्धधातुकं शेषः ।
 ११५ लिट् च ।
 ११६ लिङाशिषि ।
 ११७ छन्दस्युभयथा ।

चतुर्थोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ ड्याप्प्रातिपदिकात् ।
 २ स्त्रीजसमौट्ठष्ठाभ्याम्भिस्ङे-
 भ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङ-
 सोसास्ङयोस्सुप् ।
 ३ स्त्रियाम् ।
 ४ अजाद्यतष्टाप् ।
 ५ ऋन्नेभ्यो ङीप् ।
 ६ उगितश्च ।
 ७ वनो र च ।

८ पादोऽन्यतरस्याम् ।

- ९ टावृचि ।
 १० न षट्स्वस्रादिभ्यः ।
 ११ मनः ।
 १२ अनो बहुव्रीहेः ।
 १३ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ।
 १४ अनुपसर्जनात् ।
 १५ टिट्ठानञ्द्वयसज्जघ्नाञ्चत्त-
 यण्ठक्ठक्कक्करपः ।
 १६ यञश्च ।

- १७ प्राचां ष्फस्तद्धितः ।
 १८ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ।
 १९ कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ।
 २० वयसि प्रथमे ।
 २१ द्विगोः ।
 २२ अपरिमाणविस्ताचितकम्ब-
 ल्येभ्यो न तद्धितलुकि ।
 २३ काण्डान्तात् क्षेत्रे ।
 २४ पुरुषात् प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ।
 २५ बहुव्रीहेरुधसो ङीप् ।
 २६ संख्याव्ययादेर्ङीप् ।
 २७ दामहायनान्ताच्च ।
 २८ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ।
 २९ नित्यं संज्ञाछन्दसोः ।
 ३० केवलमामकभागधेयपापापर-
 समानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ।
 ३१ रात्रेश्चाजसौ ।
 ३२ अन्तर्धत्पतिवतोर्नुक् ।
 ३३ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ।
 ३४ विभाषा सपूर्वस्य ।
 ३५ नित्यं सपत्न्यादिषु ।
 ३६ पूतक्रतोरै च ।
 ३७ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदा-
 नामुदात्तः ।
 ३८ मनोरौ वा ।
 ३९ वर्णानुदात्तात्तोपधात्तो नः ।
 ४० अन्यतो ङीप् ।
 ४१ षिद्रौरादिभ्यश्च ।
 ४२ जानपदकुण्डगोणस्थलमाज-
 नागकालनीलकुशकामुककव-
 राद् वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्वा-
 णास्थौल्यवर्णानाच्छादनायो-
 विकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ।
 ४३ शोणात् प्राचाम् ।
 ४४ वोतो गुणवचनात् ।
 ४५ बह्नादिभ्यश्च ।
 ४६ नित्यं छन्दसि ।
 ४७ भुवश्च ।
 ४८ पुंयोगादाख्यायाम् ।
 ४९ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहि-
 मारण्ययवयवनमातुलाचार्या-
 णामानुक् ।
 ५० क्रीतात् करणपूर्वात् ।
 ५१ कादल्पाख्यायाम् ।
 ५२ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ।
 ५३ अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा ।
 ५४ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगो-
 पधात् ।
 ५५ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्ण-
 शृङ्गाच्च ।
 ५६ न क्रोडादिवहचः ।
 ५७ सहनज्विद्यमानपूर्वाच्च ।
 ५८ नखमुखात् संज्ञायाम् ।
 ५९ दीर्घजिह्वी च छन्दसि ।

- ६० दिक्पूर्वपदान् डीप् ।
 ६१ वाहः ।
 ६२ सख्यशिथ्वीति भाषायाम् ।
 ६३ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ।
 ६४ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवा-
 लोत्तरपदाच्च ।
 ६५ इतो मनुष्यजातेः ।
 ६६ ऊडुतः ।
 ६७ बाह्वन्तात् संज्ञायाम् ।
 ६८ पङ्गोश्च ।
 ६९ ऊरुत्तरपदादौपम्ये ।
 ७० संहितशफलक्षणवामादेश्च ।
 ७१ कटुकमण्डलवोऽश्नुन्दसि ।
 ७२ संज्ञायाम् ।
 ७३ शार्ङ्गरेवाद्यञो डीन् ।
 ७४ यङश्चाप् ।
 ७५ आवट्याच्च ।
 ७६ तद्धिताः ।
 ७७ यूनस्तिः ।
 ७८ अणिञोरनार्पयोगुंरूपोत्तम-
 योः ष्यङ् गोत्रे ।
 ७९ गोत्रावयवात् ।
 ८० क्रौड्यादिभ्यश्च ।
 ८१ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रि-
 काण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ।
 ८२ समर्थानां प्रथमाद् वा ।
 ८३ प्राग् दीव्यतोऽण् ।

- ८४ अश्वपत्यादिभ्यश्च ।
 ८५ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदा-
 ण्ययः ।
 ८६ उत्सादिभ्योऽञ् ।
 ८७ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्संज्ञौ भव-
 नात् ।
 ८८ द्विगोर्लुगनपत्ये ।
 ८९ गोत्रेऽलुगचि ।
 ९० यूनि लुक् ।
 ९१ फक्किञोरन्यतरस्याम् ।
 ९२ तस्याऽपत्यम् ।
 ९३ एको गोत्रे ।
 ९४ गोत्राद् यून्यस्त्रियाम् ।
 ९५ अत इञ् ।
 ९६ बाह्वादिभ्यश्च ।
 ९७ सुधातुरकङ् च ।
 ९८ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ् ।
 ९९ नडादिभ्यः फक् ।
 १०० हरितादिभ्योऽञः ।
 १०१ यजिञोश्च ।
 १०२ शरद्वच्छुनकदर्भाद् भृगु-
 वत्साग्रायणेषु ।
 १०३ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतर-
 स्याम् ।
 १०४ अनुष्यानन्तर्ये विदादिभ्यो-
 ऽञ् ।
 १०५ गर्गादिभ्यो यञ् ।
 १०६ मधुबभ्रवोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ।
 १०७ कपिवोधादाङ्गिरसे ।

- १०८ वतण्डाच्च ।
 १०९ लुक् स्त्रियाम् ।
 ११० अश्वादिभ्यः फञ् ।
 १११ भर्गात् त्रैगर्ते ।
 ११२ शिवादिभ्योऽण् ।
 ११३ अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्त-
 त्नामिकाभ्यः ।
 ११४ ऋण्यन्धकवृणिकुरुभ्यश्च ।
 ११५ मातुरुत् संख्यासंभद्रपूर्वायाः ।
 ११६ कन्यायाः कनीन च ।
 ११७ विकर्णशुङ्गच्छगलाद् वत्स-
 भरद्वाजात्रिषु ।
 ११८ पीलाया वा ।
 ११९ ढक् च मण्डूकात् ।
 १२० स्त्रीभ्यो ढक् ।
 १२१ द्व्यचः ।
 १२२ इतश्चानिजः ।
 १२३ शुभ्रादिभ्यश्च ।
 १२४ विकर्णकुपीतकात् काश्यपे ।
 १२५ भ्रुवो वुक् च ।
 १२६ कल्याण्यादीनामिन्ङ् ।
 १२७ कुलटाया वा ।
 १२८ चटकाया पेरक् ।
 १२९ गोधाया ढक् ।
 १३० आरगुदीचाम् ।
 १३१ शुद्राभ्यो वा ।
 १३२ पितृष्वसुश्छण् ।
 १३३ ढकि लोपः ।
 १३४ मातृष्वसुश्च ।
 १३५ चतुष्पादभ्यो ढञ् ।
 १३६ गृष्ट्यादिभ्यश्च ।
 १३७ राजश्वशुराद् यत् ।
 १३८ क्षत्राद् घः ।
 १३९ कुलात् खः ।
 १४० अपूर्वपदादन्यतरस्यां यङ्-
 कर्जौ ।
 १४१ महाकुलादञ्खर्जौ ।
 १४२ दुष्कुलाङ्ढक् ।
 १४३ खसुश्छः ।
 १४४ भ्रातुर्व्यञ्च ।
 १४५ व्यन्सपत्ने ।
 १४६ रेवत्यादिभ्यष्टक् ।
 १४७ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ।
 १४८ वृद्धाढक् सौवीरेषु बहुलम् ।
 १४९ फेश्छ च ।
 १५० फाण्टाहृतिमिमताभ्यां ण-
 फिजौ ।
 १५१ कुर्वादिभ्यो ण्यः ।
 १५२ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ।
 १५३ उदीचामिञ् ।
 १५४ तिकादिभ्यः फिज् ।
 १५५ कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ।
 १५६ अणो द्व्यचः ।
 १५७ उदीचां वृद्धाद्गोत्रात् ।

- १५८ वाकिनादीनां कुक् च ।
 १५९ पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ।
 १६० प्राचामबृद्धात् फिन् बहुलम् ।
 १६१ मनोज्ञावज्यतौ षुक् च ।
 १६२ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ।
 १६३ जीवति तु वंश्ये युवा ।
 १६४ भ्रातरि च ज्यायसि ।
 १६५ वाऽन्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे
 जीवति ।
 १६६ जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् ।
 १६७ साल्वेयगान्धारिभ्यां च ।
 १६८ द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसा-
 दण् ।
 १६९ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ज्यङ् ।
 १७० कुरुनादिभ्यो ण्यः ।
 १७१ साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटा-
 श्मकादिञ् ।
 १७२ ते तद्राजाः ।
 १७३ कम्बोजाल्लुक् ।
 १७४ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ।
 १७५ अतश्च ।
 १७६ न प्राच्यभर्गादियौघेयादि-
 भ्यः ।

द्वितीयः पादः ।

- १ तेन रक्तं रागात् ।
 २ लाक्षारोचनाङ्कः ।

- ३ नक्षत्रेण युक्तः कालः ।
 ४ लुवविशेषे ।
 ५ संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् ।
 ६ द्वन्द्वाच्छः ।
 ७ दृष्टं साम ।
 ८ वामदेवाङ्गुचङ्गौ ।
 ९ परिवृतो रथः ।
 १० पाण्डुकम्बलादिनिः ।
 ११ द्वैपवैयाघ्रादञ् ।
 १२ कौमारापूर्ववचने ।
 १३ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ।
 १४ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ।
 १५ संस्कृतं भक्षाः ।
 १६ शूलोखाद् यत् ।
 १७ दध्मष्टक् ।
 १८ उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ।
 १९ क्षीराङ्गु ।
 २० साऽस्मिन् पौर्णमासीति ।
 २१ आग्रहायण्यश्वत्थाङ्कः ।
 २२ विभाषा फाल्गुनीश्रवणाका-
 र्तिकीचैत्रीभ्यः ।
 २३ साऽस्य देवता ।
 २४ कस्येत् ।
 २५ शुक्राद् घन् ।
 २६ अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः ।

- २७ छ च ।
 २८ महेन्द्राद् घाणौ च ।
 २९ सोमाद्वृण् ।
 ३० वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ।
 ३१ द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत-
 दग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधा-
 च्छ च ।
 ३२ अग्नेर्दक् ।
 ३३ कालेभ्यो भववत् ।
 ३४ महाराजप्रोष्ठपदाद्वृञ् ।
 ३५ पितृव्यमातुलमातामहपिता-
 महाः ।
 ३६ तस्य समूहः ।
 ३७ भिक्षादिभ्योऽण् ।
 ३८ गोत्रोक्षोष्टोरभ्रराजराजन्यरा-
 जपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ् ।
 ३९ केदाराद् यञ् च ।
 ४० ठञ् क्वचिन्श्च ।
 ४१ ब्राह्मणमाणववाडवाद् यन् ।
 ४२ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ।
 ४३ अनुदात्तादेरञ् ।
 ४४ खण्डिकादिभ्यश्च ।
 ४५ चरणेभ्यो धर्मवत् ।
 ४६ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् ।
 ४७ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतर-
 स्याम् ।
 ४८ पाशादिभ्यो यः ।

- ४९ खलगोरथात् ।
 ५० इतिवक्तव्यचश्च ।
 ५१ विषयो देशे ।
 ५२ राजन्यादिभ्यो वुञ् ।
 ५३ भौरिक्क्याद्येषुकार्यादिभ्यो
 विधलमकलौ ।
 ५४ सोऽस्याऽदिरिति च्छन्दसः
 प्रगाथेषु ।
 ५५ संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः ।
 ५६ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां
 णः ।
 ५७ घञः साऽस्यां क्रियेति ज्ञः ।
 ५८ तदधीते तद्वेद ।
 ५९ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताद्वृक् ।
 ६० क्रमादिभ्यो वुन् ।
 ६१ अनुब्राह्मणादिनिः ।
 ६२ वसन्तादिभ्यष्टक् ।
 ६३ प्रोक्ताल्लुक् ।
 ६४ सूत्राच्च कोपधात् ।
 ६५ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विष-
 याणि ।
 ६६ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि ।
 ६७ तेन निर्वृत्तम् ।
 ६८ तस्य निवासः ।
 ६९ अदूरभवश्च ।
 ७० ओरञ् ।
 ७१ मतोश्च बह्वजङ्गात् ।

- ७२ बह्वचः कूपेषु ।
 ७३ उदक् च विपाशः ।
 ७४ संकलादिभ्यश्च ।
 ७५ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु ।
 ७६ सुवास्वादिभ्योऽण् ।
 ७७ रोणी ।
 ७८ कोपधाच्च ।
 ७९ वुञ्छणकठजिलसेनिरढञ्य-
 यफक्किजिञ्यककउकोऽरी-
 हणकुशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृ-
 णप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलप-
 क्षकर्णसुतंगमप्रगदिन्वराहकु-
 मुदादिभ्यः ।
 ८० जनपदे लुप् ।
 ८१ वरणादिभ्यश्च ।
 ८२ शर्कराया वा ।
 ८३ ठक्छौ च ।
 ८४ नद्यां मतुप् ।
 ८५ मध्वादिभ्यश्च ।
 ८६ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्रुतुप् ।
 ८७ नडशादाड्डुलच् ।
 ८८ शिखाया बलच् ।
 ८९ उत्करादिभ्यश्छः ।
 ९० नडादीनां कुक् च ।
 ९१ शेषे ।
 ९२ राष्ट्रावारपाराद् घखौ ।
 ९३ ग्रामाद् यखञौ ।

- ९४ कज्यादिभ्यो ढकञ् ।
 ९५ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलं-
 कारेषु ।
 ९६ नद्यादिभ्यो ढक् ।
 ९७ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ।
 ९८ कापिद्याः फक् ।
 ९९ रङ्गोरमनुष्येऽण् च ।
 १०० द्युप्रागपागुदकप्रतीचो यत् ।
 १०१ कन्थायाष्टक् ।
 १०२ वर्णौ वुक् ।
 १०३ अव्ययात् त्यप् ।
 १०४ ऐवमोहः श्वसोऽन्यतरस्याम् ।
 १०५ तीररूप्योत्तरपदादञ्जौ ।
 १०६ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां जः ।
 १०७ मदेभ्योऽञ् ।
 १०८ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तो-
 दात्तात् ।
 १०९ प्रत्योत्तरपदपलद्यादिकोप-
 धादण् ।
 ११० कण्वादिभ्यो गोत्रे ।
 १११ इञश्च ।
 ११२ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु ।
 ११३ वृद्धाच्छः ।
 ११४ भवतष्टक्छसौ ।
 ११५ काश्यादिभ्यष्टज्जिठौ ।
 ११६ वाहीकग्रामेभ्यश्च ।
 ११७ विभाषोशीनरेषु ।

- ११८ ओर्देशे ठञ् ।
 ११९ वृद्धात् प्राचाम् ।
 १२० धन्वयोपधाद् वुञ् ।
 १२१ प्रस्थपुरवहान्ताच्च ।
 १२२ रोपधेतोः प्राचाम् ।
 १२३ जनपदतद्वध्योश्च ।
 १२४ अवृद्धादपि बहुवचनविष-
 यात् ।
 १२५ कच्छाग्निवक्रवर्तोत्तरपदात् ।
 १२६ धूमादिभ्यश्च ।
 १२७ नगरात् कुत्सनप्रावीण्ययोः ।
 १२८ अरण्यान्मनुष्ये ।
 १२९ विभाषा कुरुयुगंधराभ्याम् ।
 १३० मद्रवृज्योः कन् ।
 १३१ कोपधादण् ।
 १३२ कच्छादिभ्यश्च ।
 १३३ मनुष्यतत्स्थयोर्बुञ् ।
 १३४ अपदातौ साल्वात् ।
 १३५ गोयवाग्वोश्च ।
 १३६ गर्तोत्तरपदाच्छः ।
 १३७ गहादिभ्यश्च ।
 १३८ प्राचां कटादेः ।
 १३९ राज्ञः क च ।
 १४० वृद्धादकेकान्तखोपधात् ।
 १४१ कन्थापलदनगरग्रामहृदोत्तर-
 पदात् ।
 १४२ पर्वताच्च ।

- १४३ विभाषा मनुष्ये ।
 १४४ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे ।

तृतीयः पादः ।

- १ युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च ।
 २ तस्मिन्नणि च युष्माका-
 स्माकौ ।
 ३ तवकममकावेकवचने ।
 ४ अर्धाद् यत् ।
 ५ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ।
 ६ दिक्पूर्वपदाद्वञ् च ।
 ७ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ ।
 ८ मध्यान्मः ।
 ९ अ सांप्रतिके ।
 १० द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ।
 ११ कालाद्वञ् ।
 १२ श्राद्धे शरदः ।
 १३ विभाषा रोगातपयोः ।
 १४ निशाप्रदोषाभ्यां च ।
 १५ श्वसस्तुद् च ।
 १६ संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् ।
 १७ प्रावृष ण्यः ।
 १८ वर्षाभ्यष्टक् ।
 १९ छन्दसि ठञ् ।
 २० वसन्ताच्च ।
 २१ हेमन्ताच्च ।
 २२ सर्वत्राऽण् च तलोपश्च ।

- २३ सायंचिरंप्राह्मेप्रगेऽव्ययेभ्य-
ष्टुष्टुलौ तुच् च ।
२४ विभाषा पूर्वह्लापराह्लाभ्याम् ।
२५ तत्र जातः ।
२६ प्रावृषष्टप् ।
२७ संज्ञायां शरदो वुञ् ।
२८ पूर्वाह्लापराह्लाद्राभूलप्रदोषाव-
स्कराद् वुन् ।
२९ पथः पन्थ च ।
३० अमावास्याया वा ।
३१ अ च ।
३२ सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ।
३३ अणजौ च ।
३४ श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वाति-
तिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषा-
ढाबहुलालुक् ।
३५ स्थानान्तगोशालखरशालाच्च ।
३६ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शत-
भिषजो वा ।
३७ नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ।
३८ कृतलब्धक्रीतकुशलाः ।
३९ प्रायभवः ।
४० उपजानूपकर्णोपनीवेष्टक् ।
४१ संभूते ।
४२ कोशाङ् ढञ् ।
४३ कालात् साधुपुण्यत्पच्यमानेषु ।

- ४४ उप्ते च ।
४५ आश्वयुज्या वुञ् ।
४६ ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् ।
४७ देयमृणे ।
४८ कलाप्यश्वत्थयववुसाद् वुन् ।
४९ ग्रीष्मावरसमाद् वुञ् ।
५० संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ।
५१ व्याहरति मृगः ।
५२ तदस्य सोढम् ।
५३ तत्र भवः ।
५४ दिगादिभ्यो यत् ।
५५ शरीरावयवाच्च ।
५६ इतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहे-
र्ढञ् ।
५७ ग्रीवोभ्योऽण् च ।
५८ गम्भीराज्यः ।
५९ अव्ययीभावाच्च ।
६० अन्तःपूर्वपदाङ्ठञ् ।
६१ ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ।
६२ जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः ।
६३ वर्गान्ताच्च ।
६४ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् ।
६५ कर्णललाटात् कनलंकारे ।
६६ तस्य व्याख्यान इति च व्या-
ख्यातव्यनाम्नः ।
६७ बह्वचोऽन्तोदात्ताङ्ठञ् ।

- ६८ क्रतुयज्ञेभ्यश्च ।
 ६९ अध्यायेष्वेवर्षः ।
 ७० पौरोडाशपुरोडाशात् षुन् ।
 ७१ छन्दसौ यदणौ ।
 ७२ द्व्यजृद्धाह्वणर्कप्रथमाध्वरपुर-
 श्वरणनामाख्यातादृक् ।
 ७३ अणृगयनादिभ्यः ।
 ७४ तत आगतः ।
 ७५ ठगायस्थानेभ्यः ।
 ७६ शुण्डिकादिभ्योऽण् ।
 ७७ विधायोनिसेवन्धेभ्यो वुञ् ।
 ७८ ऋतष्टञ् ।
 ७९ पितुर्यञ्च ।
 ८० गोत्रादङ्कुवत् ।
 ८१ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां
 रूप्यः ।
 ८२ मयद् च ।
 ८३ प्रभवति ।
 ८४ विदूराज्यः ।
 ८५ तद् गच्छति पथिदूतयोः ।
 ८६ अभिनिष्कामति द्वारम् ।
 ८७ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ।
 ८८ शिशुकन्दयमसमद्वन्द्वेन्द्रजन-
 नादिभ्यश्छः ।
 ८९ सोऽस्य निवासः ।
 ९० अभिजनश्च ।
 ९१ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ।

- ९२ शण्डिकादिभ्यो ज्यः ।
 ९३ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणजौ ।
 ९४ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवारा-
 ड्ढक्छण्डज्यकः ।
 ९५ भक्तिः ।
 ९६ अचित्ताददेशकालादृक् ।
 ९७ महाराजादृञ् ।
 ९८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ।
 ९९ गोत्रर्क्षात्रयाख्येभ्यो बहुलं वुञ् ।
 १०० जनपदिनां जनपदवत् सर्वं ज-
 नपदेन समानशब्दानां बहुव-
 चने ।
 १०१ तेन प्रोक्तम् ।
 १०२ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखा-
 च्छण् ।
 १०३ काश्यपकौशिकाम्यामृविभ्यां
 णिनिः ।
 १०४ कलापिवैशम्पायनान्तेवासि-
 भ्यश्च ।
 १०५ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ।
 १०६ शौनकादिभ्यश्छन्दसि ।
 १०७ कठचरकालुक् ।
 १०८ कलापिनोऽण् ।
 १०९ छगलिनो द्विनुक् ।
 ११० पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षु-
 नटसूत्रयोः ।
 १११ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ।

११२ तेनैकदिक् ।
 ११३ तसिश्च ।
 ११४ उरसो यच्च ।
 ११५ उपज्ञाते ।
 ११६ कृते ग्रन्थे ।
 ११७ संज्ञायाम् ।
 ११८ कुलालादिभ्यो वुञ् ।
 ११९ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ।
 १२० तस्येदम् ।
 १२१ रथाद् यत् ।
 १२२ पत्रपूर्वादञ् ।
 १२३ पत्राध्वर्युपरिषदश्च ।
 १२४ हलसीराड्ढक् ।
 १२५ द्वन्द्वाद् वुञ् वैरमैथुनिकयोः ।
 १२६ गोत्रचरणाद् वुञ् ।
 १२७ सङ्गाङ्गुलक्षणेष्वाजि-
 जामण् ।
 १२८ शकलाद् वा ।
 १२९ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्व-
 चनटाञ् ज्यः ।
 १३० न दण्डमाणवान्तेवासिषु ।
 १३१ रैवतिकादिभ्यश्छः ।
 १३२ तस्य विकारः ।
 १३३ अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ।
 १३४ बिल्वादिभ्योऽण् ।
 १३५ कोपधाच्च ।

१३६ त्रपुजतुनोः पुक् ।
 १३७ ओरञ् ।
 १३८ अनुदात्तादेश्च ।
 १३९ पलाशादिभ्यो वा ।
 १४० शम्याष्टूलञ् ।
 १४१ मयङ् वैतयोर्भाषायामभक्ष्या-
 च्छादनयोः ।
 १४२ नित्यं वृद्धशरादिभ्यः ।
 १४३ गोश्च पुरीषे ।
 १४४ पिष्टाच्च ।
 १४५ संज्ञायां कन् ।
 १४६ ब्रीहेः पुरोडाशे ।
 १४७ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ।
 १४८ द्व्यचश्छन्दसि ।
 १४९ नोत्वद्धर्धबिल्वात् ।
 १५० तालादिभ्योऽण् ।
 १५१ जातरूपेभ्यः परिमाणे ।
 १५२ प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ।
 १५३ जितश्च तत्प्रत्ययात् ।
 १५४ क्रीतवत् परिमाणात् ।
 १५५ उष्ट्राद् वुञ् ।
 १५६ उर्मोर्णयोर्वा ।
 १५७ एण्या ढञ् ।
 १५८ गोपयसोर्यत् ।
 १५९ द्रोश्च ।
 १६० माने वयः ।

- १६१ फले लुक् ।
 १६२ लृक्षादिभ्योऽण् ।
 १६३ जम्बा वा ।
 १६४ लुप् च ।
 १६५ हरीतक्यादिभ्यश्च ।
 १६६ कंसीयपरशव्ययोर्यञ्जौ
 लुक् च ।

चतुर्थः पादः ।

- १ प्राग्वहतेष्टुक् ।
 २ तेन दीव्यति खनति जयति
 जितम् ।
 ३ संस्कृतम् ।
 ४ कुलत्यकोपधादण् ।
 ५ तरति ।
 ६ गोपुच्छादृञ् ।
 ७ नौद्वयचष्टन् ।
 ८ चरति ।
 ९ आकर्षात् छल् ।
 १० पर्पादिभ्यः ष्टन् ।
 ११ श्वगणादृञ् च ।
 १२ वेतनादिभ्यो जीवति ।
 १३ वस्त्रकयविक्रयादृन् ।
 १४ आयुधाच्छ च ।
 १५ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ।
 १६ भस्त्रादिभ्यः ष्टन् ।
 १७ विभाषा विवधात् ।

- १८ अण् कुटिलिकायाः ।
 १९ निर्वृत्तेऽक्षचूतादिभ्यः ।
 २० कत्रेर्मन्त्रित्यम् ।
 २१ अपमित्ययाचिताभ्यां ककनौ ।
 २२ संसृष्टे ।
 २३ चूर्णादिनिः ।
 २४ लवणाल्लुक् ।
 २५ मुद्रादण् ।
 २६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते ।
 २७ ओजःसहोम्भसा वर्तते ।
 २८ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ।
 २९ परिमुखं च ।
 ३० प्रयच्छति गर्ह्यम् ।
 ३१ कुसीददशैकादशात् ष्टन्ष्टचौ ।
 ३२ उच्छति ।
 ३३ रक्षति ।
 ३४ शब्दददुर्ं करोति ।
 ३५ पक्षिमत्स्यमृगान् हन्ति ।
 ३६ परिपन्थं च तिष्ठति ।
 ३७ माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धा-
 वति ।
 ३८ आक्रन्दादृञ् च ।
 ३९ पदोत्तरपदं गृह्णाति ।
 ४० प्रतिकण्ठार्थललामं च ।
 ४१ धर्मे चरति ।
 ४२ प्रतिपथमेति ठञ्च ।
 ४३ समवायान् समवैति ।

४४ परिषदो ण्यः ।
 ४५ सेनाया वा ।
 ४६ संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ
 पश्यति ।
 ४७ तस्य धर्म्यम् ।
 ४८ अण् महिष्यादिभ्यः ।
 ४९ ऋतोऽञ् ।
 ५० अवक्रयः ।
 ५१ तदस्य पण्यम् ।
 ५२ लवणाट्टञ् ।
 ५३ किसरादिभ्यः घृन् ।
 ५४ शालालुनोऽन्यतरस्याम् ।
 ५५ शिल्पम् ।
 ५६ मडुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ।
 ५७ प्रहरणम् ।
 ५८ परश्वधाट्टञ् च ।
 ५९ शक्तियष्टचोरीकक् ।
 ६० अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ।
 ६१ शीलम् ।
 ६२ छत्रादिभ्यो णः ।
 ६३ कर्माध्ययने वृत्तम् ।
 ६४ बह्वचपूर्वपदाट्टञ् ।
 ६५ हितं भक्षाः ।
 ६६ तदस्मै दीयते नियुक्तम् ।
 ६७ श्राणामांसौदनाट्टिठन् ।
 ६८ भक्तादणन्यतरस्याम् ।
 ६९ तत्र नियुक्तः ।

७० अगारान्ताट्टन् ।
 ७१ अध्यायिन्यदेशकालात् ।
 ७२ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु
 व्यवहरति ।
 ७३ निकटे वसति ।
 ७४ आवसथात् ष्टल् ।
 ७५ प्राग्घिताद् यत् ।
 ७६ तद् वहति रथयुगप्रासङ्गम् ।
 ७७ धुरो यड्ढकौ ।
 ७८ खःसर्वधुरात् ।
 ७९ एकधुराल्लुक् च ।
 ८० शकटादण् ।
 ८१ हलसीराट्टक् ।
 ८२ संज्ञायां जन्याः ।
 ८३ विध्यत्यधनुषा ।
 ८४ धनगणं लब्धा ।
 ८५ अन्नाणः ।
 ८६ वशं गतः ।
 ८७ पदमस्मिन् दृश्यम् ।
 ८८ मूलमस्यावर्हि ।
 ८९ संज्ञायां धेनुष्या ।
 ९० गृहपतिना संयुक्ते ज्यः ।
 ९१ नौवयोधर्मविषमूलमूलसीता-
 तुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्या-
 नाम्यसमसमितसंमितेषु ।
 ९२ धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ।
 ९३ छन्दसो निर्मिते ।

- १४ उरसोऽण् च ।
 १५ हृदयस्य प्रियः ।
 १६ बन्धने चर्षो ।
 १७ मतजनहलात् करणजल्प-
 कर्षेषु ।
 १८ तत्र साधुः ।
 १९ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ।
 १०० भक्ताणः ।
 १०१ परिषदो ण्यः ।
 १०२ कथादिभ्यष्टक् ।
 १०३ गुडादिभ्यष्टञ् ।
 १०४ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्दञ् ।
 १०५ सभाया यः ।
 १०६ ढश्छन्दसि ।
 १०७ समानतीर्थेवासी ।
 १०८ समानोदरे शयित ओ चो-
 दात्तः ।
 १०९ सोदराद् यः ।
 ११० भवे छन्दसि ।
 १११ पाथोनदीभ्यां ङ्यण् ।
 ११२ वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ।
 ११३ स्रोतसो विभाषा ङ्यङ्ङ्यौ ।
 ११४ सगर्भसयूथसनुताद् यन् ।
 ११५ तुग्राद् यन् ।
 ११६ अग्राद् यत् ।
 ११७ घच्छौ च ।
 ११८ समुद्राभ्राद् घः ।
 ११९ बहिषि दत्तम् ।

- १२० दूतस्य भागकर्मणी ।
 १२१ रक्षोयातूनां हननी ।
 १२२ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः
 प्रशस्ये ।
 १२३ असुरस्य स्वम् ।
 १२४ मायायामण् ।
 १२५ तद्वानासामुपधानो मन्त्र
 इतीष्टकासु लुक् च मतोः ।
 १२६ अश्विमानण् ।
 १२७ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ।
 १२८ मत्वर्थे मासतन्वोः ।
 १२९ मधोर्ज च ।
 १३० ओजसोऽहनि यत्खौ ।
 १३१ वेशोयशआदेर्भगाद् यल् ।
 १३२ ख च ।
 १३३ पूर्वैः कृतमिनियौ च ।
 १३४ अद्भिः संस्कृतम् ।
 १३५ सहस्रेण संमितौ घः ।
 १३६ मतौ च ।
 १३७ सोममर्हति यः ।
 १३८ मये च ।
 १३९ मघोः ।
 १४० वसोः समूहे च ।
 १४१ नक्षत्राद् घः ।
 १४२ सर्वदेवात् तातिल् ।
 १४३ शिवशमरिष्टस्य करे ।
 १४४ भावे च ।

पञ्चमोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ प्राक् क्रीताच्छः ।
- २ उगवादिभ्यो यत् ।
- ३ कम्बलाच्च संज्ञायाम् ।
- ४ विभाषा हविरूपादिभ्यः ।
- ५ तस्मै हितम् ।
- ६ शरीरावयवाद् यत् ।
- ७ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ।
- ८ अजाविभ्यां थ्यन् ।
- ९ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ।
- १० सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ।
- ११ माणवचरकाभ्यां खञ् ।
- १२ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ।
- १३ छदिरुपधिवलेढञ् ।
- १४ ऋषभोपानहोर्ज्यः ।
- १५ चर्मणोऽञ् ।
- १६ तदस्य तदस्मिन् स्यादिति ।
- १७ परिखाया ढञ् ।
- १८ प्राग्वतेष्टञ् ।
- १९ आर्हादिगोपुच्छसंख्यापरिमाणाढक् ।
- २० असमासे निष्कादिभ्यः ।
- २१ शताच्च ठन्यतावशते ।

- २२ संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ।
- २३ वतोरिड् वा ।
- २४ विंशतित्रिंशद्भ्यां हुन्नसंज्ञायाम् ।
- २५ कंसाट्टिठन् ।
- २६ शूर्पादिजन्यतरस्याम् ।
- २७ शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ।
- २८ अध्यर्धपूर्वद्विगोलुगसंज्ञायाम् ।
- २९ विभाषा कार्वापणसहस्राभ्याम् ।
- ३० द्वित्रिपूर्वाभिष्कात् ।
- ३१ विस्ताच्च ।
- ३२ विंशतिकात् खः ।
- ३३ खार्या ईकन् ।
- ३४ पणपादमाषशताद् यत् ।
- ३५ शाणाद् वा ।
- ३६ तेन क्रीतम् ।
- ३७ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ।
- ३८ गोद्वचोऽसंख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ।
- ३९ पुत्राच्छ च ।
- ४० सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ।

- ४१ तस्येश्वरः ।
 ४२ तत्र विदित इति च ।
 ४३ लोकसर्वलोकादृज् ।
 ४४ तस्य वापः ।
 ४५ पात्रात् घृन् ।
 ४६ तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्को-
 पदा दीयते ।
 ४७ पूरणार्धादृन् ।
 ४८ भागाद् यच्च ।
 ४९ तद्धरतिवहत्यावहति भाराद्
 वंशादिभ्यः ।
 ५० वस्त्रद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ।
 ५१ संभवत्यवहरति पचति ।
 ५२ आढकाचितपात्रान् खोऽन्यतर-
 स्याम् ।
 ५३ द्विगोष्ठश्च ।
 ५४ कुलिजाल्लुक्खौ च ।
 ५५ सोऽस्यांशवस्त्रभृतयः ।
 ५६ तदस्य परिमाणम् ।
 ५७ संख्यायाः संज्ञासङ्ख्यसूत्राध्य-
 यनेषु ।
 ५८ पंक्तिर्विंशतित्रिंशच्चत्वारिंश-
 त्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनव-
 तिशतम् ।
 ५९ पञ्चदशतौ वर्गे वा ।
 ६० सप्तनोऽञ् छन्दसि ।

- ६१ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे सं-
 ज्ञायां डण् ।
 ६२ तदर्हति ।
 ६३ छेदादिभ्यो नित्यम् ।
 ६४ शीर्षच्छेदाद् यच्च ।
 ६५ दण्डादिभ्यो यत् ।
 ६६ छन्दसि च ।
 ६७ पात्राद् घञ्श्च ।
 ६८ कडङ्कुरदक्षिणाच्छ च ।
 ६९ स्थालीबिलात् ।
 ७० यज्ञत्विग्भ्यां घञञौ ।
 ७१ पारायणतुरायणचान्द्रायणं
 वर्तयति ।
 ७२ संशयमापन्नः ।
 ७३ योजनं गच्छति ।
 ७४ पथः ष्कन् ।
 ७५ पन्थो ण नित्यम् ।
 ७६ उत्तरपथेनाऽहृतं च ।
 ७७ कालात् ।
 ७८ तेन निर्वृत्तम् ।
 ७९ तमधीष्टो भूतो भूतो भावी ।
 ८० मासाद् वयसि यत्खञौ ।
 ८१ द्विगोर्यप् ।
 ८२ षण्मासाण्यच्च ।
 ८३ अवयसि ठञ्श्च ।
 ८४ समायाः खः ।
 ८५ द्विगोर्वा ।

८६ रात्र्यहःसंवत्सराच्च ।
 ८७ वर्षाल्लुक् च ।
 ८८ चित्तवति नित्यम् ।
 ८९ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ।
 ९० वत्सरान्ताच्छन्दसि ।
 ९१ संपरिपूर्वात् ख च ।
 ९२ तेन परिजग्यलभ्यकार्यसुकरम् ।
 ९३ तदस्य ब्रह्मचर्यम् ।
 ९४ तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः ।
 ९५ तत्र च दीयते कार्यं भववत् ।
 ९६ व्युष्टादिभ्योऽण् ।
 ९७ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां
 णयतौ ।
 ९८ संपादिनि ।
 ९९ कर्मवेपाद् यत् ।
 १०० तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ।
 १०१ योगाद् यच्च ।
 १०२ कर्मण उक्ञ् ।
 १०३ समयस्तदस्य प्राप्तम् ।
 १०४ ऋतोरण् ।
 १०५ छन्दसि घस् ।
 १०६ कालाद् यत् ।
 १०७ प्रकृष्टे ठञ् ।
 १०८ प्रयोजनम् ।
 १०९ विशाखापाढादण् मन्थदण्ड-
 योः ।

११० अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ।
 १११ समापनात् सपूर्वपदात् ।
 ११२ ऐकागारिकद् चौरे ।
 ११३ आकालिकडाद्यन्तवचने ।
 ११४ तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः ।
 ११५ तत्र तस्येव ।
 ११६ तदर्हम् ।
 ११७ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ।
 ११८ तस्य भावस्त्वतलौ ।
 ११९ आ च त्वात् ।
 १२० न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुर-
 संगतलवणवद्वुधकतरसल-
 सेभ्यः ।
 १२१ पृथ्वादिभ्यश्चिन्मनिज् वा ।
 १२२ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च ।
 १२३ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः
 कर्मणि च ।
 १२४ स्तेनाद् यञ्जलोपश्च ।
 १२५ सव्युर्यः ।
 १२६ कपिज्ञात्योर्ढक् ।
 १२७ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ।
 १२८ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गा-
 त्रादिभ्योऽञ् ।
 १२९ हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ।
 १३० इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ।
 १३१ योपधाद् गुरुपोत्तमाद् वुञ् ।
 १३२ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ।

१३३ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारत-
द्वेतेषु ।

१३४ होत्राभ्यदृष्टः ।

१३५ ब्रह्मणस्त्वः ।

द्वितीयः पादः ।

१ धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ।

२ ब्रीहिशाल्योर्दृक् ।

३ यवयवकषुष्टिकाद् यत् ।

४ विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणु-
भ्यः ।

५ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ।

६ यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः ।

७ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं
व्याप्नोति ।

८ आप्रपदं प्राप्नोति ।

९ अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभ-
क्षयतिनेयेषु ।

१० परोवरपरंपरपुत्रपौत्रमनुभ-
वति ।

११ अवारपारात्यन्तानुकामगामी ।

१२ समांसमां विजायते ।

१३ अद्यश्वीनावष्टब्धे ।

१४ आगवीनः ।

१५ अनुग्वलंगामी ।

१६ अध्वनो यत्खौ ।

१७ अभ्यमित्राच्छ च ।

१८ गोष्ठात् खञ् भूतपूर्वे ।

१९ अश्वस्यैकाहगमः ।

२० शालीनकौपीने अधृष्टाकार्य-
योः ।

२१ व्रातेन जीवति ।

२२ साप्तपदीनं सख्यम् ।

२३ हैयंगवीनं संज्ञायाम्

२४ तस्य पाकमूले पीलवादिकर्णा-
दिभ्यः कुण्वजाहचौ ।

२५ पक्षात्तिः ।

२६ तेन वित्तश्चुञ्चुञ्चणपौ ।

२७ विनञ्भ्यां नानाञौ न सह ।

२८ वेः शालच्छङ्कुटचौ ।

२९ संप्रोदश्च कटच् ।

३० अवात् कुटारच्च ।

३१ नते नासिकायाः संज्ञायां टी-
टञ्जाटज्भटच्चः ।

३२ नेर्विडज्विरीसचौ ।

३३ इनचिपटच्चिकचि च ।

३४ उपाधिभ्यां त्यक्त्रासन्नारूढ-
योः ।

३५ कर्मणि घटोऽठच् ।

३६ तदस्य संजातं तारकादिभ्य
इतच् ।

३७ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नमात्रचः ।

३८ पुरुषहस्तिभ्यामण् च ।

३९ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ।

- ४० किमिदम्भ्यां वो घः ।
 ४१ किमः संख्यापरिमाणे इति च ।
 ४२ संख्याया अवयवे तयप् ।
 ४३ द्वित्रिभ्यां तयस्याऽयज् वा ।
 ४४ उभादुदात्तो नित्यम् ।
 ४५ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ता-
 द्भुः ।
 ४६ शदन्तविंशतेश्च ।
 ४७ संख्याया गुणस्य निमाने म-
 यट् ।
 ४८ तस्य पूरणे डट् ।
 ४९ नान्तादसंख्यादेर्मट् ।
 ५० थट् च छन्दसि ।
 ५१ षट्कृतिकतिपयचतुरां थुक् ।
 ५२ बहुपूगगणसङ्घस्य तिथुक् ।
 ५३ वतोरिथुक् ।
 ५४ द्वेस्तीयः ।
 ५५ त्रेः संप्रसारणं च ।
 ५६ विंशत्यादिभ्यस्तमड्न्यतर-
 स्याम् ।
 ५७ नित्यं शतादिमासार्धमाससं-
 वत्सराच्च ।
 ५८ षष्ठ्यादेश्चाऽसंख्यादेः ।
 ५९ मतौ छः सूक्तसाम्नोः ।
 ६० अध्यायानुवाकयोर्लुक् ।
 ६१ विमुक्तादिभ्योऽण् ।
 ६२ गोषदादिभ्यो वुन् ।

- ६३ तत्र कुशलः पथः ।
 ६४ आकर्षादिभ्यः कन् ।
 ६५ धनहिरण्यात् कामे ।
 ६६ स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ।
 ६७ उदराद्वगाद्युने ।
 ६८ सस्येन परिजातः ।
 ६९ अंशं हारी ।
 ७० तन्त्रादचिरापहृते ।
 ७१ ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् ।
 ७२ शीतोष्णाभ्यां कारिणि ।
 ७३ अधिकम् ।
 ७४ अनुकाभिकाभीकः कमिता ।
 ७५ पार्श्वेनाऽन्विच्छति ।
 ७६ अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठ-
 कठजौ ।
 ७७ तावतिथं ग्रहणमिति लुग् वा ।
 ७८ स एषां ग्रामणीः ।
 ७९ शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे ।
 ८० उत्क उन्मनाः ।
 ८१ कालप्रयोजनाद् रोगे ।
 ८२ तदस्मिन्नन्नं प्राये संज्ञायाम् ।
 ८३ कुल्माषादज् ।
 ८४ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते ।
 ८५ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ ।
 ८६ पूर्वादिनिः ।
 ८७ सपूर्वाच्च ।
 ८८ इष्टादिभ्यश्च ।

- ८९ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ
पर्यवस्थातरि ।
९० अनुपद्यन्वेष्टा ।
९१ साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ।
९२ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ।
९३ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्ट-
मिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्त-
मिति वा ।
९४ तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप् ।
९५ रसादिभ्यश्च ।
९६ प्राणिस्थादातो लजन्यतर-
स्याम् ।
९७ सिध्मादिभ्यश्च ।
९८ वत्सांसाभ्यां कामबले ।
९९ फेनादिलच् ।
१०० लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः
शनेलचः ।
१०१ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ।
१०२ तपःसहस्राभ्यां विनीनी ।
१०३ अण् च ।
१०४ सिकताशर्कराभ्यां च ।
१०५ देशे लुबिलचौ च ।
१०६ दन्त उन्नत उरच् ।
१०७ ऊषसुषिमुष्कमधो रः ।
१०८ हुद्गभ्यां मः ।
१०९ केशाद् वोऽन्यतरस्याम् ।
११० गाण्ड्यजगात् संज्ञायाम् ।
१११ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ।
११२ रजःकृष्यासुतिपरिषदो
वलच् ।
११३ दन्तशिखात् संज्ञायाम् ।
११४ ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्ज-
स्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनम-
लीमसाः ।
११५ अत इनिठनौ ।
११६ व्रीह्यादिभ्यश्च ।
११७ तुन्दादिभ्य इलच् ।
११८ एकगोपूर्वाङ्गञ् नित्यम् ।
११९ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ।
१२० रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ।
१२१ अस्मायामेधास्रजो विनिः ।
१२२ बहुलं छन्दसि ।
१२३ ऊर्णाया युस् ।
१२४ वाचो गिमनिः ।
१२५ आलजाटचौ बहुभाषिणि ।
१२६ स्वामिन्नैश्वर्ये ।
१२७ अर्शआदिभ्योऽच् ।
१२८ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात् प्राणिस्था-
दिनिः ।
१२९ वातातीसाराभ्यां कुक् च ।
१३० वयसि पूरणात् ।
१३१ सुखादिभ्यश्च ।
१३२ धर्मशीलवर्णान्ताच्च ।
१३३ हस्ताज्जातौ ।
१३४ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ।

- १३५ पुष्करादिभ्यो देशे ।
 १३६ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ।
 १३७ संज्ञायां मन्माभ्याम् ।
 १३८ कंशंभ्यां वभयुस्ति तुतयसः ।
 १३९ तुन्दिबलिवटेर्भः ।
 १४० अहंशुभमोर्युस् ।

तृतीयः पादः ।

- १ प्राग् दिशो विभक्तिः ।
 २ किं सर्वनामबहुभ्योऽद्वयादि-
 भ्यः ।
 ३ इदम इश् ।
 ४ एतेतौ रथोः ।
 ५ एतदोऽन् ।
 ६ सर्वस्य सोऽन्यस्यां दि ।
 ७ पञ्चम्यास्तसिल्ल ।
 ८ तसेश्च ।
 ९ पर्यभिभ्यां च ।
 १० सप्तम्यास्त्रल् ।
 ११ इदमो हः ।
 १२ किमोऽत् ।
 १३ वा ह च च्छन्दसि ।
 १४ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ।
 १५ सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा ।
 १६ इदमोर्हिल् ।
 १७ अधुना ।
 १८ दानीं च ।

- १९ तदो दा च ।
 २० तयोर्दाहिलौ च च्छन्दसि ।
 २१ अनद्यतने हिलन्यतरस्याम् ।
 २२ सद्यः परुपरार्येषमः परेद्यव्य-
 द्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरे-
 द्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरे-
 द्युः ।

- २३ प्रकारवचने थाल् ।
 २४ इदमस्यमुः ।
 २५ किमश्च ।
 २६ था हेतौ च च्छन्दसि ।
 २७ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमी-
 प्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्व-
 स्तातिः ।
 २८ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ।
 २९ विभाषा परावराभ्याम् ।
 ३० अञ्जेलुक् ।
 ३१ उपर्युपरिष्ठात् ।
 ३२ पश्चात् ।
 ३३ पश्च पश्चा च च्छन्दसि ।
 ३४ उत्तराधरदक्षिणादातिः ।
 ३५ एनवन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ।
 ३६ दक्षिणादाच् ।
 ३७ आहि च दूरे ।
 ३८ उत्तराच्च ।
 ३९ पूर्वाधरावराणामसि पुरधव-
 शेषाम् ।

- ४० अस्ताति च ।
 ४१ विभाषाऽवरस्य ।
 ४२ संख्याया विधार्थे धा ।
 ४३ अधिकरणविचाले च ।
 ४४ एकाद्वो ध्यमुजन्यतरस्याम् ।
 ४५ द्वित्र्योश्च धमुञ् ।
 ४६ एधाच्च ।
 ४७ याप्ये पाशप् ।
 ४८ पूरणाद् भागे तीयादन् ।
 ४९ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ।
 ५० षष्ठाष्टमाभ्यां ज च ।
 ५१ मानपश्वङ्गयोः कन्लुक्चौ च ।
 ५२ एकादाकिनिच्चाऽसहाये ।
 ५३ भूतपूर्वे चरट् ।
 ५४ षष्ठ्या रूप्य च ।
 ५५ अतिशायने तमविष्टनौ ।
 ५६ तिङश्च ।
 ५७ द्विवचनविभज्योपपदे तरवी-
 यसुनौ ।
 ५८ अजादी गुणवचनादेव ।
 ५९ तुश्छन्दसि ।
 ६० प्रशस्यस्य श्रः ।
 ६१ ज्य च ।
 ६२ वृद्धस्य च ।
 ६३ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ।
 ६४ युवाल्परयोः कनन्यतरस्याम् ।
 ६५ विन्मतोर्लुक् ।

- ६६ प्रशंसायां रूपम् ।
 ६७ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देइयदेशी-
 यरः ।
 ६८ विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात् ।
 ६९ प्रकारवचने जातीयर् ।
 ७० प्रागिवात् कः ।
 ७१ अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः ।
 ७२ कस्य च दः ।
 ७३ अज्ञाते ।
 ७४ कुत्सिते ।
 ७५ संज्ञायां कन् ।
 ७६ अनुकम्पायाम् ।
 ७७ नीतौ च तद्युक्तात् ।
 ७८ बह्वचो मनुष्यनामूष्टृज् वा ।
 ७९ घनिलचौ च ।
 ८० प्राचामुपादेरड्ज्वुचौ च ।
 ८१ जातिनाम्नः कन् ।
 ८२ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ।
 ८३ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ।
 ८४ शेवलसुपरिविशालवरुणार्य-
 मादीनां तृतीयात् ।
 ८५ अल्पे ।
 ८६ हस्वे ।
 ८७ संज्ञायां कन् ।
 ८८ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ।
 ८९ कुत्वा डुपच् ।
 ९० कासूगोणीभ्यां घृश्च ।

- ९१ वत्सोक्षाश्ववर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ।
 ९२ कियत्तदोर्निर्धारणे द्वयोरेकस्य
 उत्तरच् ।
 ९३ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने उत्त-
 मच् ।
 ९४ एकाच्च प्राचाम् ।
 ९५ अवक्षेपणे कन् ।
 ९६ इवे प्रतिकृतौ ।
 ९७ संज्ञायां च ।
 ९८ लुम्मनुष्ये ।
 ९९ जीविकार्थे चाऽपण्ये ।
 १०० देवपथादिभ्यश्च ।
 १०१ वस्तेर्ढञ् ।
 १०२ शिलाया ङः ।
 १०३ शाखादिभ्यो यत् ।
 १०४ द्रव्यं च भव्ये ।
 १०५ कुशाग्राच्छः ।
 १०६ समासाच्च तद्विषयात् ।
 १०७ शर्करादिभ्योऽण् ।
 १०८ अङ्गुल्यादिभ्यष्टक् ।
 १०९ एकशालायाष्टजन्यतरस्याम् ।
 ११० कर्कलोहितादीकक् ।
 १११ प्रक्षुप्तपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि ।
 ११२ पूगाज्ज्योऽग्रामणीपूर्वात् ।
 ११३ व्रातच्छ्वोरस्त्रियाम् ।
 ११४ आयुधजीविसंघाज्जुवाही-
 केष्वब्राह्मणराजन्यात् ।

- ११५ वृकाद्वेण्यण् ।
 ११६ दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः ।
 ११७ पश्वादिद्यौधेयादिभ्योऽणञौ ।
 ११८ अभिजिह्विदभृच्छालावच्छि-
 खावच्छमीवदूर्णावच्छुमद-
 णो यञ् ।
 ११९ ज्यादयस्तद्राजाः ।

चतुर्थः पादः ।

- १ पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां
 वुन् लोपश्च ।
 २ दण्डव्यवसर्गयोश्च ।
 ३ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने
 कन् ।
 ४ अनत्यन्तगतौ क्तात् ।
 ५ न सामिवचने ।
 ६ बृहत्या आच्छादने ।
 ७ अषडक्षाशितं ग्वलकर्मालिपुरु-
 षाध्युत्तरपदात् खः ।
 ८ विभाषाऽञ्चैरदिकिञ्चियाम् ।
 ९ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ।
 १० स्थानान्ताद् विभाषा संस्थानेने-
 ति चेत् ।
 ११ किमेत्तिङव्ययघादास्वद्रव्यप्र-
 कर्षे ।
 १२ अमु च छन्दसि ।
 १३ अनुगादिनष्टक् ।

- १४ णचः स्त्रियामञ् ।
 १५ अणिनुणः ।
 १६ विसारिणो मत्स्ये ।
 १७ संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिग-
 णने कृत्वसुच् ।
 १८ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ।
 १९ एकस्य सकृच्च ।
 २० विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ।
 २१ तत्प्रकृतवचने मयट् ।
 २२ समूहवच्च बहुषु ।
 २३ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ज्यः ।
 २४ देवतान्तात्तादर्थ्यं यत् ।
 २५ पादार्धाभ्यां च ।
 २६ अतिथेर्ज्यः ।
 २७ देवात्तल् ।
 २८ अवेः कः ।
 २९ यावादिभ्यः कन् ।
 ३० लोहितान्मणौ ।
 ३१ वर्णे चाऽनित्ये ।
 ३२ रक्ते ।
 ३३ कालाच्च ।
 ३४ विनयादिभ्यष्टक् ।
 ३५ वाचो व्याहृतार्थायाम् ।
 ३६ तद्युक्तात् कर्मणोऽण् ।
 ३७ ओषधेरजातौ ।
 ३८ प्रज्ञादिभ्यश्च ।
 ३९ मृदस्तिकन् ।
 ४० सन्नौ प्रशंसायाम् ।
 ४१ वृकज्येष्ठाभ्यां तिलतातिलौ च
 च्छन्दसि ।
 ४२ बह्वल्पाथ्याच्छस्कारकादन्यत-
 रस्याम् ।
 ४३ संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ।
 ४४ प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ।
 ४५ अपादाने चाऽहीयरुहोः ।
 ४६ अनिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि
 तृतीयायाः ।
 ४७ हीयमानपापयोगाच्च ।
 ४८ षष्ठ्या व्याश्रये ।
 ४९ रोगाच्चाऽपनयने ।
 ५० कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि
 च्चिवः ।
 ५१ अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां
 लोपश्च ।
 ५२ विभाषा साति कात्स्न्ये ।
 ५३ अभिविधौ संपदा च ।
 ५४ तद्धीनवचने ।
 ५५ देये त्रा च ।
 ५६ देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो
 द्वितीयासप्तम्योर्वहुलम् ।
 ५७ अव्यक्तानुकरणाद् द्वयजवरा-
 र्धादनितौ डाच् ।
 ५८ कृजो द्वितीयतृतीयशम्बवी-
 जात् कृषौ ।

६९ संख्यायाश्च गुणान्तायाः ।
 ६० समयाच्च यापनायाम् ।
 ६१ सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने ।
 ६२ निष्कुलान्निष्कोषणे ।
 ६३ सुखप्रियादानुलोभ्ये ।
 ६४ दुःखात् प्रातिलोभ्ये ।
 ६५ शूलात् पाके ।
 ६६ सत्यादशपथे ।
 ६७ मद्रात् परिवापणे ।
 ६८ समासान्ताः ।
 ६९ न पूजनात् ।
 ७० किमः क्षेपे ।
 ७१ नञस्तत्पुरुषात् ।
 ७२ पथो विभाषा ।
 ७३ बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुग-
 णात् ।
 ७४ ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ।
 ७५ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोभ्यः ।
 ७६ अङ्गोऽदर्शनात् ।
 ७७ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्री-
 पुंसधेन्वनडुहकसामिवाङ्मन-
 साक्षिभुवदारगबोर्बष्ठीवपद-
 ष्ठीवनक्तदिवरात्रिदिवाहर्दि-
 वसरजसनिश्श्रेयसपुरुषायुष-
 द्व्यायुषत्र्यायुष्यजुषजातो-
 क्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठ-
 श्वाः ।

७८ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ।
 ७९ अवसमन्धेभ्यस्तमसः ।
 ८० श्वसो वसीयःश्रेयसः ।
 ८१ अन्ववतप्ताद्रहसः ।
 ८२ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थान् ।
 ८३ अनुगवमायामे ।
 ८४ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ।
 ८५ उपसर्गादध्वनः ।
 ८६ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्य-
 यादेः ।
 ८७ अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्या-
 च रात्रेः ।
 ८८ अहोऽह एतेभ्यः ।
 ८९ न संख्यादेः समाहारे ।
 ९० उत्तमैकाभ्यां च ।
 ९१ राजाहःसखिभ्यष्टच् ।
 ९२ गोरतद्धितलुकि ।
 ९३ अग्राख्यायामुरसः ।
 ९४ अनोश्मायःसरसां जातिसं-
 ज्ञयोः ।
 ९५ ग्रामकौटाभ्यां च तक्षणः ।
 ९६ अतेः शुनः ।
 ९७ उपमानादप्राणिषु ।
 ९८ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्शः ।
 ९९ नावो द्विगोः ।
 १०० अर्धाच्च ।
 १०१ खार्याः प्राचाम् ।

- १०२ द्वित्रिभ्यामञ्जले ।
 १०३ अनसन्तात्रपुंसकाच्छन्दसि ।
 १०४ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ।
 १०५ कुमहद्ब्रह्मचामन्यतरस्याम् ।
 १०६ द्वन्द्वाच्चुदपहान्तात् समाहारे
 १०७ अव्ययीभावै शरत्प्रभृतिभ्यः ।
 १०८ अनश्च ।
 १०९ नपुंसकादन्यतरस्याम् ।
 ११० नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ।
 १११ ज्ञयः ।
 ११२ गिरेश्च सेनकस्य ।
 ११३ बहुव्रीहौ सकथ्यक्ष्णोः स्वाङ्गा-
 त् षच् ।
 ११४ अङ्गुलेर्दासिणि ।
 ११५ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ।
 ११६ अप् पूरणीप्रमाण्योः ।
 ११७ अन्तर्वहिभ्यां च लोम्नः ।
 ११८ अज्नासिकायाः संज्ञायां नसं
 चाऽस्थूलात् ।
 ११९ उपसर्गाच्च ।
 १२० सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्ष-
 चतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठ-
 पदाः ।
 १२१ नञ्दुःसुभ्यो हलिसकथ्योर-
 न्यतरस्याम् ।
 १२२ नित्यमसिच प्रजामेधयोः ।
 १२३ बहुप्रजाश्छन्दसि ।
 १२४ धर्मादनिच् केवलात् ।

- १२५ जम्भा सुहरितवृणसोमेभ्यः ।
 १२६ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ।
 १२७ इच् कर्मव्यतिहारे ।
 १२८ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ।
 १२९ प्रसम्भ्यां जानुनोर्द्धुः ।
 १३० ऊर्ध्वाद् विभाषा ।
 १३१ ऊधसोऽनङ् ।
 १३२ धनुषश्च ।
 १३३ वा संज्ञायाम् ।
 १३४ जायाया निङ् ।
 १३५ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ।
 १३६ अल्पाख्यायाम् ।
 १३७ उपमानाच्च ।
 १३८ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ।
 १३९ कुम्भपदीषु च ।
 १४० संख्यासुपूर्वस्य ।
 १४१ वयसि दन्तस्य दत् ।
 १४२ छन्दसि च ।
 १४३ स्त्रियां संज्ञायाम् ।
 १४४ विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ।
 १४५ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहे-
 भ्यश्च ।
 १४६ ककुदस्याऽवस्थायां लोपः ।
 १४७ त्रिककुत् पर्वते ।
 १४८ उद्विभ्यां काकुदस्य ।
 १४९ पूर्णाद् विभाषा ।
 १५० सुहृदुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ।

- १५१ उरः प्रभृतिभ्यः कप् ।
 १५२ इनः स्त्रियाम् ।
 १५३ नद्युतश्च ।
 १५४ शेषाद् विभाषा ।
 १५५ न संज्ञायाम् ।

- १५६ ईयसश्च ।
 १५७ वन्दिते भ्रातुः ।
 १५८ ऋतश्छन्दसि ।
 १५९ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ।
 १६० निष्प्रवाणिश्च ।

षष्ठोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ एकाचो द्वे प्रथमस्य ।
 २ अजादेर्द्वितीयस्य ।
 ३ न न्द्राः संयोगादयः ।
 ४ पूर्वोऽभ्यासः ।
 ५ उभे अभ्यस्तम् ।
 ६ जक्षित्यादयः षट् ।
 ७ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ।
 ८ लिटि धातोरनभ्यासस्य ।
 ९ सन्त्यङोः ।
 १० श्लौ ।
 ११ चङि ।
 १२ दाश्वान् साहान् मीढ्वांश्च ।
 १३ ण्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्त-
 त्पुरुषे ।
 १४ बन्धुनि बहुव्रीहौ ।
 १५ वचिस्त्रपियजादीनां किति ।
 १६ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविच-

तिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां
 ङिति च ।

- १७ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ।
 १८ स्वापेश्चङि ।
 १९ स्वपित्यमिव्येजां यङि ।
 २० न वशः ।
 २१ चायः की ।
 २२ स्फायः स्फी निष्ठायाम् ।
 २३ स्यः प्रपूर्वस्य ।
 २४ द्रवमूर्तिस्पर्शयोः इयः ।
 २५ प्रतेश्च ।
 २६ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ।
 २७ श्रुतं पाके ।
 २८ ण्यायः पी ।
 २९ लिङ्यङोश्च ।
 ३० विभाषा श्वेः ।
 ३१ णौ च संश्रङोः ।
 ३२ ह्रः संप्रसारणमभ्यस्तस्य च ।

- ३३ बहुलं छन्दसि ।
 ३४ चायः की ।
 ३५ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चि-
 च्युषेतित्याजश्राताःश्रितमा-
 शीराशीर्ताः ।
 ३६ न संप्रसारणे संप्रसारणम् ।
 ३७ लिटि वयो यः ।
 ३८ वश्वाऽस्याऽन्यतरस्यां किति ।
 ३९ वेजः ।
 ४० ल्यपि च ।
 ४१ ज्यश्च ।
 ४२ व्यश्च ।
 ४३ विभाषा परेः ।
 ४४ आदेच उपदेशोऽशिति ।
 ४५ न व्यो लिटि ।
 ४६ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ।
 ४७ क्रीड्जीनां णौ ।
 ४८ सिध्यतेरपारलौकिके ।
 ४९ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि
 च ।
 ५० विभाषा लीयतेः ।
 ५१ खिदेश्छन्दसि ।
 ५२ अपगुरो णमुलि ।
 ५३ चिस्फुरोर्णौ ।
 ५४ प्रजने वीयतेः ।
 ५५ विभेतेर्हेतुभये ।

- ५६ नित्यं स्मयतेः ।
 ५७ सृजिदृशोर्ज्ञल्यमकिति ।
 ५८ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्याऽन्यत-
 रस्याम् ।
 ५९ शीर्षश्छन्दसि ।
 ६० ये च तद्धिते ।
 ६१ पद्भोमासहृन्निशसन्यूषन्दो-
 षन्यकञ्चकन्नुदन्नासञ्छस्प्र-
 भृतिषु ।
 ६२ धात्वादेः षः सः ।
 ६३ णो नः ।
 ६४ लोपो व्योर्वलि ।
 ६५ षेरपृक्तस्य ।
 ६६ हलङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्य-
 पृक्तं हल् ।
 ६७ एङ्ह्रस्वात् संबुद्धेः ।
 ६८ शेश्छन्दसि बहुलम् ।
 ६९ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ।
 ७० संहितायाम् ।
 ७१ छे च ।
 ७२ आङ्माङोश्च ।
 ७३ दीर्घात् पदान्ताद् वा ।
 ७४ इको यणचि ।
 ७५ एचोऽयवायावः ।
 ७६ वान्तो यि प्रत्यये ।

७७ धातोस्तन्निमित्तस्यैव ।
 ७८ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ।
 ७९ क्रय्यस्तदर्थे ।
 ८० मय्यप्रवय्ये च छन्दसि ।
 ८१ एकः पूर्वपरयोः ।
 ८२ अन्तादिवच्च ।
 ८३ षत्वतुकोरसिद्धः ।
 ८४ आद् गुणः ।
 ८५ वृद्धिरेचि ।
 ८६ एत्येधत्सु ।
 ८७ आटश्च ।
 ८८ उपसर्गादिति धातौ ।
 ८९ वा सुप्यापिशलेः ।
 ९० औतोश्शसोः ।
 ९१ एङि पररूपम् ।
 ९२ ओमाङोश्च ।
 ९३ उस्यपदान्तात् ।
 ९४ अतो गुणे ।
 ९५ अव्यक्तानुकरणस्याऽत इतौ ।
 ९६ नाऽङ्गेडितस्याऽन्त्यस्य तु वा ।
 ९७ अकः सवर्णे दीर्घः ।
 ९८ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ।
 ९९ तस्माच्छसो नः पुंसि ।
 १०० नादिचि ।
 १०१ दीर्घाज्जसि च ।
 १०२ वा छन्दसि ।

१०३ अमि पूर्वः ।
 १०४ संप्रसारणाच्च ।
 १०५ एङः पदान्तादिति ।
 १०६ ङसिङसोश्च ।
 १०७ ऋत उत् ।
 १०८ ख्यत्यात् परस्य ।
 १०९ अतो रोरप्लुतादप्लुते ।
 ११० हशि च ।
 १११ प्रकृत्याऽन्तःपादम् ।
 ११२ अव्यादवद्यादवक्रमुरत्रताय-
 मवन्त्ववस्युषु च ।
 ११३ यजुष्युरः ।
 ११४ आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे-
 अस्वेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे ।
 ११५ अङ्ग इत्यादौ च ।
 ११६ अनुदात्ते च कुधपरे ।
 ११७ अवपथासि च ।
 ११८ सर्वत्र विभाषा गोः ।
 ११९ अवङ् स्फोटायनस्य ।
 १२० इन्द्रे च ।
 १२१ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ।
 १२२ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ।
 १२३ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य
 ह्रस्वश्च ।
 १२४ ऋत्यकः ।
 १२५ अप्लुतवदुपस्थिते ।

- १२६ ई३ चाक्रवर्मणस्य ।
 १२७ दिव उत् ।
 १२८ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्स-
 मासे हलि ।
 १२९ स्यश्छन्दसि बहुलम् ।
 १३० सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम् ।
 १३१ सुट् कात् पूर्वः ।
 १३२ सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे ।
 १३३ समवाये च ।
 १३४ उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्या-
 ध्याहारेषु ।
 १३५ किरतौ लवने ।
 १३६ हिंसायां प्रतेश्च ।
 १३७ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वा-
 लेखने ।
 १३८ कुस्तुम्बुरूणि जातिः ।
 १३९ अपरस्पराः क्रियासानत्ये ।
 १४० गोष्पदं सेवितासेवितप्रमा-
 नेषु ।
 १४१ आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ।
 १४२ आश्चर्यमनित्ये ।
 १४३ वर्चस्केऽवस्करः ।
 १४४ अपस्करो रथाङ्गम् ।
 १४५ विष्किरः शकुनौ वा ।
 १४६ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ।
 १४७ प्रतिष्कशश्च कशोः ।
 १४८ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ।
 १४९ मस्करमस्करिणौ वेणुपरित्रा-
 जकयोः ।
 १५० कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ।
 १५१ पारस्करप्रभृतौ च संज्ञा-
 याम् ।
 १५२ अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ।
 १५३ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ।
 १५४ उञ्छादीनां च ।
 १५५ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ।
 १५६ धातोः ।
 १५७ चितः ।
 १५८ तद्धितस्य ।
 १५९ कितः ।
 १६० तिसृभ्यो जसः ।
 १६१ चतुरः शसिः ।
 १६२ सावेकाचस्तृतीयादिवि-
 भक्तिः ।
 १६३ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यत-
 रस्यामनित्यसमासे ।
 १६४ अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्था-
 नम् ।
 १६५ ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैशुभ्यः ।
 १६६ अष्टनो दीर्घात् ।
 १६७ शतुरनुमो नद्यजादी ।
 १६८ उदात्तयणो हल्पूर्वात् ।
 १६९ नोङ्धात्वोः ।
 १७० ह्रस्वतुङ्भ्यां मतुप् ।

१७१ नामन्यतरस्याम् ।
 १७२ ड्याश्छन्दसि बहुलम् ।
 १७३ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ।
 १७४ झल्युपोत्तमम् ।
 १७५ विभाषा भाषायाम् ।
 १७६ न गोश्वन्साववर्णराडङ्कुङ्-
 कृद्भ्यः ।
 १७७ दिवो झल् ।
 १७८ नृ चाऽन्यतरस्याम् ।
 १७९ तित् स्वरितम् ।
 १८० तास्यनुदात्तेऽन्दिददुपदेशाल-
 सार्वधातुकमनुदात्तमहिन्व-
 डोः ।
 १८१ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ।
 १८२ स्वपादिर्हिसामच्यनिटि ।
 १८३ अभ्यस्तानामादिः ।
 १८४ अनुदात्ते च ।
 १८५ सर्वस्य सुपि ।
 १८६ भीहीभृदुमदजनधनदरिद्रा-
 जागरां प्रत्ययात् पूर्व पिति ।
 १८७ लिति ।
 १८८ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ।
 १८९ अचः कर्तृयकि ।
 १९० थलि च सेटीडन्तो वा ।
 १९१ जित्यादिर्नित्यम् ।
 १९२ आमन्त्रितस्य च ।
 १९३ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ।

१९४ अन्तश्च तवै युगपत् ।
 १९५ श्रयो निवासे ।
 १९६ जयः करणम् ।
 १९७ वृषादीनां च ।
 १९८ संज्ञायामुपमानम् ।
 १९९ तिष्ठा च द्व्यजनात् ।
 २०० शुष्कधृष्टौ ।
 २०१ आशितः कर्ता ।
 २०२ रिक्ते विभाषा ।
 २०३ जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ।
 २०४ नित्यं मन्त्रे ।
 २०५ युष्मदस्मदोर्ङसि ।
 २०६ डयि च ।
 २०७ यतोऽनावः ।
 २०८ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ।
 २०९ विभाषा वेण्विन्धानयोः ।
 २१० त्यागरागहासकुहश्वठकथा-
 नाम् ।
 २११ उपोत्तमं रिति ।
 २१२ चङ्यन्यतरस्याम् ।
 २१३ मतोः पूर्वमात् संज्ञायां स्त्रि-
 याम् ।
 २१४ अन्तोऽवत्याः ।
 २१५ ईवत्याः ।
 २१६ चौ ।
 २१७ समासस्य ।

द्वितीयः पादः ।

- १ बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ।
- २ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्त-
म्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ।
- ३ वर्णो वर्णेष्वनेते ।
- ४ गाधलवणयोः प्रमाणे ।
- ५ दायाद्यं दायादे ।
- ६ प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ।
- ७ पदेऽपदेशे ।
- ८ निवाते वातत्राणे ।
- ९ शारदेऽनार्तवे ।
- १० अध्वर्युकषाययोजार्तौ ।
- ११ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ।
- १२ द्विगौ प्रमाणे ।
- १३ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ।
- १४ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुं-
सके ।
- १५ सुखप्रिययोर्हिते ।
- १६ प्रीतौ च ।
- १७ स्वं स्वामिनि ।
- १८ पत्यावैश्वर्ये ।
- १९ न भूवाकूचिद्विधिषु ।
- २० वा भुवनम् ।
- २१ आशङ्कवाधनेदीयःसु सं-
भावे ।
- २२ पूर्वं भूतपूर्वं ।
- २३ सविधसनीडसमर्यादसवेश-

सदेशेषु सामीप्ये ।

- २४ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ।
- २५ श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे
कर्मधारये ।
- २६ कुमारश्च ।
- २७ आदिः प्रत्येनसि ।
- २८ पूगेष्वन्यतरस्याम् ।
- २९ इगन्तकालकपालभगालश-
रावेषु द्विगौ ।
- ३० बह्वन्यतरस्याम् ।
- ३१ दिष्टिवितस्त्योश्च ।
- ३२ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धे-
ष्वकालात् ।
- ३३ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहो-
रात्रावयवेषु ।
- ३४ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धक-
वृष्णिषु ।
- ३५ संख्या ।
- ३६ आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासी ।
- ३७ कार्तकौजपादयश्च ।
- ३८ महान् ब्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजा-
बालभारभारतहैलिहिलरौर-
वप्रवृद्धेषु ।
- ३९ श्रुलकश्च वैश्वदेवे ।
- ४० उष्ट्रः सादिवाम्योः ।
- ४१ गौः सादसादिसारथिषु ।
- ४२ कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजर-

त्यश्लीलवद्वरूपापारेवडवा-
तैतिलकद्रुःपण्यकम्बलो-
दासीभाराणां च ।

- ४३ चतुर्थी तदर्थे ।
४४ अर्थे ।
४५ के च ।
४६ कर्मधारयेऽनिष्टा ।
४७ अहीने द्वितीया ।
४८ तृतीया कर्मणि ।
४९ गतिरनन्तरः ।
५० तादौ च निति कृत्यतौ ।
५१ तवै चाऽन्तश्च युगपत् ।
५२ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ।
५३ न्यधी च ।
५४ ईषदन्यतरस्याम् ।
५५ हिरण्यपरिमाणं धने ।
५६ प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ।
५७ कतरकतमौ कर्मधारये ।
५८ आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः ।
५९ राजा च ।
६० षष्ठी प्रत्येनसि ।
६१ के नित्यार्थे ।
६२ ग्रामः शिल्पिनि ।
६३ राजा च प्रशंसायाम् ।
६४ आदिखदात्तः ।
६५ सप्तमी हारिणौ धर्म्येऽहरणे ।
६६ युक्ते च ।

- ६७ विभाषाऽध्यक्षे ।
६८ पापं च शिल्पिनि ।
६९ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु
क्षेपे ।
७० अङ्गानि मैरेये ।
७१ भक्ताख्यास्तदर्थेषु ।
७२ गोविडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ।
७३ अके जीविकार्थे ।
७४ प्राचां क्रीडायाम् ।
७५ अणि नियुक्ते ।
७६ शिल्पिनि चाऽकृत्रः ।
७७ संज्ञायां च ।
७८ गोतन्तियवं पाले ।
७९ णिनिः ।
८० उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव ।
८१ युक्तारोह्यादयश्च ।
८२ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे ।
८३ अन्त्यात् पूर्वं बहुचः ।
८४ ग्रामेऽनिवसन्तः ।
८५ घोषादिषु च ।
८६ छात्र्यादयः शालायाम् ।
८७ प्रस्थेऽवृद्धमकक्यादीनाम् ।
८८ मालादीनां च ।
८९ अमहन्नवं नगरेऽनुदीचाम् ।
९० अर्मे चाऽवर्णं द्व्यचक्ष्यच् ।
९१ न भूताधिकसंजीवमद्राश्म-
कज्जलम् ।

- ९२ अन्तः ।
 ९३ सर्वं गुणकात्स्न्ये ।
 ९४ संज्ञायां गिरिनिकाययोः ।
 ९५ कुमार्यां वयसि ।
 ९६ उदकेऽकेवले ।
 ९७ द्विगौ क्रतौ ।
 ९८ सभायां नपुंसके ।
 ९९ पुरे प्राचाम् ।
 १०० अरिष्टगौडपूर्वे च ।
 १०१ न हास्तिनफलकमादेयाः ।
 १०२ कुसूलकूपकुम्भशालं विले ।
 १०३ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्या-
 नचानराटेषु ।
 १०४ आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासि-
 नि ।
 १०५ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ।
 १०६ बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ।
 १०७ उदराश्वेषुषु क्षेपे ।
 १०८ नदी बन्धुनि ।
 १०९ निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ।
 ११० उत्तरपदादिः ।
 १११ कर्णो वर्णलक्षणात् ।
 ११२ संज्ञौपम्ययोश्च ।
 ११३ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ।
 ११४ शृङ्गमवस्थायां च ।
 ११५ नञो जरमरमित्रमृताः ।
 ११६ सोर्मनसी अलोमोपसी ।
 ११७ कत्वादयश्च ।
 ११८ आद्युदात्तं द्वयच् छन्दसि ।
 ११९ वीरवीर्यौ च ।
 १२० कूलतीरतूलमूलशालाश्वसम-
 मव्ययीभावे ।
 १२१ कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्वि-
 गौ ।
 १२२ तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ।
 १२३ कन्या च ।
 १२४ आदिश्चिङ्गणादीनाम् ।
 १२५ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हा-
 याम् ।
 १२६ चीरमुपमानम् ।
 १२७ पललसूपशाकं मिश्रे ।
 १२८ कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम् ।
 १२९ अकर्मधारये राज्यम् ।
 १३० वग्यादयश्च ।
 १३१ पुत्रः पुम्भ्यः ।
 १३२ नाऽचार्यराजत्विक्संयुक्तज्ञा-
 त्याख्येभ्यः ।
 १३३ चूर्णादीन्यप्राणिबध्नाः ।
 १३४ षट् च काण्डादीनि ।
 १३५ कुण्डं वनम् ।
 १३६ प्रकृत्या भगालम् ।
 १३७ शितेर्नित्यावहज् बहुव्रीहावभ-
 सत् ।

- १३८ गतिकारकोपपदान् कृत् ।
 १३९ उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ।
 १४० देवताद्वन्द्वे च ।।
 १४१ नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथि-
 वोरुद्रपूषमन्थिषु ।
 १४२ अन्तः ।
 १४३ थाथघञ्काजवित्रकाणाम् ।
 १४४ सूपमानात् कः ।
 १४५ संज्ञायामनाचितादीनाम् ।
 १४६ प्रवृद्धादीनां च ।
 १४७ कारकाद्वत्तश्रुतयोरेवाऽशिषि ।
 १४८ इत्थंभूतेन कृतमिति च ।
 १४९ अनो भावकर्मवचनः ।
 १५० मन्तिकन्व्याख्यानशयनासन-
 स्थानयाजकादिक्रीताः ।
 १५१ सप्तम्याः पुण्यम् ।
 १५२ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ।
 १५३ मिश्रं चाऽनुपसर्गमसंधौ ।
 १५४ नजो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्ह-
 हितालमर्थास्तद्धिताः ।
 १५५ ययतोश्चाऽतदर्थे ।
 १५६ अच्कावशक्तौ ।
 १५७ आक्रोशे च ।
 १५८ संज्ञायाम् ।
 १५९ कृत्योक्तेष्णुच्चावार्वाद्यश्च ।
 १६० विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ।
 १६१ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः
 प्रथमपूरणयोः क्रियागणने ।
 १६२ संख्यायाः स्तनः ।
 १६३ विभाषा छन्दसि ।
 १६४ संज्ञायां मित्राजिनयोः ।
 १६५ व्यवायिनोऽन्तरम् ।
 १६६ मुखं स्वाङ्गम् ।
 १६७ नाऽव्ययदिकशब्दगोमहत्स्थूल-
 मुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ।
 १६८ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ।
 १६९ जातिकालसुखादिभ्योऽना-
 च्छादनात् कोऽकृतमितप्रति-
 पन्नाः ।
 १७० वा जाते ।
 १७१ नञ्सुभ्याम् ।
 १७२ कपि पूर्वम् ।
 १७३ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात् पूर्वम् ।
 १७४ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ।
 १७५ न गुणादयोऽवयवाः ।
 १७६ उपसर्गात् स्वाङ्गं ध्रुवमपशुं ।
 १७७ वनं समासे ।
 १७८ अन्तः ।
 १७९ अन्तश्च ।
 १८० न निविभ्याम् ।
 १८१ परेरभितोभावि मण्डलम् ।
 १८२ प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ।
 १८३ निरुदकादीनि च ।

- १८४ अभेर्मुसम् ।
 १८५ अपाञ्च ।
 १८६ स्फिगपूतवीणाञ्जोऽध्वकुक्षि-
 सीरनामनाम च ।
 १८७ अधेरुपरिस्थम् ।
 १८८ अनोरप्रधानकनीयसी ।
 १८९ पुरुषश्चाऽन्वादिष्टः ।
 १९० अतेरकृत्पदे ।
 १९१ नेरनिधाने ।
 १९२ प्रतेरंश्वाद्यस्तत्पुरुषे ।
 १९३ उपाद् द्व्यजजिनमगौरादयः ।
 १९४ सोरवक्षेपणे ।
 १९५ विभाषोत्पुच्छे ।
 १९६ द्वित्रिभ्यां पादन्मूर्धसु बहु-
 व्रीहौ ।
 १९७ सक्थं चाऽक्रान्तात् ।
 १९८ परादिश्छन्दसि बहुलम् ।

तृतीयः पादः ।

- १ अलुगुत्तरपदे ।
 २ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ।
 ३ ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृती-
 यायाः ।
 ४ मनसः संज्ञायाम् ।
 ५ आज्ञायिनि च ।
 ६ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः
 परस्य च ।

- ७ हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम्
 ८ कारनास्त्रि च प्राचां हलादौ ।
 ९ मध्याद् गुरौ ।
 १० अमूर्धमस्तकात् स्वाङ्गादकामे ।
 ११ बन्धे च विभाषा ।
 १२ तत्पुरुषे कृति बहुलम् ।
 १३ प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ।
 १४ विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ।
 १५ व्रकालतनेषु कालनाम्नः ।
 १६ शयवासवासिष्वकालात् ।
 १७ नेन्सिद्धवघ्नातिषु च ।
 १८ स्वे च भाषायाम् ।
 १९ षष्ठ्या आक्रोशे ।
 २० पुत्रेऽन्यतरस्याम् ।
 २१ ऋतो विद्यायोनिस्वन्धेभ्यः ।
 २२ विभाषा स्वसृपत्योः ।
 २३ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ।
 २४ देवताद्वन्द्वे च ।
 २५ ईदग्नेः सोमवरुणयोः ।
 २६ इद् वृद्धौ ।
 २७ दिवो द्यावा ।
 २८ दिवसश्च पृथिव्याम् ।
 २९ उषासोपसः ।
 ३० मातरपितराबुदीचाम् ।
 ३१ पितरामातरा च छन्दसि ।
 ३२ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादन्

- इ समानाधिकरणे स्त्रियामपू-
रणीप्रियादिषु ।
३३ तसिलादिष्वाकृत्यसुचः ।
३४ क्यङ्मानिनोश्च ।
३५ न कोपधायाः ।
३६ संज्ञापूरण्योश्च ।
३७ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धित-
स्याऽरक्तविकारे ।
३८ स्वाङ्गाच्चेतः ।
३९ जातेश्च ।
४० पुंवत् कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ।
४१ धरूपकल्पचेलङ्बुवगोत्रमत-
हतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ।
४२ नद्याः शेषस्याऽन्यतरस्याम् ।
४३ उगितश्च ।
४४ आन्महतः समानाधिकरण-
जातीययोः ।
४५ द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्य-
शीत्योः ।
४६ त्रैस्त्रयः ।
४७ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ
सर्वेषाम् ।
४८ हृदयस्य हृल्लेखयदणलासेषु ।
४९ वा शोकप्यङ्गरेषु ।
५० पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ।
५१ पद्यत्यतदर्थे ।

- ५२ हिमकाषिहतिषु च ।
५३ ऋचः शे ।
५४ वा घोषमिश्रशब्देषु ।
५५ उदकस्योदः संज्ञायाम् ।
५६ पेपंवासवाहनधिषु च ।
५७ एकहलादौ पूरयितव्येऽन्य-
तरस्याम् ।
५८ मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभार-
हारवीवधगाहेषु च ।
५९ इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ।
६० एकतद्धिते च ।
६१ ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ।
६२ त्वे च ।
६३ इष्टकेषीकामालानां चिततूल-
भारिषु ।
६४ खित्यनव्ययस्य ।
६५ अर्द्धिषदजन्तस्य मुम् ।
६६ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ।
६७ वाचंयमपुरंदरौ च ।
६८ कारे सत्यागदस्य ।
६९ श्येनतिलस्य पाते जे ।
७० रात्रेः कृति विभाषा ।
७१ नलोपो नञः ।
७२ तस्मान्नुडचि ।
७३ नभ्राणनपात्रवेदानासत्यानमु-
चिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रन-
क्रनाकेषु प्रकृत्या ।

- ७४ एकादिश्चैकस्य चाऽदुक ।
 ७५ नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ।
 ७६ सहस्य सः संज्ञायाम् ।
 ७७ ग्रन्थान्ताधिके च ।
 ७८ द्वितीये चाऽनुपाख्ये ।
 ७९ अव्ययीभावे चाऽकाले ।
 ८० वोपसर्जनस्य ।
 ८१ प्रकृत्याऽशिषि ।
 ८२ समानस्य छन्दस्यमूर्धप्रभृ-
 त्युदकेषु ।
 ८३ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनाम-
 गोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनव-
 न्धुषु ।
 ८४ चरणे ब्रह्मचारिणि ।
 ८५ तीर्थे ये ।
 ८६ विभाषोदरे ।
 ८७ हृद्दशवतुषु ।
 ८८ इदंकिमोरीशकी ।
 ८९ आ सर्वनाम्नः ।
 ९० विष्वग्देवयोश्च ढेरव्यञ्जतौ
 वप्रत्यये ।
 ९१ समः समि ।
 ९२ तिरसस्तिर्यलोपे ।
 ९३ सहस्य सन्निः ।
 ९४ सध मादस्थयोदछन्दसि ।
 ९५ द्व्यन्तरुपसर्गोभ्योऽप ईत् ।
 ९६ ऊदनोदेशे ।

- ९७ अवष्टुचतृतीयास्थस्याऽन्यस्य
 दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुको-
 तिकारकरागच्छेषु ।
 ९८ अर्थे विभाषा ।
 ९९ कोः कत् तत्पुरुषेऽचि ।
 १०० रथवदयोश्च ।
 १०१ तृणे च जातौ ।
 १०२ का पथ्यक्षयोः ।
 १०३ ईषदर्थे ।
 १०४ विभाषा पुरुषे ।
 १०५ कवं चोष्णे ।
 १०६ पथि च छन्दसि ।
 १०७ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ।
 १०८ संख्याविंसायपूर्वस्याहस्याऽह-
 न्यतरस्यां डौ ।
 १०९ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।
 ११० सहिवहोरोदवर्णस्य ।
 १११ साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे ।
 ११२ संहितायाम् ।
 ११३ कर्णे लक्षणस्याऽविष्टाष्टपञ्चम-
 णिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्युवस्व-
 स्तिकस्य ।
 ११४ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहि-
 तनिषु कौ ।
 ११५ वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकि-
 शुलकादीनाम् ।
 ११६ बले ।

११७ मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ।

११८ शरादीनां च ।

११९ इको वहेऽपीलोः ।

१२० उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहु-
लम् ।

१२१ इकः काशे ।

१२२ दस्ति ।

१२३ अष्टनः संज्ञायाम् ।

१२४ छन्दसि च ।

१२५ चित्तेः कपि ।

१२६ विश्वस्य वसुराटोः ।

१२७ नरे संज्ञायाम् ।

१२८ मित्रे चर्षी ।

१२९ मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदे-
व्यस्य मतौ ।

१३० ओषधेश्च विभक्तावप्रथमाया-
म् ।

१३१ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरु-
ष्याणाम् ।

१३२ इकः सुत्रि ।

१३३ द्व्यचोऽतस्तिडः ।

१३४ निपातस्य च ।

१३५ अन्येषामपि दृश्यते ।

१३६ चौ ।

१३७ संप्रसारणस्य ।

चतुर्थः पादः ।

१ अङ्गस्य ।

२ हलः ।

३ नामि ।

४ न तिसृचतसृ ।

५ छन्दस्युभयथा ।

६ नृ च ।

७ नोपधायाः ।

८ सर्वनामस्थाने चाऽसंबुद्धौ ।

९ वा षपूर्वस्य निगमे ।

१० सान्तमहतः संयोगस्य ।

११ अप्तृन्तृच्छसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्ष-
तृहोत्पोत्प्रशास्तृणाम् ।

१२ इन्हन्पूर्वार्थम्णां शौ ।

१३ सौ च ।

१४ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः ।

१५ अनुनासिकस्य किञ्चलोः

क्विति ।

१६ अङ्गनगमां सनि ।

१७ तनोतेर्विभाषा ।

१८ क्रमश्च क्वि ।

१९ च्छोः शूडनुनासिके च ।

२० ज्वरत्वरस्त्रिव्यविमवामुपधा-
याश्च ।

२१ राल्लोपः ।

२२ असिद्धवदत्राऽभात् ।

२३ श्चान्नलोपः ।

२४ अनिदितां हल उपधायाः
कृति ।

२५ देशसञ्जस्वञां शपि ।

२६ रञ्जेश्च ।

२७ घञि च भावकरणयोः ।

२८ स्यदो जडे ।

२९ अवोदैधौघप्रश्नप्रथहिमश्चथाः ।

३० नाऽञ्चेः पूजायाम् ।

३१ क्तिव स्कन्दिस्यन्दोः ।

३२ जान्तनशां विभाषा ।

३३ मञ्जेश्च चिणि ।

३४ शास इदङ्गहलोः ।

३५ शा हौ ।

३६ हन्तेर्जः ।

३७ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्या-
दीनामनुनासिकलोपो झलि
कृति ।

३८ वा ल्यपि ।

३९ न क्तिचि दीर्घश्च ।

४० गमः कौ ।

४१ विडुनोरनुनासिकस्याऽत् ।

४२ जनसनखनां सञ्जलोः ।

४३ ये विभाषा ।

४४ तनोतेर्यकि ।

४५ सनः क्तिचि लोपश्चाऽस्याऽन्य-
तरस्याम् ।

४६ आर्धधातुके ।

४७ भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतर-
स्याम् ।

४८ अतो लोपः ।

४९ यस्य हलः ।

५० क्यस्य विभाषा ।

५१ णेरनिटि ।

५२ निष्ठायां सेटि ।

५३ जनिना मन्त्रे ।

५४ शमिता यज्ञे ।

५५ अयामन्तालवाच्येत्स्विष्णुषु ।

५६ ल्यपि लघुपूर्वात् ।

५७ विभाषाऽपः ।

५८ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ।

५९ क्षियः ।

६० निष्ठायामण्यदर्थे ।

६१ वाऽऽकोशदैर्न्ययोः ।

६२ स्यसिचसीयुत्तासिषु भावक-
र्मणोरुपदेशेऽज्जनग्रहदशां
वा चिण्वदिट् च ।

६३ दीङो युडचि कृति ।

६४ आतो लोप इटि च ।

६५ ईद्यति ।

६६ घुमास्थागापाजहातिसां हलि ।

६७ एलिङि ।

६८ वाऽन्यस्य संयोगादेः ।

६९ न ल्यपि ।

७० मयतेरिदन्यतरस्याम् ।

७१ लुङ्लङ्लङ्स्वङुदात्तः ।
 ७२ आङजादीनाम् ।
 ७३ छन्दस्यपि दृश्यते ।
 ७४ न माङचोगे ।
 ७५ बहुलं छन्दस्यमाङचोगेऽपि ।
 ७६ इरयो रे ।
 ७७ अचि श्रुधातुभ्रवां खोरियङु-
 वङौ ।
 ७८ अभ्यासस्याऽसवर्णे ।
 ७९ स्त्रियाः ।
 ८० वाऽम्शसोः ।
 ८१ इणो यण् ।
 ८२ एरतेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ।
 ८३ ओः सुपि ।
 ८४ वर्षाभ्वश्च ।
 ८५ न भूसुधियोः ।
 ८६ छन्दस्युभयथा ।
 ८७ हुश्नुवोः सार्वधातुके ।
 ८८ भ्रुवो वुग् लुङ्ङितोः ।
 ८९ ऊदुपधाया गोहः ।
 ९० दोषो णौ ।
 ९१ वा चित्तविरागे ।
 ९२ मितां ह्रस्वः ।
 ९३ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्या-
 म् ।
 ९४ खचि ह्रस्वः ।
 ९५ हादो निष्ठायाम् ।

९६ छादेर्धेऽद्वयुपसर्गस्य ।
 ९७ इस्मन्त्रन्किषु च ।
 ९८ गमहनजनखनघसां लोपः
 कृत्यनङि ।
 ९९ तनिपत्योश्छन्दसि ।
 १०० घसिमसोर्हलि च ।
 १०१ हुङ्गल्भ्यो हेर्धिः ।
 १०२ श्रुष्टणुपृक्वृभ्यश्छन्दसि ।
 १०३ अङितश्च ।
 १०४ चिणो लुक् ।
 १०५ अतो हेः ।
 १०६ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ।
 १०७ लोपश्चाऽस्याऽन्यतरस्यां भ्रुवोः ।
 १०८ नित्यं करोतेः ।
 १०९ ये च ।
 ११० अत उत सार्वधातुके ।
 १११ श्रसोरलोपः ।
 ११२ श्राभ्यस्तयोरातः ।
 ११३ ई हल्यघोः ।
 ११४ इदरिद्रस्य ।
 ११५ भियोऽन्यतरस्याम् ।
 ११६ जहातेश्च ।
 ११७ आ च हौ ।
 ११८ लोपो यि ।
 ११९ ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ।
 १२० अत एकहल्मध्येऽनादेशादे-
 लिटि ।

- १२१ थलि च सेटि ।
 १२२ तृफलभजत्रपश्च ।
 १२३ राधो हिंसायाम् ।
 १२४ वा जृभ्रमुत्रसाम् ।
 १२५ फणां च सप्तानाम् ।
 १२६ न शसददवादिगुणानाम् ।
 १२७ अर्बणस्त्रसावनजः ।
 १२८ मघवा बहुलम् ।
 १२९ भस्य ।
 १३० पादः पत् ।
 १३१ वसोः संप्रसारणम् ।
 १३२ वाह ऊढ ।
 १३३ श्वयुवमघोनामतद्धिते ।
 १३४ अलोपोऽनः ।
 १३५ पपूर्वहन्धृतराशामणि ।
 १३६ विभाषा छिद्योः ।
 १३७ न संयोगाद्वमन्तात् ।
 १३८ अचः ।
 १३९ उद ईत् ।
 १४० आतो धातोः ।
 १४१ मन्त्रेष्वाल्वादेरात्मनः ।
 १४२ ति विंशतेर्दिति ।
 १४३ टेः ।
 १४४ नस्तद्धिते ।
 १४५ अहृष्टखोरेव ।
 १४६ ओर्गुणः ।
 १४७ हे लोपोऽकट्टाः ।

- १४८ यस्येति च ।
 १४९ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां
 य उपधायाः ।
 १५० हलस्तद्धितस्य ।
 १५१ आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति ।
 १५२ क्यचव्योश्च ।
 १५३ विल्वकादिभ्यश्छस्य लृक् ।
 १५४ तुरिष्ठेमेयःसु ।
 १५५ टेः ।
 १५६ स्थूलदूरयुवहस्वक्षिप्रश्रुदाणां
 यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ।
 १५७ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृ-
 द्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थ-
 स्फवर्बहिगर्ववित्रद्वाधि-
 वृन्दाः ।
 १५८ बहोर्लोपो भू च बहोः ।
 १५९ इष्टस्य यिट् च ।
 १६० ज्यादादीयसः ।
 १६१ र ऋतो हलादेर्लघोः ।
 १६२ विभाषर्जोश्छन्दसि ।
 १६३ प्रकृत्यैकाच् ।
 १६४ इतण्यनपत्ये ।
 १६५ गाथिविदथिकेशिगणिपणि-
 नश्च ।
 १६६ संयोगादिश्च ।
 १६७ अन् ।
 १६८ ये चाऽभावकर्मणोः ।
 १६९ आत्माध्वानौ खे ।

- १७० नमपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ।
 १७१ ब्राह्मोऽजातौ ।
 १७२ कर्मस्ताच्छील्ये ।
 १७३ औक्षमनपत्ये ।
 १७४ दाण्डिनायनहास्तिनायनाथ-

- वर्णिजैह्याशिनेयवाशिनाय-
 निभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैश्वाः
 कमैत्रेयहिरण्मयानि ।
 १७५ ऋत्वास्त्ववास्त्वमाध्वी-
 हिरण्ययानि च्छन्दसि ।

सप्तमोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ युवोरनाकौ ।
 २ आयनेयीनीयियः फढखछघां
 प्रत्ययादीनाम् ।
 ३ शोऽन्तः ।
 ४ अदभ्यस्तात् ।
 ५ आत्मनेपदेष्वनतः ।
 ६ शीडो रुट् ।
 ७ वेत्तेर्विभाषा ।
 ८ बहुलं छन्दसि ।
 ९ अतो भिस ऐस् ।
 १० बहुलं छन्दसि ।
 ११ नेदमदसोरकोः ।
 १२ टाडसिडसामिनात्स्याः ।
 १३ डेर्यः ।
 १४ सर्वनाम्नः स्मै ।
 १५ डसिडयोः स्मात्स्मिनी ।
 १६ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ।
 १७ जसः शी ।

- १८ औड आपः ।
 १९ नपुंसकाच्च ।
 २० जइशसोः शिः ।
 २१ अग्राभ्य औश् ।
 २२ षड्भ्यो लुक् ।
 २३ स्वमोर्नपुंसकात् ।
 २४ अतोऽम् ।
 २५ अदूढतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ।
 २६ नेतराच्छन्दसि ।
 २७ युष्मदस्मद्भ्यां डसोऽश् ।
 २८ डेप्रथमयोरम् ।
 २९ शसो न ।
 ३० भ्यसो भ्यम् ।
 ३१ पञ्चभ्या अत् ।
 ३२ एकवचनस्य च ।
 ३३ साम आकम् ।
 ३४ आत औ णलः ।
 ३५ तुह्योस्तातड्डाशिष्यन्यतर-
 स्याम् ।

- ३६ विदेः शतुर्वसुः ।
 ३७ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ।
 ३८ क्त्वापि छन्दसि ।
 ३९ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णच्छेया-
 डाङ्यायाजालः ।
 ४० अमो मश् ।
 ४१ लोपस्त आत्मनेपदेषु ।
 ४२ ध्वमो ध्वात् ।
 ४३ यजध्वैनमिति च ।
 ४४ तस्य तात् ।
 ४५ तप्तनप्तनथनाश्च ।
 ४६ इदन्तो मसि ।
 ४७ क्त्वो यक् ।
 ४८ इष्टीनमिति च ।
 ४९ स्नात्त्यादयश्च ।
 ५० आज्ञसेरसुक् ।
 ५१ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्म-
 प्रीतौ क्यचि ।
 ५२ आमि सर्वनाम्नः सुट् ।
 ५३ त्रेस्त्रयः ।
 ५४ ह्रस्वनद्यापो नुट् ।
 ५५ षट्चतुर्भ्यश्च ।
 ५६ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ।
 ५७ गोः पादान्ते ।
 ५८ इदितो नुम् धातोः ।
 ५९ शे मुचादीनाम् ।
 ६० मस्जिनशोर्झलि ।

- ६१ रधिजभोरचि ।
 ६२ नेत्यलिटि रधेः ।
 ६३ रभेरशञ्जितोः ।
 ६४ लभेश्च ।
 ६५ आङो यि ।
 ६६ उपात् प्रशंसायाम् ।
 ६७ उपसर्गात् खल्वञोः ।
 ६८ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ।
 ६९ विभाषा चिण्णमुलोः ।
 ७० उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधा-
 तोः ।
 ७१ युजेरसमासे ।
 ७२ नपुंसकस्य झलचः ।
 ७३ इकोऽचि विभक्तौ ।
 ७४ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुं-
 वद् गालवस्य ।
 ७५ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङु-
 दात्तः ।
 ७६ छन्दस्यपि दृश्यते ।
 ७७ ई च द्विवचने ।
 ७८ नाऽभ्यस्ताच्छतुः ।
 ७९ वा नपुंसकस्य ।
 ८० आच्छीनद्योर्नुम् ।
 ८१ शप्श्यनोर्नित्यम् ।
 ८२ सावनङुहः ।
 ८३ इक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि ।
 ८४ दिव औत् ।

- ८५ पथिमथ्यभुक्षामात् ।
 ८६ इतोऽत् सर्वनामस्थाने ।
 ८७ थो न्यः ।
 ८८ भस्य टेलोपः ।
 ८९ पुंसोऽसुङ् ।
 ९० गोतो णित् ।
 ९१ णलुत्तमो वा ।
 ९२ सख्युरसम्बुद्धौ ।
 ९३ अनङ् सौ ।
 ९४ ऋदुशानस्पुरुदंसोऽनेहसां च ।
 ९५ तृज्वत् कोष्ठः ।
 ९६ स्त्रियां च ।
 ९७ विभाषा तृतीयादिष्वचि ।
 ९८ चतुरनडुहोरामुदात्तः ।
 ९९ अम् संबुद्धौ ।
 १०० ऋत इद्धातोः ।
 १०१ उपधायाश्च ।
 १०२ उदोष्ठचपूर्वस्य ।
 १०३ बहुलं छन्दसि ।

द्वितीयः पादः ।

- १ सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ।
 २ अतो ह्रान्तस्य ।
 ३ वदव्रजहलन्तस्याऽचः ।
 ४ नेटि ।
 ५ ह्यचन्तक्षणश्वसजागृणिश्ये-
 दिताम् ।

- ६ ऊर्णोतेर्विभाषा ।
 ७ अतो हलादेर्लघोः ।
 ८ नेङ् वशि कृति ।
 ९ तितुव्रतथसिसुसरकसेषु च ।
 १० एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ।
 ११ श्युकः किति ।
 १२ सनि ग्रहगुहोश्च ।
 १३ कसृभृष्टस्तुदुस्तुश्रुवो लिटि ।
 १४ श्वीदितो निष्ठायाम् ।
 १५ यस्य विभाषा ।
 १६ आदितश्च ।
 १७ विभाषा भावादिकर्मणोः ।
 १८ शुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्ट-
 विरिब्धफाण्टवाढानि मन्य-
 मनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरा-
 नायासभृशेषु ।
 १९ धृविशसी वैयात्ये ।
 २० दढः स्थूलबलयोः ।
 २१ प्रभौ परिवृढः ।
 २२ कृच्छ्रगहनयोः कषः ।
 २३ धुषिरविशब्दने ।
 २४ अर्देः संनिविभ्यः ।
 २५ अमेष्ट्याऽविदूयै ।
 २६ णेरध्ययने वृत्तम् ।
 २७ वा दान्तशान्तपूर्णदत्तस्पष्ट-
 च्छन्नज्ञप्ताः ।
 २८ रुष्यमत्वरसंधुषास्वनाम् ।

- २९ ह्रषेल्लोमसु ।
 ३० अपचितश्च ।
 ३१ हु ह्रदेश्छन्दसि ।
 ३२ अपरिहृताश्च ।
 ३३ सोमे ह्ररितः ।
 ३४ ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभि-
 तचत्तविकस्ता विशस्तृशंस्तृ-
 शास्तृतरुतृतरुतृवरुतृवरुतृ-
 वरुतृरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमि-
 तिवमित्यमितीति च ।
 ३५ आर्धधातुकस्येड् वलादेः ।
 ३६ स्नुक्मोरनात्मनेपदनिमित्ते ।
 ३७ ग्रहोऽलिटि दीर्घः ।
 ३८ वृतो वा ।
 ३९ न लिङि ।
 ४० सिचि च परस्मैपदेषु ।
 ४१ इट् सनि वा ।
 ४२ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ।
 ४३ ऋतश्च संयोगादेः ।
 ४४ स्वरतिसूतिसूयतिधूजूदितो
 वा ।
 ४५ रधादिभ्यश्च ।
 ४६ निरः कुषः ।
 ४७ इणिनष्टायाम् ।
 ४८ तीषसहलुभरुपरिषः ।
 ४९ सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्चिस्व-
 यूर्णुभरज्ञपिसनाम् ।
 ५० क्लिशः क्षयानिष्टयोः ।
 ५१ पूङश्च ।
 ५२ वसतिशुधोरिट् ।
 ५३ अञ्जेः पूजायाम् ।
 ५४ लुभो विमोहने ।
 ५५ जुवश्चयोः क्विप् ।
 ५६ उदितो वा ।
 ५७ सेऽसिचि कृतचृतच्छृदृदृद-
 नृतः ।
 ५८ गमेरिट् परस्मैपदेषु ।
 ५९ न वृद्धश्चतुर्भ्यः ।
 ६० तासि च कल्पः ।
 ६१ अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् ।
 ६२ उपदेशोऽवतः ।
 ६३ ऋतो भारद्वाजस्य ।
 ६४ बभूथाततन्थजगृभ्मववर्थेति
 निगमे ।
 ६५ विभाषा सृजिहशोः ।
 ६६ इडत्यर्तिव्ययतीनाम् ।
 ६७ वस्वेकाजाद्वसाम् ।
 ६८ विभाषा गमहनविद्विशाम् ।
 ६९ सनिससनिवांसम् ।
 ७० ऋद्धनोः स्ये ।
 ७१ अञ्जेः सिचि ।
 ७२ स्तुसुधूज्भ्यः परस्मैपदेषु ।

७३ यमरमनमातां सकृ च ।
 ७४ स्मिपूडूरञ्जवशां सनि ।
 ७५ किरश्च पञ्चभ्यः ।
 ७६ रुदादिभ्यः सार्वधातुके ।
 ७७ ईशः से ।
 ७८ ईड्जनोर्ध्वे च ।
 ७९ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ।
 ८० अतो येयः ।
 ८१ आतो ङितः ।
 ८२ आने मुक् ।
 ८३ ईदासः ।
 ८४ अष्टन आ विभक्तौ ।
 ८५ रायो हलि ।
 ८६ युष्मदस्मदोरनादेशे ।
 ८७ द्वितीयायां च ।
 ८८ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषा-
 याम् ।
 ८९ योऽचि ।
 ९० शेषे लोपः ।
 ९१ मपर्यन्तस्य ।
 ९२ युवावौ द्विवचने ।
 ९३ यूयवयौ जसि ।
 ९४ त्वाहौ सौ ।
 ९५ तुभ्यमहौ ङयि ।
 ९६ तवममौ ङसि ।
 ९७ त्वमावेकवचने ।
 ९८ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ।

९९ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ।
 १०० अचि र ऋतः ।
 १०१ जराया जरसन्यतरस्याम् ।
 १०२ त्यदादीनामः ।
 १०३ किमः कः ।
 १०४ कु तिहोः ।
 १०५ काऽति ।
 १०६ तदोः सः सावनन्त्ययोः ।
 १०७ अदस औ सुलोपश्च ।
 १०८ इदमो मः ।
 १०९ दश्च ।
 ११० यः सौ ।
 १११ इदोऽय् पुंसि ।
 ११२ अनाऽप्यकः ।
 ११३ हलि लोपः ।
 ११४ मृजेर्दृङ्गिः ।
 ११५ अचो ङ्णिति ।
 ११६ अत उपधायाः ।
 ११७ तद्धितेष्वचामादेः ।
 ११८ किति च ।

तृतीयः पादः ।

१ देविकांशिशपादित्यवाङ्दी-
 र्घसत्रश्रेयसामात् ।
 २ केकयमित्रयुप्रलयानां यादे-
 रियः ।

- ३ न खाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ
 तु ताभ्यामैच् ।
 ४ द्वारादीनां च ।
 ५ न्यग्रोधस्य च केवलस्य ।
 ६ न कर्मव्यतिहारे ।
 ७ स्वागतादीनां च ।
 ८ श्वादेरिञि ।
 ९ पदान्तस्याऽन्यतरस्याम् ।
 १० उत्तरपदस्य ।
 ११ अवयवाद् ऋतोः ।
 १२ सुसर्वाधाज्जनपदस्य ।
 १३ दिशोऽमद्राणाम् ।
 १४ प्राचां ग्रामनगराणाम् ।
 १५ संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च ।
 १६ वर्षस्याऽभविष्यति ।
 १७ परिमाणान्तस्याऽसंज्ञाशाणयोः ।
 १८ जे प्रोष्ठपदानाम् ।
 १९ ह्रद्गसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ।
 २० अनुशतिकादीनां च ।
 २१ देवताद्वन्द्वे च ।
 २२ नेन्द्रस्य परस्य ।
 २३ दीर्घाच्च वरुणस्य ।
 २४ प्राचां नगरान्ते ।
 २५ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभा-
 षितमुत्तरम् ।
 २६ अधात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा
 २७ नाऽतः परस्य ।
 २८ प्रवाहणस्य हे ।
 २९ तत्प्रत्ययस्य च ।
 ३० नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशल-
 निपुणानाम् ।
 ३१ यथातथयथापुरयोः पर्यायेण ।
 ३२ हनस्तोऽचिण्णलोः ।
 ३३ आतो युक् चिण्कृतोः ।
 ३४ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्या-
 ऽनाचमेः ।
 ३५ जनिवध्योश्च ।
 ३६ अर्तिह्वीव्लीरीकनूयीक्षमाग्यातां
 पुग् णौ ।
 ३७ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् ।
 ३८ वो विधूनने जुक् ।
 ३९ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्ने-
 हविपातने ।
 ४० भियो हेतुभये पुक् ।
 ४१ स्फायो वः ।
 ४२ शदेरगतौ तः ।
 ४३ रुहः पोऽन्यतरस्याम् ।
 ४४ प्रत्ययस्यात् कान् पूर्वस्यात् इदा-
 प्यसुपः ।
 ४५ न यासयोः ।
 ४६ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वा-
 याः ।
 ४७ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञपूर्वा-
 णामपि ।

- ४८ अभाषितपुंस्काच्च ।
 ४९ आदाचार्याणाम् ।
 ५० ठस्येकः ।
 ५१ इसुसुक्तान्तात् कः ।
 ५२ चजोः कु धिण्यतोः ।
 ५३ न्यङ्कादीनां च ।
 ५४ हो हन्तेर्जिण्येषु ।
 ५५ अभ्यासाच्च ।
 ५६ हेरचङि ।
 ५७ सन्लिटोर्जेः ।
 ५८ विभाषा चेः ।
 ५९ न क्रादेः ।
 ६० अजिब्रज्योश्च ।
 ६१ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ।
 ६२ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ।
 ६३ वञ्जैर्गतौ ।
 ६४ ओक उचः के ।
 ६५ ण्य आवश्यके ।
 ६६ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ।
 ६७ वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ।
 ६८ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ।
 ६९ भोज्यं भक्ष्ये ।
 ७० घोर्लोपो लेटि वा ।
 ७१ ओतः श्यनि ।
 ७२ कसस्याऽचि ।
 ७३ लुग् वा दुहदिहलिहगुहामात्म-
 नेपदे दन्त्ये ।

- ७४ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ।
 ७५ ष्टिवृक्कुमुचमां शिति ।
 ७६ क्रमः परस्मैपदेषु ।
 ७७ इषुगमियमां छः ।
 ७८ पात्राध्मास्थान्नादाण्डश्यर्तिस-
 र्तिशदसदां पिबजिघ्रधमति-
 ष्ठमनयच्छपश्यच्छधौशीयसी-
 दाः ।
 ७९ ज्ञाजनोर्जा ।
 ८० प्वादीनां ह्रस्वः ।
 ८१ मीनातेर्निगमे ।
 ८२ मिदेर्गुणः ।
 ८३ जुसि च ।
 ८४ सार्वधातुकार्धधातुकयोः ।
 ८५ जाग्रोऽविचिण्णलङ्गिस्तु ।
 ८६ पुगन्तलघूपधस्य च ।
 ८७ नाऽभ्यस्तस्याऽचि पिति सार्व-
 धातुके ।
 ८८ भूसुवोस्तिङि ।
 ८९ उतो वृद्धिर्लुकि हलि ।
 ९० ऊर्णोतेर्विभाषा ।
 ९१ गुणोऽपृक्ते ।
 ९२ तृणह इम् ।
 ९३ ब्रुव ईद् ।
 ९४ यङो वा ।
 ९५ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ।
 ९६ अस्तिसिचोऽपृक्ते ।

- ९७ बहुलं छन्दसि ।
 ९८ रुदश्च पञ्चभ्यः ।
 ९९ अङ् गार्ग्यगालवयोः ।
 १०० अङ् सर्वेषाम् ।
 १०१ अतो दीर्घो यञि ।
 १०२ सुपि च ।
 १०३ बहुवचने झल्येत् ।
 १०४ ओसि च ।
 १०५ आङि चाऽपः ।
 १०६ संबुद्धौ च ।
 १०७ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ।
 १०८ ह्रस्वस्य गुणः ।
 १०९ जसि च ।
 ११० ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः ।
 १११ घेङिति ।
 ११२ आप्नद्याः ।
 ११३ याडापः ।
 ११४ सर्वनाम्नः स्याङ्ढ्रस्वश्च ।
 ११५ विभाषा द्वितीयातृतीया-
 भ्याम् ।
 ११६ डेराम् नद्याङ्गीभ्यः ।
 ११७ इदुङ्ग्याम् ।
 ११८ औदच्च घेः ।
 ११९ आङो नाऽस्त्रियाम् ।

चतुर्थः पादः ।

१ णौ चङ्चुपधाया ह्रस्वः ।

- २ नाऽग्लोपिशास्वृदिताम् ।
 ३ भ्राजभासभाषदीपजीवमील-
 पीडामन्यतरस्याम् ।
 ४ लोपः पिवतेरीच्चाऽभ्यासस्य ।
 ५ तिष्ठतेरित् ।
 ६ जिघ्रतेर्वा ।
 ७ उर्ऋत् ।
 ८ नित्यं छन्दसि ।
 ९ दयतेर्दिगि लिटि ।
 १० ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ।
 ११ ऋच्छत्यृताम् ।
 १२ शूद्रां ह्रस्वो वा ।
 १३ केऽणः ।
 १४ न कपि ।
 १५ आपोऽन्यतरस्याम् ।
 १६ ऋदृशोऽङि गुणः ।
 १७ अस्यतेस्थुक् ।
 १८ श्वयतेरः ।
 १९ पतः पुम् ।
 २० वच उम् ।
 २१ शीङः सार्वधातुके गुणः ।
 २२ अयङ् यि क्ङिति ।
 २३ उपसर्गाद्भ्रस्व ऊहतेः ।
 २४ एतेर्लिङि ।
 २५ अकृतसार्वधातुकयोर्दीर्घः ।
 २६ चवौ च ।

- २७ रीङ् ऋतः ।
 २८ रिङ् शयग्लिङ्शु ।
 २९ गुणोऽनिसंयोगाद्योः ।
 ३० यङि च ।
 ३१ ई प्राधमोः ।
 ३२ अस्य चवौ ।
 ३३ क्यच्चि च ।
 ३४ अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षा-
 पिपासागर्धेषु ।
 ३५ न छन्दस्यपुत्रस्य ।
 ३६ दुरस्युर्द्विणस्युर्वृषण्यति रि-
 षण्यति ।
 ३७ अश्वाघस्याऽत् ।
 ३८ देवसुस्रयोर्यजुषि काठके ।
 ३९ कव्यध्वरपृतनस्यचि लोपः ।
 ४० द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति ।
 ४१ शाच्छोरन्यतरस्याम् ।
 ४२ दधातेर्हिः ।
 ४३ जहातेश्च क्त्वि ।
 ४४ विभाषा छन्दसि ।
 ४५ सुधितवसुधितनेमधितधिष्व-
 धिषीय च ।
 ४६ दो दद् घोः ।
 ४७ अच उपसर्गात् तः ।
 ४८ अपो भि ।
 ४९ सः स्यार्धधातुके ।
 ५० तासस्त्योर्लोपः ।

- ५१ रि च ।
 ५२ ह एति ।
 ५३ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः ।
 ५४ सनि मीमाधुरभलभशकपत-
 पदामच इस् ।
 ५५ आप्ज्ञप्यधामीत् ।
 ५६ दम्भ इच्च ।
 ५७ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ।
 ५८ अत्र लोपोऽभ्यासस्य ।
 ५९ ह्रस्वः ।
 ६० हलादिः शेषः ।
 ६१ शर्पूर्वाः खयः ।
 ६२ कुहोश्चुः ।
 ६३ न कवतेर्यङि ।
 ६४ कृषेश्छन्दसि ।
 ६५ दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिवोभूतुते-
 तिक्तेऽलर्ण्यापनीफणत्संसनि-
 ष्यदत्कारिकत्कनिकदद्गरिभ्र-
 ह्विध्वतोदविद्युत्तरित्रतः-
 सरीसृपतंवरीवृजन्मर्मृज्याग-
 नीगन्तीति च ।
 ६६ उरत् ।
 ६७ द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम् ।
 ६८ व्यथो लिटि ।
 ६९ दीर्घ इणः किति ।
 ७० अत आदेः ।
 ७१ तस्मान्नुङ् द्विहलः ।

- ७२ अश्रोतेश्च ।
 ७३ भवतेरः ।
 ७४ ससूवेति निगमे ।
 ७५ निजां त्रयाणां गुणः श्लौ ।
 ७६ भृजामित् ।
 ७७ अतिपिपत्योश्च ।
 ७८ बहुलं छन्दसि ।
 ७९ सन्यतः ।
 ८० ओः पुयण्यपरे ।
 ८१ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लु-
 वतिच्यवतीनां वा ।
 ८२ गुणो यङ्लुकोः ।
 ८३ दीर्घोऽकितः ।
 ८४ नीग् वञ्चुस्त्रिंशुध्वंसुभ्रंसुकस-
 पतपदस्कन्दाम् ।

- ८५ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ।
 ८६ जपजभदहदशभञ्जपशां च ।
 ८७ चरफलोश्च ।
 ८८ उत् परस्याऽतः ।
 ८९ ति च ।
 ९० रीगृदुपधस्य च ।
 ९१ रुग्रिकौ च लुकि ।
 ९२ ऋतश्च ।
 ९३ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ।
 ९४ दीर्घो लघोः ।
 ९५ अत् स्मृद्वरप्रथमदस्तृस्प-
 शाम् ।
 ९६ विभाषा वेष्टिचेष्टयोः ।
 ९७ ई च गणः ।

अष्टमोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ।

- १ सर्वस्य द्वे ।
 २ तस्य परमाग्नेडितम् ।
 ३ अनुदात्तं च ।
 ४ नित्यवीप्सयोः ।
 ५ परेर्वर्जने ।
 ६ प्रसमुपोदः पादपूरणे ।
 ७ उपर्यध्यधसः सामीप्ये ।

- ८ वाक्यादेरामन्त्रितस्याऽसूयासं-
 मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ।
 ९ एकं बहुव्रीहिवत् ।
 १० आवाधे च ।
 ११ कर्मधारयवदुत्तरेषु ।
 १२ प्रकारे गुणवचनस्य ।
 १३ अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतर-
 स्याम् ।

- १४ यथास्वे यथायथम् ।
 १५ द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्यु-
 त्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्य-
 क्तिषु ।
 १६ पदस्य ।
 १७ पदात् ।
 १८ अनुदात्तं सर्वमपादादौ ।
 १९ आमन्त्रितस्य च ।
 २० युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वि-
 तीयास्थयोर्वाच्चावौ ।
 २१ बहुवचनस्य वस्त्वसौ ।
 २२ तेमयावेकवचनस्य ।
 २३ त्वामौ द्वितीयायाः ।
 २४ न चवाहाहैवयुक्ते ।
 २५ पश्यार्थैश्चाऽनालोचने ।
 २६ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ।
 २७ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभी-
 क्षणयोः ।
 २८ तिङ्ङतिङः ।
 २९ न लुट् ।
 ३० निपातैर्यद्यदिहन्तकुविज्ञेच्च-
 णकच्चिद्यत्रयुक्तम् ।
 ३१ नह प्रत्यारम्भे ।
 ३२ सत्यं प्रश्ने ।
 ३३ अङ्गाप्रातिलोभ्ये ।
 ३४ हि च ।
 ३५ छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् ।

- ३६ यावद्यथाभ्याम् ।
 ३७ पूजायां नाऽनन्तरम् ।
 ३८ उपसर्गव्यपेतं च ।
 ३९ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ।
 ४० अहो च ।
 ४१ शेषे विभाषा ।
 ४२ पुरा च परीप्सायाम् ।
 ४३ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ।
 ४४ किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रति-
 षिद्धम् ।
 ४५ लोपे विभाषा ।
 ४६ एहिमन्ये प्रहासे लुट् ।
 ४७ जात्वपूर्वम् ।
 ४८ किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ।
 ४९ आहो उताहो चाऽनन्तरम् ।
 ५० शेषे विभाषा ।
 ५१ गत्यर्थलोटा लृणन चेत् कारकं
 सर्वान्यत् ।
 ५२ लोट् च ।
 ५३ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ।
 ५४ हन्त च ।
 ५५ आम एकान्तरमामन्त्रितमन-
 न्तिके ।
 ५६ यद्धितुपरं छन्दसि ।
 ५७ चनचिदिवगोत्रादितद्धिताम्ने-
 डितेष्वगतेः ।
 ५८ चादिषु च ।

- ६९ चवायोगे प्रथमा ।
 ६० हेति क्षियायाम् ।
 ६१ अहेति विनियोगे च ।
 ६२ चाहलोप एवेत्यवधारणम् ।
 ६३ चादिलोपे विभाषा ।
 ६४ वैवावेति च च्छन्दसि ।
 ६५ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ।
 ६६ यद्वृत्तान्नित्यम् ।
 ६७ पूजनात् पूजितमनुदात्तम् ।
 ६८ सगतिरपि तिङ् ।
 ६९ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ।
 ७० गतिर्गतौ ।
 ७१ तिङि चोदात्तवति ।
 ७२ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ।
 ७३ नाऽमन्त्रिते समानाधिकरणे ।
 ७४ विभाषितं विशेषवचने ।

द्वितीयः पादः ।

- १ पूर्वत्रासिद्धम् ।
 २ नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु
 कृति ।
 ३ न मु ने ।
 ४ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरि-
 तोऽनुदात्तस्य ।

- ५ एकादेश उदात्तेनोदात्तः ।
 ६ स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ।
 ७ नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य ।
 ८ न डिःसंबुद्धयोः ।
 ९ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवा-
 दिभ्यः ।
 १० झयः ।
 ११ संज्ञायाम् ।
 १२ आसन्दीवदष्टीवृक्षक्रीवत्क-
 क्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ।
 १३ उदन्वानुद्धौ च ।
 १४ राजन्वान् सौराज्ये ।
 १५ छन्दसीरः ।
 १६ अनो नुद् ।
 १७ नाद् घस्य ।
 १८ कृपो रो लः ।
 १९ उपसर्गस्यायतौ ।
 २० प्रो यङि ।
 २१ अचि विभाषा ।
 २२ परेश्च घाङ्कयोः ।
 २३ संयोगान्तस्य लोपः ।
 २४ रात् सस्य ।
 २५ धि च ।
 २६ झलो झलि ।
 २७ ह्रस्वादङ्गात् ।
 २८ इट ईटि ।
 २९ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।

- ३० चोः कुः ।
 ३१ हो ढः ।
 ३२ दादेर्धातोर्घः ।
 ३३ वा दुहमुहणुहणिहाम् ।
 ३४ नहो धः ।
 ३५ आहस्थः ।
 ३६ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराज-
 भ्राजच्छशां षः ।
 ३७ एकाचो वशो भष् झषन्तस्य
 स्थवोः ।
 ३८ दधस्तथोश्च ।
 ३९ झलां जशोऽन्ते ।
 ४० झषस्तथोर्धोऽधः ।
 ४१ षढोः कः सि ।
 ४२ रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य
 च दः ।
 ४३ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ।
 ४४ ल्वादिभ्यः ।
 ४५ ओदितश्च ।
 ४६ क्षियो दीर्घात् ।
 ४७ इयोऽस्पर्शे ।
 ४८ अञ्चोऽनपादाने ।
 ४९ दिवोऽविजिगीषायाम् ।
 ५० निर्वाणोऽवाते ।
 ५१ शुषः कः ।
 ५२ पचो वः ।
 ५३ क्षायो मः ।

- ५४ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ।
 ५५ अनुपसर्गात् फुल्लक्षीवकशोला-
 घाः ।
 ५६ नुदविदोन्दवाघ्राहीभ्योऽन्यत-
 रस्याम् ।
 ५७ न ध्याख्यापमूर्च्छिमदाम् ।
 ५८ वित्तो भोगप्रत्यययोः ।
 ५९ भित्तं शकलम् ।
 ६० ऋणमाधमण्ये ।
 ६१ नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगू-
 र्तानि छन्दसि ।
 ६२ किन्प्रत्ययस्य कुः ।
 ६३ नशेर्वा ।
 ६४ मो नो धातोः ।
 ६५ म्वोश्च ।
 ६६ ससजुषो रुः ।
 ६७ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च ।
 ६८ अहन् ।
 ६९ रोऽसुपि ।
 ७० अस्ररुधरवरित्युभयथा
 छन्दसि ।
 ७१ भुवश्च महाव्याहतेः ।
 ७२ वसुसंसुध्वंसनडुहां दः ।
 ७३ तिप्यनस्तेः ।
 ७४ सिपि धातो र्वा ।
 ७५ दश्च ।
 ७६ वौरुपधाया दीर्घ इकः ।

- ७७ हलि च ।
 ७८ उपधायां च ।
 ७९ न भकुर्बुराम ।
 ८० अदसोऽसेर्दाबु दो मः ।
 ८१ एत ईद् बहुवचने ।
 ८२ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ।
 ८३ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ।
 ८४ दूराद्धूते च ।
 ८५ हैहेप्रयोगे हैहयोः ।
 ८६ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य
 प्राचाम् ।
 ८७ ओमभ्यादाने ।
 ८८ ये यज्ञकर्मणि ।
 ८९ प्रणवष्टेः ।
 ९० याज्यान्तः ।
 ९१ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहाना-
 मादेः ।
 ९२ अग्नीप्रेषणे परस्य च ।
 ९३ विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ।
 ९४ निगृह्यानुयोगे च ।
 ९५ आग्नेडितं भर्त्सने ।
 ९६ अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ।
 ९७ विचार्यमाणानाम् ।
 ९८ पूर्वं तु भाषायाम् ।
 ९९ प्रतिश्रवणे च ।

- १०० अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजित-
 योः ।
 १०१ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमा-
 ने ।
 १०२ उपरिस्विदासीदिति च ।
 १०३ स्वरितमाग्नेडितेऽसूयासंमति-
 कोपकुत्सनेषु ।
 १०४ क्षियाशीःप्रेषेषु तिङाका-
 ङ्क्षम् ।
 १०५ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ।
 १०६ प्लुतावैच इदुतौ ।
 १०७ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्व-
 स्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ ।
 १०८ तयोर्वावचि संहितायाम् ।

तृतीयः पादः ।

- १ मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि ।
 २ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ।
 ३ आतोऽटि नित्यम् ।
 ४ अनुनासिकात् परोऽनुस्वारः ।
 ५ समः सुटि ।
 ६ पुमः खग्यम्परे ।
 ७ नश्छव्यप्रशान् ।
 ८ उभयर्थश्चु ।
 ९ दीर्घादटि समानपादे ।
 १० नृन् पे ।
 ११ स्वतवान् पायौ ।
 १२ कानाग्नेडिते ।





